॥ ओ३म् ॥

...प सं० ५८

... की छानबीन

...न्य खुदाई पुस्तकों (तौरात, जबूर और ...) आधार पर कुरान के खुदाई किताब के रूप में मान्यता पर हमारी सप्रमाण शङ्कायें संसार के निष्पक्ष, विचारवान मुस्लिम विद्वानों के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत

ग्रन्थकार

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

॥ ओ३म् ॥

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ५८
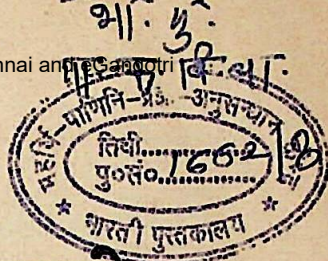
कुरान की छानबीन

कुरान और उसकी मान्य खुदाई पुस्तकों (तौरात, जबूर और इञ्जील) के आधार पर कुरान के खुदाई किताब के रूप में मान्यता पर हमारी सप्रमाण शङ्कायें संसार के निष्पक्ष, विचारवान मुस्लिम विद्वानों के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत

ग्रन्थकार

"खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला" के समस्त ग्रन्थों के यशस्वी लेखक

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (उ० प्र०)

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (एटा) उ० प्र० (भारतवर्ष)

प्रथमवार

दयानन्दाब्द १४९
सृष्टि संवत् १९७२९४९०७३
सन् १९७२ ई०

मूल्य ४)
सजिल्द ५)५०

● विषय सूची ●

प्रथम अध्याय

(पृष्ठ ६ से २३ तक)

●

दूसरा अध्याय

(२४ से ३० तक)

तीसरा अध्याय

(पृष्ठ ३१ से ७३ तक)

●

चौथा अध्याय

पुरानी इलहामी पुस्तकों (तौरात जबूर और इन्जील) के द्रष्टान्त के लिये चन्द परस्पर विरोधी स्थल ।

पाँचवाँ अध्याय

कुरान में तौरात-जबूर-इञ्जील व इतिहास के विरुद्ध चन्द स्थल

●

छठवाँ अध्याय

(पृष्ठ १११ से १५२)

[कुरान में तौरात–जबूर व इञ्जील की नकल के चन्द द्रष्टान्त]

सातवाँ अध्याय

(पृष्ठ १५३ से १६७ तक)

[पुरानी किताबों की बहुत सी बातें कुरान में नहीं हैं]

●

आठवाँ अध्याय

(पृष्ठ १६८ से २७६ तक)

कुरान की विलक्षण बातें : जिनका जिक्र पुरानी खुदाई किताबों में नहीं है।

नवाँ अध्याय

(पृष्ठ २७७ से २८२ तक)

उपसंहार

(पृष्ठ २८३ से २९० तक)

* सप्रेम भेंट *

卐

श्री ....

.... को

सादर सप्रेम भेंट ।

* ओ३म् *

समर्पण

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध अजेय
शास्त्रार्थ महारथी, वाणीभूषण, व्याख्यान
वाचस्पति, तर्क वागीश, वयोवृद्ध आर्य नेता

माननीय श्रीमान् पूज्य श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

काव्यतीर्थ, बरेली (उ० प्र०)

के

कर कमलों में—

'खण्डन मण्डन ग्रन्थ माला' का ५८ वाँ पुष्प

'कुरान की छानबीन'

सादर समर्पित है।

विनीत—

कासगंज (एटा)
उ० प्र० (भारत)
दिनांक १-१२-७२

श्रीराम आर्य
ग्रन्थकार

ग्रन्थकार के दो शब्द

कुरान शरीफ विश्व के इस्लामी जगत का मान्य ग्रन्थ है, उसके प्रति मुस्लिम समुदाय का पूर्ण विश्वास है कि इसे खुदा ने अपने पैगम्बर ह० मुहम्मद साहब पर जिब्रील फरिश्ते के द्वारा उतारा था।

(कुरान पारा १४ सूरे नहल रुकू १४ आ० १०२)

कुरान शरीफ का कहना है कि ह० मुहम्मद साहब बिलकुल बे पढ़े लिखे थे। (कु० पा० २१ सू० अन्कबूत रु० ५ आ० ४८) अतः यह उनकी रचना नहीं है।

जब कुरान शरीफ का निर्माण प्रारम्भ हुआ और जनता में कहा गया कि यह एक फरिश्ते के द्वारा खुदा के पास से लाया जाता है तो लोगों ने इस पर भारी आपत्तियां की थीं तथा ऐसा कहने पर मौहम्मद साहब को पागल कहते थे (कुरान पा० १४ सू० हिज्र रु० १ आ० ६ व० ७)। उन्होंने मुहम्मद को चुनौती दी कि अगर फरिश्ता कुरान लाता है तो तू उसे हमारे सामने बुला के दिखा (आयत ७) इस पर जब कोई जवाब न बन पड़ा तो खुदा की ओर से जवाब दे दिया गया कि "सो हम फरिश्तों को नहीं उतारा करते"। इस स्पष्ट जवाब से लोगों की बात सही हो गई कि कुरान किसी फरिश्ते द्वारा नहीं आता है बल्कि उन्हीं की रचना है।

एक बार लोगों ने कुरान के खुदाई होने पर आपत्ति की तो खुदा ने यह शर्त लगाई कि ' अगर तुम सच्चे हो तो एक ऐसी ही सूरत तुम भी बना लाओ" (कु० पा० ११ सू० यूनिस आ० ५) इस शर्त को सम्भवतः लोगों

ने स्वीकार कर लिया था तो खुदा ने दूसरी जगह इसे बदल कर नई शर्तं लगा दी और कहा।

"क्या काफिर कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल से बना लिया है, तो इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह बनाई हुई दस सूरतें ले आओ"

(कु० पा० १२ सू० हूद रु० २ आ० १३)

खुदा ने कुरान में शपथपूर्वक दावा किया है कि यह कुरान इलहाम है, मनुष्य कृत नहीं है (कु० पा० २७ सू० वाकिया रु० ३ आ० ७५ से ८०)। एक स्थान पर तो यहां तक लिख दिया गया है कि अगर सब आदमी और जिन्न ऐसा कुरान बनाने को जमा हों तो भी ऐसा न बना सकेंगे अर्गाच उनमें वे एक दूसरे की बड़ी मदद करें।

(कु० पा० १५ सू० बनी इस्राएल रु० ६ आ० ८८)

वर्तमान कुरान के ईश्वरीय होने के बारे में अनेक कसौटियां उसमें दी गई हैं जिनसे उसके असली या नकली होने की परीक्षा सुगमता से की जा सकती है। हमने वे कसौटियां इसी पुस्तक में आगे अध्याय दो में दी हैं।

कुरान में यह भी कहा गया है कि यह कुरान कोई नई बात नहीं कहता है, बल्कि यह तो अपने से पूर्व बनी वा उतरी पुस्तकों तौरात जबूर और इञ्जील की तफसील (व्याख्या) मात्र है। (कुरान पारा ११ सूरे यूनिस रुकू २ आ० ३७)। एक अन्य स्थान पर स्पष्ट रूप से कुरान में खुदा ने कहा है कि "ऐ मुहम्मद तुझसे वही बात कही जाती है जो तुझसे पहिले पैगम्बरां से कही जा चुकी है।" (कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५ आ० ४३) अर्थात कुरान में ऐसी कोई बात नहीं कही गई है जो पुरानी उपलब्ध पुस्तकों तौरात जबूर और इञ्जील में न कही गई हो। इस खुदाई दावे से स्पष्ट है कि कुरान पुरानी किताबों के सर्वथा

अनुकूल है उनमें और इसमें कोई भी अन्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि यह उनकी नकल है।

एक अन्य स्थान पर कुरान में लिखा है कि इसमें किसी भी झूठ या गलत बात का प्रवेश आगे पीछे या किसी ओर से नहीं है (कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५ आ० ४२) अर्थात् इस किताब कुरान में एक भी शब्द वा आयत गलत नहीं है जो कुछ भी है सब सत्य ही सत्य लिखा गया है।

हमने कुरान शरीफ को बड़े ध्यान पूर्वक अनेक बार आद्योपान्त पढ़ा है। बहुत प्रयत्न करने पर भी हम उसे ईश्वरीय ज्ञान मानने में समर्थ नहीं हो सके हैं। इसके विपरीत हम को उसमें अनेक स्थल ऐसे दिखाई दिये हैं जो कुरान को ईश्वरीय कलाम साबित करने का खन्डन करते हैं। अनेक स्थल ऐसे हैं जो पुरानी किताबों तौरात, जबूर और इञ्जील की व्यवस्थाओं के विरोधी हैं। अनेक स्थल ऐसे हैं जो पुरानी किताबों की नकल करके लिखे गये हैं। अनेक स्थल कुरान के बुद्धि-इतिहास सृष्टि नियमएवं विज्ञान के विरोधी हैं जोकि किसी भी पढ़े लिखे व्यक्ति के मस्तिष्क में नहीं आ सकते हैं। इस प्रकार कुरान की ही सामग्री को खुले दिमागसे पढ़ने पर हमको उसके 'खुदाई किताब' होने पर बहुत भारी शङ्कायें पैदा हुई हैं।

हम समझते हैं कि इस प्रकार की शंकायें कुरान का अन्धविश्वास त्यागकर स्वाध्याय करने वाले अनेक व्यक्तियों के सामने सदैव उपस्थित होती रही हैं। तथा अब जब कि मुस्लिम विद्वान स्वयं ही कुरान का हिन्दी अनुवाद करके छपवाकर उसे जनता में फैलाने में सलग्न हैं तो अनेक और भी लोगों को शंकायें उस पर पैदा होंगी तथा उनका निवारण करना आवश्यक हो जावेगा। हम अपनी शंकाओं को 'कुरान की छानबीन' नाम से इस पुस्तक के रूप में उल्माये कुरान (कुरान के मानने वाले मर्मज्ञों) के सामने समाधान के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं।

हम यहाँ पर यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस पुस्तक का उद्देश्य कतई किसी मुसलमान या कुरान परस्त का दिल दुःखाना अथवा कुराने पाक का खण्डन करना नहीं है। यह केवल हमारी शंकायें हैं और मुस्लिम विद्वानों को उन पर विचार करके उनका उत्तर देकर उनका उचित समाधान प्रस्तुत करने का अवसर देना हमारा उद्देश्य है। हम यह अपना उचित अधिकार समझते हैं और उसका उपयोग कर रहे हैं। हमारा ऐसा अनुभव है कि उचित शंकाओ का उत्तर जब नहीं बनता है तो मुस्लिम अखबारात और मुस्लिम विद्वान तर्क और प्रमाणों से जवाब देकर अपना पाण्डित्य दिखाने के बजाय सरकार की शरण में भागते और कानून के जोर से (दिल दुःखाने का बहाना करके) सवाल करने वालों का मुँह बन्द करने की कोशिशें करते हैं और इस प्रकार दुनियाँ में अपनी हंसी कराते तथा अपने मजहबी उसूलों की कमजोरी का खुद ही डंका पीटते दिखाई देते हैं। हम आशा करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़कर हमारे बन्धु मुस्लिम विद्वान इस बार अपनी इस कमजोरी को प्रगट न करेंगे वरन् हमारी शंकाओं का युक्ति-तर्क व प्रमाणों के साथ उचित समाधान पेश करके हमें अनुगृहीत करेंगे। इससे सभी विद्वानों में उनकी इज्जत बढ़ेगी तथा कुरान पर पाठकों की आस्था उत्पन्न होने में सहायता मिलेगी।

सच्चाई की खोज करना मनुष्य मात्र का धर्म है, अन्धविश्वास से मनुष्य सचाई से दूर हट जाता है। बाजार से दस पैसे की हांडी खरीदते समय दस बार उसे ठोक बजाकर लिया जाता है, तो जिन मजहबी किताबों पर चलकर इन्सान की जिन्दगी उत्तम अथवा बरबाद बन सकती है, उनकी भी तर्क-विज्ञान सृष्टि-नियम तथा अन्य प्रमाणों के आधार पर परीक्षा कर लेनी आवश्यक होती है। सभी को उनकी पूर्ण परीक्षा करने के बाद ही उन्हें मानना चाहिये। पंडित पादरी या मौलवी

लोगों के केवल कह देने मात्र से हर बात को सत्य नहीं मान लेना चाहिये। अन्ध विश्वास करने का अर्थ तो यह होता है कि उस आदमी में अपनी गांठ की अक्ल बिलकुल नहीं है।

हमने अपनी कुरान सम्बन्धी शंकाओं को नौ विभिन्न अध्यायों में विषय वार विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में सर्वप्रथम एक प्रश्न मुस्लिम विद्वानों से किया है जिसका आधार यह पुस्तक है। उसके बाद कुरान में पारे-सूरते-रुकू व आयतों की गणना दी है। कुरान में सर्व हितकारी शिक्षाओं का संग्रह तथा मुसलमानों को फिसाद फैलाने वाले खुदाई जहरीले आदेशों का भी संग्रह दिया गया है।

दूसरे अध्याय में कुरान के ही प्रमाणों को देकर यह विचार किया गया है कि क्या मौजूदा कुरान असली कुरान है ? कुरान में जो असली कुरान की जांच की कसौटियां दी गई हं उनपर यह कुरान खरा नहीं उतरता है अतः खुदाई या इलहाम साबित नहीं होता है।

तीसरे अध्याय में हमने चन्द वे स्थल पेश किये हैं जिनमें कुरान में परस्पर विरोधी वर्णन हैं। एक दूसरे का खण्डन करता है। खुदाई किताब में परस्पर विरोधी बातों का उल्लेख नहीं हो सकता है। अतः कुरान खुदाई नहीं माना जा सकता है।

चौथे अध्याय में हमने कुरान द्वारा खुदाई मानी गई पहिली किताबों तौरात जबूर और इञ्जील की परस्पर विरोधी चन्द मिसालें पेश करके यह दिखाया है कि वे पुस्तकें किसी एक खुदा या व्यक्ति की रचना नहीं हैं अतः इलहाम नहीं मानी जा सकती हैं।

पांचवें अध्याय में हमने कुरान में से अनेक वे स्थल प्रस्तुत किये

हैं जिनका तौरात जबूर और इञ्जील से विरोध है। हमने दोनों ओर के परस्पर विरोधी प्रमाण देकर यह दिखाया है कि कुरान का यह दावा गलत है कि कुरान में जो कुछ भी दिया गया है वह उन पुरानी किताबों के ही अनुकूल है, विरोधी नहीं। पुरानी किताबों से विरोध होने से भी कुरान इलहाम नहीं माना जा सकता है क्योंकि खुदा की बातों में परस्पर विरोध सम्भव नहीं होता है।

छठे अध्याय में हमने यह दिखाया है मौजूदा कुरान में पुरानी किताबों की बहुत सी बातें ज्यों की त्यों नकल करके लिखदी गई हैं। इससे कुरान का महत्व समाप्त हो जाता है, वह नकल किये मसाले का संग्रह मात्र है। खुदा का काम नकल करना नहीं हो सकता है। अतः कुरान खुदाई नहीं है।

सातवें अध्याय में हमने अनेक ऐसे प्रमाण उपस्थित किये हैं जिनका पुरानी किताबों में उल्लेख है किन्तु कुरान में बिलकुल नहीं है जब कि खुदा के दावे के अनुसार कुरान में वह सब कुछ होना चाहिए जो पहिली किताबों में मौजूद था अर्थात् कुरान तफसील है इस दावे के अनुसार भी कुरान खुदाई साबित नहीं होता है।

आठवें अध्याय में हमने खुदा के इस दावे पर विचार किया है कि मुहम्मद से केवल वही बातें कही जा सकती हैं जो पहिले पैगम्बरों से पुरानी किताबों में कही गई थीं। हमने बहुत से उद्धरण कुरान के प्रस्तुत किये हैं जिनमें से किसी का भी उल्लेख पुरानी किताबों में नहीं है, वे स्थल बुद्धि-तर्क सृष्टि नियम विज्ञान सभी के विरुद्ध हैं। अतः या तो यह मानना पड़ेगा कि कुराने पाक में उनकी मिलावट बाद को करदी गई है ताकि उसकी इज्जत को गिराया जाय अथवा कुरान खुदाई किताब नहीं माना जा सकेगा।

नवें अध्याय में ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ को जांचने की हमने कुछ

उत्तम कसौटियां पेश की हैं जिन पर कस कर सभी कितावों को देखा जा सकता है। उन पर तौरात-जबूर इन्जील और कुरान एक भी इलहाम साबित नहीं हो सके हैं।

अन्त में इस ग्रन्थ का उपसंहार है।

हमारा निवेदन है कि कुरान के निष्पक्ष विचारक मुस्लिम विद्वान तथा जिज्ञासु पाठक हमारी शंकाओं व स्थापनाओं पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें, हम उनके कृतज्ञ होंगे।

इस पुस्तक में जो भी उद्धरण कुरान के दिये गये हैं वे श्री अहमद बशीर साहब एम० ए०, कामिल-दबीर, कामिल-मौलवी, फिरंग महल, लखनऊ के तर्जुमा कुरान से लिये हैं अतः अनुवाद की जिम्मेदारी उन्हीं की होगी, हमारी नहीं।

आशा है सत्य के जिज्ञासु जन सत्य को ग्रहण करेंगे तथा असत्य का परित्याग करेंगे। आलिमाने कुरान हमारी शंकाओं का समाधान यदि करेंगे तो हम उनके कृतज्ञ होंगे तथा अपना परिश्रम सफल समझेंगे।

निवेदक—
श्रीराम आर्य

कासगंज (एटा) उ० प्र०
ता० १-१-७३

प्रथम अध्याय

—विश्व के कुरान मर्मज्ञों से एक प्रश्न—

(१) जिस पुस्तक में उसके लेखक ने अपनी पहिली कही बातों को गलत मानकर वार २ संशोधन किया हो (कुरान पा० १ सूरे बकर रु० १३/१०६ तथा पा० १४ सू० नहल रु० १४ आ० १०१)

(२) जो पुस्तक अपनी ही वताई कसौटी पर खुदाई किताव अपने को सावित न करती हो (कु० पा० १३ सू० राद रुकू ४ आ० ३१ तथा कु० पा० २८ सू० हशर रु० ३ आ० २१)

(३) जिस पुस्तक में उसी के दावे के अनुसार जमीन और आसमान की हर जर्रे से छोटी या बड़ी से बड़ी चीज या वात का जिक्र होना चाहिए किन्तु उसमें न मिलता हो (कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० ७ आ० ६१ तथा कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ७ आ० ५९ और कुरान पा० २० सू० नम्ल रु० ६/७५)

(४) जिस पुस्तक में परस्पर विरोधी स्थल दिये हों जो एक दूसरे का खण्डन करते हों। (इस किताब का अध्याय तीन देखो)

(५) जिस पुस्तक का लेखक अपने को खुदा से भिन्न अन्य व्यक्ति सावित कर रहा हो (कु० पा० १० सू० तौवा रुकू ५ आ० ३० ॥ कु० पा० १४ सू० नहल रु० ८ आ० ६३ ॥ कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० ६ आ० ९२)

(६) जिस पुस्तक के अनुसार संसार का मालिक खुदा के नाचीज इन्सान से युद्धों को फौजों के साथ लड़ने आने का उल्लेख किया गया हो (कु० पा० ६ सू० अन्फाल रु० २ आ० १२)

(७) जिस पुस्तक के अनुसार खुदा इतना अल्पज्ञ व नातजुर्बेकार हो कि आगे की होने वाली बात तथा लोगों के स्वभाव को भी खुद न जान पाता हो और धोखा खा जाता हो (कु० पा० १५ सू० बनी इस्राएल रु० ६ आ० ६०)

(८) जिस पुस्तक के अनुसार खुदा अपने हुक्मों में मामूली बातों पर भी संशोधन (तरमीम) करता रहता हो (कु० पा० २ सू० बकर रु० २३ आ० १८७)

(९) जिस पुस्तक में खुदा के द्वारा मुसलमानों को निर्दोष शान्ति प्रिय पड़ोसियों के साथ विना वजह लड़ने उनपर सख्ती करने उन्हें कत्ल करने के आदेश दिये जाने की बात लिखी हो (कु० पा० ११ सू० तोवा रु० १६ आ० १२३ तथा पहिला अध्याय)

(१०) जिस किताब में बुद्धि को भ्रष्ट करने वाली शराव की प्रशंसा की गई हो, तथा खुदा द्वारा शराव वहिश्त में पिलाने का पक्का वायदा लिखा गया हो (कु० पा० १४ सू० नहल रु० ९ आ० ६७ तथा कु० पा० ३० सू० ततफीफ आ० २५ ॥ कु० पा० २३ सू० साफ्फात रु० २ आ० ४५-४६)

(११) जिस किताब में शरीफ मुसलमानों को खुदा द्वारा अपनी कसमें तोड़ डालने (पवित्र वायदों से मुकर जाने और बे ईमान बनने) का आदेश दिया गया हो (कु० पा० २८ सू० तहरीम रु० १ आयत २ तथा कु० पा० २ सू० बकर रु० २८/२२५ व सू० मायदा रु० १२ आ० ८९)

(१२) जिस किताब को खुदाई घोषित किया गया हो और उसमें पुरानी खुदाई किताबों के विरुद्ध बातों का उल्लेख अनेक स्थानों पर हो (देखो इसी किताब में अध्याय ५ के प्रमाण)

(१३) जिस किताब में पुरानी किताबों की सामग्री नकल करके लिखली गई हो (देखो इसी पुस्तक के अध्याय ६ के प्रमाण)

(१४) जिस पुस्तक में सृष्टि नियम-विज्ञान तथा बुद्धि विरुद्ध अनेक स्थल विद्यमान हों (देखो इसी पुस्तक के अध्याय आठ के प्रमाण)

(१५) जिस किताब में खुदा की पाक जात को अनेक प्रकार के दोष लगाने वाली बातों का उल्लेख किया गया हो।

(१६) जो किताब उन तौरात जबूर और इञ्जील को भी खुदाई किताबें बताती हों और उनकी तस्दीक करती हो जिनमें खुदा की निर्दोष जात (सत्ता) को साधारण आदमी जैसा कम अक्ल-पछताने वाला (तौरात उत्पत्ति ६), क्रोधी (निर्गमन १२।११) चरबी-लोहू व गोश्तखोर (अय्यूब ४२) लड़ाकू (न्यायियो १।१९, यहोशू १०।४२ व २३।३ याशायाह ३१।४) मुकद्दमेबाज (यहेजकेल १७।२० तथा २०।३५-३६) मनुष्य से कुश्ती लड़ने वाला (उत्पत्ति ३२।२४-३०) आदि बताकर अनेक प्रकार से बदनाम किया गया हो।

उस तथा उन किताब कुरान शरीफ व तौरात जबूर और इञ्जील को ईश्वरीय पुस्तक (खुदाई आसमानी किताब) क्यों कर माना जा सकता है।

इस मुख्य प्रश्न का उत्तर हम संसार के कुरान के मर्मज्ञों से माँगते हैं ? इसी प्रश्न का खुलासा हाल मय प्रमाणों के इस सम्पूर्ण किताब "कुरान की छानबीन" में लिखा गया है ताकि सभी विद्वान इस प्रश्न को भली प्रकार समझकर उस पर विचार कर सकें।

कुरान में पारे, सूरतों, रुकू व आयतों की गणना

सम्पूर्ण कुरान में ३० सिपारे हैं जिन्हें पारा भी लिखा जाता है। प्रत्येक पारे में कई २ सूरतें हैं। कुल कुरान में ११४ सूरत हैं। प्रत्येक सूरत में कई कई रुकू हैं और प्रत्येक सूरत में कितनी ही आयतें होती हैं। हम उनका व्यौरा नीचे देते हैं।

क्र० सं०	नाम सूरत	रुकू	आयतें
१	सूरे फातिहा	१	७
२	बकर	४०	२८६
३	आल इमरान	२०	२००
४	निसा	२४	१७७
५	मायदा	१६	१२०
६	अनआम	२०	१६५
७	आराफ	२४	२०६
८	अन्फाल	१०	७५
९	तौबा	१६	१२९
१०	यूनिस	११	१०९
११	हूद	१०	१२३
१२	यूसुफ	१२	१११
१३	राद	६	४३
१४	इब्राहीम	७	५२
१५	हिज्र	६	९९

क्र० सं०	सूरत	रुकू	आयतें
१६	नहल	१६	१२८
१७	बनी इसराईल	१२	१११
१८	कहफ	१२	११०
१९	मरियम	६	९८
२०	ताहा	८	१३५
२१	अम्बिया	७	११२
२२	हज्ज	१०	७८
२३	मोमिनून	६	११८
२४	नूर	९	६४
२५	फुर्कान	६	७७
२६	शुअरा	११	२२७
२७	नम्ल	७	९३
२८	कसस	९	८८
२९	अन्कबूत	७	६९
३०	रूम	६	६०

क्र० सं०	सूरत	रुकु	आयतें	क्र० सं०	सूरतें	रुकू	आयतें
३१	लुकमान	४	३४	५६	वाकिया	३	९६
३२	सज्दह	३	३०	५७	हदीद	४	२९
३३	अह्‌जाब	९	७३	५८	मुजादिल	३	२२
३४	सबा	६	५४	५९	हशर	३	२४
३५	फ़ातिर	५	४५	६०	मुम्तहना	२	१३
३६	यासीन	५	८३	६१	सफ्फ़	२	१४
३७	साफ्फ़ात	५	१८२	६२	जुमा	२	११
३८	साद	५	८८	६३	मुनाफ़िकून	२	११
३९	जुमर	८	७५	६४	तग़ाबुन	२	१८
४०	मोमिन	९	८५	६५	तलाक	२	१२
४१	हामीम सज्दह	६	५४	६६	तहरीम	२	१२
४२	शूरा	५	५३	६७	मुल्क	२	३०
४३	जुखरुफ	७	८९	६८	कलम	२	५२
४४	दु:खान	३	५९	६९	हाक्का	२	५२
४५	जासियह	४	३७	७०	मआरिज	२	४४
४६	अहक़ाफ़	४	३५	७१	नूह	२	२८
४७	मुहम्मद	४	३८	७२	जिन्न	२	२८
४८	फ़तह	४	२९	७३	मुज्जम्मिल	२	२०
४९	हुजरात	२	१८	७४	मुद्दसिर	२	५६
५०	काफ	३	४४	७५	कयामत	२	४०
५१	जारियात	३	६०	७६	दहर	२	३१
५२	तूर	२	४९	७७	मुर्सलात	२	५०
५३	नज्म	३	६२	७८	नबा	२	४०
५४	कमर	३	५५	७९	नाजियात	२	४६
५५	रहमान	३	७८	८०	अबस	१	४२

क्रम सं०	सूरत	रुकू	आयतें	क्र० सं०	सूरत	रुकू	आयतें
८१	तक्वीर	१	२९	१००	आदियात	१	११
८२	इन्फ़ितार	१	१९	१०१	क़ारियह	१	११
८३	ततफ़ीफ़	१	३६	१०२	तकासुर	१	८
८४	इन्शिकाक	१	२५	१०३	असर	१	३
८५	बुरुज	१	२२	१०४	हुमजह	१	९
८६	तारिक	१	१७	१०५	फ़ील	१	५
८७	आला	१	१९	१०६	कुरैश	१	४
८८	गाशियह	१	२६	१०७	माऊन	१	७
८९	फ़जर	१	३०	१०८	कौसर	१	३
९०	बलद	१	२०	१०९	काफ़रून	१	६
९१	शम्म	१	१५	११०	नस्र	१	३
९२	लैल	१	२१	१११	लहब	१	५
९३	जुहा	१	११	११२	इखलास	१	४
९४	इन्शिराह	१	८	११३	फ़लक़	१	५
९५	तीन	१	८	११४	नास	१	६
९६	अलक	१	१९				
९७	कदर	१	५		११४ सूरतें	५५८ रुकू	६२२६ आयतें
९८	बय्यिनह	१	८				
९९	जिलजाल	१	८				

सम्पूर्ण कुरान ने कुल ३० सिपारे हैं, जिनमें कुल ११४ सूरतें ५५८ रुकू और कुल ६२२६ आयतें हैं। यह गिनती लखनऊ के "प्रभाकर साहित्यालोक" द्वारा प्रकाशित तथा श्री अहमद बशीर द्वारा अनुवादित कुरान के अनुसार है।

कुरान में सर्व कल्याणकारी सुन्दर उपदेश

तथा

मुसलमानों को जहरीले आदेश

(शुरू करता हूँ) साथ नाम अल्लाह के निहायत दयावान महरबान है। अलिफ़ लाम मीम।

अर्थात् कुरान का लेखक कुरान लिखने से पूर्व निहायत दयावान मेहरबान अल्लाह के नाम को लेकर लिखना प्रारम्भ करता है। अल्लाह का वह नाम है—अलिफ़ लाम मीम अर्थात् ओ३म्।

अरबी व्याकरण के अनुसार लाम अक्षर वाउ में बदल जाता है। इस प्रकार अलिफ लाम मीम बदलकर अलिफ वाउ मीम बन जाता है। अलिफ+वाउ मिलकर ओ बनता है और उसमें मीम मिलाने पर 'ओम्' बन जाता है। यही ईश्वर का मुख्य नाम है। सभी मुसलमानों को कोई भी काम करने से पहिले अल्लाह या खुदा न बोलकर 'ओम्' नाम से परमात्मा को सदैव स्मरण करना चाहिए जैसा कि कुरान में किया गया है।

कुरान शरीफ इस्लामी मजहब का मुख्य मान्य ग्रन्थ है। उसमें अनेक ऐसे सुन्दर उपदेश यत्र तत्र बिखरे हुए मिलते हैं जो कि संसार के सभी मनुष्यों के लिए कल्याणकारी हैं। हम उनको

यहाँ इस अध्याय में प्रस्तुत करते हैं जिससे सभी उनसे लाभ उठा सकें। उसके साथ ही हमने कुरान के वे स्थल भी संग्रह कर दिये हैं जिनमें मुसलमानों को दूसरे धर्म वालों से लड़ने उन्हें कत्ल करने आदि के जहरीले आदेश दिये गये हैं।

दौनों प्रकार के स्थल इसलिये दिये गये हैं ताकि कुरान का उसी के स्थलों से तुलना करते हुए सही रूप सभी आसानी से समझ सकें।

कुरान के सुन्दर उपदेश

"जो लोग बात को कान लगाकर सुनते हैं और उसकी अच्छी बातों पर चलते हैं। यही वह लोग हैं जिनको खुदा ने राह दी है और यही बुद्धिमान हैं" ॥१८॥कु० पा० ३० सू० जुमर रु० २॥

"वह अल्लाह एक है ॥१॥"

"न उससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ है" ॥३॥

"न कोई उसकी बराबरी का है" ।४।—

॥ कु० पा० ३० सू० इखलास ॥

"अगर तुम खुदा के पूजने वाले हो तो अल्लाह ही को सिजदा करना जिसने इन चीजों (सूरज चांद व पृथ्वी) को पैदा किया ।३७।"

(कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५)

"अल्लाह ने किसी को बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई और खुदा है। अगर ऐसा होता तो हर खुदा अपने बनाये को लिये फिरता और एक दूसरे पर चढ़ जाता।

(९१ कु० पा० १८ सू० मोमिनून रु० ५)

"अल्लाह ही सच्ची राह दिखलाता है। तो क्या जो सच्ची राह दिखलावे उसका हक नहीं कि उसी की पैरवी की जाय" ।३५।

(कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० ४)

"खुदा खुफिया और जाहिर बातों को जानता है" ।५।

(कु० पा० १२ सू० हूद रु० १)

"बेशक अल्लाह ही जानने वाला खबर रखने वाला है" ।३४।

(कु० पा० २१ सू० लुकमान रु० ४)

"आंखें उसको बतला नहीं सकती और वह आंखों को खूब जानता है और वह बड़ा बारीक देखने वाला खबरदार है" ।१०३।

(कु० पा० ७ सू० अनआम रु० १३)

"तुम लोग तौलने में कम वेश न करो।८। और न्याय के साथ सीधी तौल तौलो और कम न तौलो" ।९। (कु० पा० २७ सू० रहमान रु० १)

'अपने आलीशान परवर्दिगार के नाम की माला फेर' ।१,

(कु० पा० ३० सू० आला रु० १)

कहो कि यदि मेरे परवर्दिगार की बातों के लिखने के लिये समुद्र स्याही हो, वह लिखते लिखते निवट जाय चाहे वैसा समुद्र और भी मदद को किया जाय तो भी खुदा की बातें न लिखी जा सकेंगी ।१०९।

(कु० पा० १६ सू० कहफ रु० १२)

जमीन में जितने दरख्त हैं सब कलम बन जायें और समुद्र के बाद सात समुद्र और उसकी मदद करें (स्याही हो जावें तो भी) खुदा की बातें तमाम न होवें ।।२७। कु० पा० २१ सू० लुकमान रु० ३।। वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। पोशीदा और जाहिर का जानने वाला बड़ा मिहरबान रहम वाला है ।२२। बादशाह है, पाक है, निर्दोष है, शान्तिदाता है, निरीक्षक है, शक्तिवाला है, बड़ा तेजस्वी है

शिर्क से पाक है।२३। वही पैदा करने वाला, बनाने वाला, सूरतें देने वाला है, उसके सब नाम अच्छे हैं।२४। कु० पा० २८ सू० हशर रु० ३।

'अपने परवर्दिगार की बड़ाई कर।३। अपने कपड़ो को पाक रख।४। नापाकी से अलग रह।५। ज्यादा करने के लिये किसी पर अहसान न रख।६। और अपने परवर्दिगार की राह देख।७। कु० पा० २९ सू० मुद्दसिर रु० १॥

रात को उठना (इन्द्रियों) के रोकने में बहुत अच्छा होताहै और ठीक-ठीक दुआ माँगने में भी।६। अपने परवर्दिगार का नाम याद कर और सबको छोड़कर उसकी तरफ लग जा" ।२। कु० पा० २९ सू० मुज्जमिल रु० १।।

तुम में से एक ऐसा गिरोह भी होना चाहिये जो नेक कामों की तरफ बुलाये और अच्छे कामों की तरफ बुलाये और अच्छे काम को कहे और बुरे कामों से मना करे और ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुंचेंगे।

॥ १०५। कु० पा० ४ सू० आल इमरान रुकू ११ ॥

'कोई आदमी अमर नहीं है। हर जीव को मौत चखनी है। (३४ व ३५ का भावार्थ)। कुरान पा० १७ सू० अम्बिया रु० ३ ॥

'यह दुनियां की जिन्दगी तो जी बहलाना और खेल है।'

(कु० पा० २१ सू० अनकबूत रु० ७।६४)

'स्मरण रखो, खुदा जिनको चाहता है (जो खुदा के भक्त हैं) उनको न डर होगा और न वे उदास होंगे'। ६२।

(कु० पा० ११ सू०यूनिस रु० ७)

'अल्लाह को सख्त नापसन्द है कि कहो और करो नहीं'। ३। कु० पारा २८ सूरे सफ्फ। खुदा पसन्द नहीं करता कि कोई मुंह फाड़कर

बुरा कहे मगर जिस पर जुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनता और जानता है' ।१४८। भलाई खुल्लुमखुल्ला करो या छिपकर करो या बुराई माफ करो तो अल्लाह ताकतवर माफ करने वाला है ।१४९।

(कु० पा० ६ सू० निसा रु० २१)

'हर ताना देने वाले और ऐब चुनने वाले के की खराबी है' ।१।

कुरान पारा ३० सूरे हुमजह ।

'अगर सख्ती भी करो तो वैसी ही सख्ती करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो । और 'अगर सब्र करो तो हर हालत में सब्र करने वाले के लिये सब्र अच्छा है ।१२६। (कु० पा० १५ सू० नहल रु० १६)

'अल्लाह सूद को मिटाता और खैरात को बढ़ाता है ।२७६।

(कु० पा० ३ सू० बकर रु० ३८)

जो लोग अपने माल को अल्लाह की राह में खर्च करते हैं, फिर खर्च किये पीछे ऐहसान नहीं जताते और न तकलीफ देते हैं, उनको उनका सवाब उनके पालन कर्ता के यहां मिलेगा, न तो उन पर भय होगा और न वे उदास होंगे ।२६२।

ऐ ईमान वालो । (खुदा की राह में) अच्छी चीजों में से जो तुमने आप कमाई हों और खुदा ने तुम्हारे लिये जमीन से पैदा की हों, खर्च करो और खराब चीज के देने का इरादा भी न करना । तुम भी उसकी न लो और अल्लाह अच्छाइयों का घर व बेपरवाह है' ।२६७।

(कुरान पारा० ३ सू० बकर रुकू ३६ व ३७)

अल्लाह इन्साफ करने और भलाई करने और सम्बन्धियों को (सहारा) देने की आज्ञा देता है और बेशर्मी के कामों और बुरे कामों और जुल्म करने से मना करता है तुम लोगों को शिक्षा देता है शायद तुम ख्याल रखो ।९०। (कु० पा० १४ सू० नहल रुकू १३)

खुदा के सिवाय किसी की इवादत न करो और माता पिता के साथ अच्छा सलूक करो ।२३। गरीवी से अपनी औलाद को मत मार डालो ।३१। व्यभिचार के पास न फटकना क्योंकि वह वेशर्मी है और बुरा चलन है ।३२। खुदा के साथ किसी की इवादत न करना ।३६।

(कु० पा० १५ सू० वनी इसराइल रु० ३ व ४)

मुसलमानों को कुरान में जहरीले आदेश

कुरान की निम्न शिक्षायें संसार में साम्प्रदायिक सद्भाव मिटाने तथा ईर्षा द्वेष वैमनस्य-लड़ाई-झगड़े-फिसाद फैलाने वाली हैं। ये शान्ति स्थापना में बाधक हैं नमूना देखें—

* मूर्ति पूजकों के वारे में *

'और जो लोग काफिर हैं उसकी मिसाल उस शख्स जैसी है जो एक चीज (मूर्ति) के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है और वह सुनती ही नहीं। तो उसको बुलाना पुकारना वेसूद है। वहरे गूँगे अन्धे की तरह उनको भी समझ नहीं ।१७१। कु० पा० २ सू० वकर रुकू २१ ॥

उसमें मूर्ति पूजकों को वहरे अन्धे गूँगे से तुलना की है।

* काफ़िर कौन है ? काफ़िरों से व्यवहार *

"और जो लोग हमारी आयतों को झुठलायेंगे और उनसे अकड़ बैठेंगे वही दोजखी (काफिर) होंगे और हमेशा दोजख ही में रहेंगे।"

॥ कु० पा० ८ सू० आराफ रुकू ४ आ० ३६ ॥

'मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को

अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा, तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं।' ॥ कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० ३ ॥

"मुसलमानों ! यहूद और ईसाईयों को मित्र न बनाओ ।५७।

रु० ८ आ० ५१

"काफिरों को दोस्त मत बनाओ" ।५७।

कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ६।।

"इनकी तबियत यह है कि जिस तरह खुद काफिर हो गये है उसी तरह तुम भी इन्कार करने लगो ताकि तुम एक ही तरह के हो जाओ तो जब तक खुदा के रास्ते में देश त्याग न कर जावे इनमें से मित्र न बनाओ। फिर अगर मुख मोड़े तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ कत्ल करो' उनमें से मित्र और सहायक न बनाना ।८६।"

"अगर तुमसे किनारा खींचे न रहें और न सुलह करें और न अपने हाथ रोके और जहां पाओ उनको कत्ल करो, और यही लोग हैं जिन पर हमने तुमको खुला अधिकार दे दिया है ।६१।

कुरान पारा ५ सू० निसा रुकू १२ ।।

(ऐ कुरान) किताब वालो ! जो न खुदा को मानते हैं और न कयामत को और न अल्लाह और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन को मानते हैं, इनसे लड़ो (कत्ल करो) यहां तक कि जलील होकर अपने हाथों से जजिया (टैक्स) दें।"

॥ कु० पा० १० सूरे तौबा रुकू ४ आ० ।२९।

ऐ पैगम्बर ! काफिरों और मुनाफिकों से जहाद कर और उनपर सख्ती कर उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है ।६।

॥ कु० पा० २८ सू० तहरीम रु० २ ॥

"जो तुम्हारे दीन की पैरवी करे, उसके सिवाय दूसरे का ऐतवार न करो"। कुरान पा० ३ सू० आल इमरान रुकू ८ आ० ७३ ॥

(ऐ मुसलमानो) "काफिरों से लड़ते रहो यहां तक कि फसाद न रहे और सव खुदा ही का दीन हो जाय।"

॥ कु० पा० ९ सूरे अन्फाव रु० ५ आ० ३९ ॥

"अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जान और माल खरीद लिये हैं कि उनके बदले में उनको जन्नत देगा ताकि अल्लाह की राह में (काफिरों से) लड़ें और मारें और मरें" ।१११।

॥ कु० पा० ११ सू० तौवा रुकू १४ ॥

"मुसलमानो ! अपने आम पास के काफिरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुमसे सख्ती मालूम करें और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो वचते है।"

॥ कु० पा० ११ सू० तौवा रुकू १६ आ० १२३ ॥

"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहां उसका वह दीन कवूल नहीं। और वह कयामत में नुकसान पाने वालों में से होगा।

॥ कु० पा० ४ सू० आल इमरान रुकू ९ आ० ८५ ॥

खुदा बोला "और हमने तुम्हारे लिये दीन इस्लाम को पसन्द किया" ।३। कु० पा० ६ सू० मायदा रु० १ ॥

"फिर जव अदव के महीने निकल जावें तो मुशरिकों (खुदा के साथ अन्य की भी उपासना करने वाले) को जहां पाओ कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो। उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में वैठो" ।५। कु० पा० १० सू० तौवा रुकू १ ॥

"(खुदा अन्धे काफिरों से) फरमायेगा ऐसे ही हमारी आयतें तेरे पास आईं मगर तूने उनकी कुछ खबर न ली और उसी तरह आज तेरी खबर ली जायगी" ।१२६। कु० पा० १६ सू० ताहा रु० ७ ॥

नोट—काफिर का अर्थ है गैर मुस्लिम जो कुरान-कयामत-कुरानी खुदा फरिश्तों और पैगम्बर को तथा इस्लाम को नहीं मानता हैं; जो खुदा के साथ अन्यों की पूजा करता है। कुरान में उनसे लड़ने, उन पर सख्ती करने, उनको कत्ल करने, उनसे जजिया (धार्मिक मुसलमानी टैक्स) लेने का मुसलमानों को आदेश है। यही बात ऊपर की आयतों में स्पष्ट की गई है। कुरान में ईसाईयों को भी काफिर माना गया है यथा—

"जो लोग मरियम के बेटे मसीह को खुदा का बेटा कहते हैं वही काफिर हैं।" । कु० सू० मायदा पारा ६ रुकू ३ आ० १७ ॥

"जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाएल (फरिश्ते) का तो अल्लाह भी ऐसे काफिरों का दुश्मन है।"

॥ कु० पारा १ सू० बकर रुकू १२ आ० ९८ ॥

दूसरा अध्याय

मौजूदा कुरान असली कुरान नहीं है

असली कुरान की कसौटियाँ

कुरान का दावा है कि—

"यह कुरान बड़ी शान का है ।११। लोहे महफ़ूज में लिखा हुआ है ।१२। कु० पा० ३० सूरे बुरूज ॥

'हमने इस कुरान को तुम्हारी (अर्बी) जबान में आसान कर दिया ।९७। कु० पा० १६ सूरे मरियम रुकू ६ ॥

वक्तव्य—इससे स्पष्ट है कि असली कुरान खुदा ने किसी अन्य भाषा में अपने यहां लोहे की पट्टी पर लिख रखा है । उसमें से कुछ भाग अरबी में सरल करके अरब में भेज दिया था जो मौजूदा कुरान माना जाता है ।

स्पष्ट है कि मौजूदा कुरान असली कुरान नहीं है, असली कुरान कौन सा होगा इसके लिये इस अध्याय में कसौटियां आगे दी गई हैं । ऊपर की कुरान की आयत से इतना तो स्पष्ट है कि असली कुरान बहुत कठिन भाषा में होगा और हो सकता है कि वह संस्कृत-अंग्रेजी-फारसी-हिब्रू-जर्मन-चीनी-जापानी-रूसी या

किसी अन्य देश की भाषा में हो ? यह जरूरी नहीं है कि वह अरबी में ही हो। यह सम्भव नहीं है कि खुदा अरबी के अलावा और भाषायें भी पढ़ा वा जानता हो। क्योंकि तौरात प्रारम्भ में हिब्रू भाषा में उतारी वा लिखी गई थी और इञ्जील अंग्रेजी में बनी थी। इससे खुदा का पहिले से इन दोनों भाषाओं का पूरा जानकार होना तो साबित हो ही जाता है।

असली कुरान की कसौटियाँ

कुरान में कोई भेद या ऐब नहीं हैं
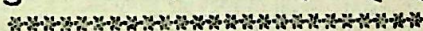
"तो क्या यह लोग कुरान में विचार नहीं करते और अगर खुदा के सिवाय (किसी और के पास से) आया होता तो जरूर उसमें बहुत भेद पाते" ।८२। कु० पा० ५ सूरे निसा रुकू ११ ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहम वाला मेहरबान है। हर तरह की तारीफ खुदा ही को है जिसने अपने सेवक पर कुरान उतारा और उसमें कोई ऐब नहीं रखा ।१। कु० पा० १५ सूरे कहफ रुकू १ ॥

कुरान में झूठ का प्रवेश नहीं है

"और यह कुरान अजीब किताब है ।४१। इसमें झूठ का न इसके आगे से और न इसके पीछे से दखल है, हिकमत वाले सब खूबियों के सराहे से उतारी हुई है" ।४२। कु० पा० २४ सूरे हामीम सज्दह रुकू ५।।

वक्तव्य—किसी भी पुस्तक में एक ही बात को बिना आवश्यकता बार २ कहना, किसी भी बात को एक स्थान पर लिखकर उसके विरुद्ध बात दूसरे स्थान पर लिखना जिससे पहिली बात का खण्डन हो जावे, ज्ञान, विज्ञान, सृष्टि नियम अथवा प्रत्यक्ष के विरुद्ध बातों का उस पुस्तक में वर्णन होना आदि अनेक बातें हैं जिनका उल्लेख मिलने से कोई भी पुस्तक दोषों से ग्रस्त मानी जाती है और उसकी प्रमाणिकता नष्ट हो जाती है।

कुरान शरीफ ने अपने को खुदाई पुस्तक तथा सभी प्रकार के ऐबों से निर्दोष घोषित किया है। हम कुरान के उक्त दावे के सन्दर्भ में उसकी स्थिति पर इस पुस्तक में आगे विचार करते हैं। सर्वप्रथम हम कुरान के कुछ स्थल ऐसे उपस्थित करते हैं जिनमें परस्पर विरोध विद्यमान है। दोनों परस्पर विरोधी स्थलों में कौन से सही माने जावें और कौन से गलत, यह निर्णय पाठक स्वयं करेंगे। उसके बाद हम अन्य प्रकार के स्थल कुरान से उपस्थित करेंगे जिससे सभी विद्वान पाठक कुरान शरीफ की एक धर्म ग्रन्थ के रूप में क्या स्थिति हो सकती है, इस पर स्वयं विचार करने में समर्थ होंगे।

●●

क्या मौजूदा कुरान असली कुरान है

कुरान शरीफ के अन्दर चन्द स्थल ऐसे हैं जिनके कारण हम मौजूदा कुरान को असली कुरान मानने से मजबूर हैं। वे स्थल निम्न प्रकार हैं—

असल कुरान छिपी किताब में लिखा है

"यह बड़ी कद्र का कुरान है ।७७। छिपी किताब में लिखा हुआ है ।७८। कु० पा० २७ सूरे वाकिया रुकू ३॥

असल कुरान लोहे महफूज पर लिखा हुआ है

"वल्कि यह कुरान बड़ी शान का है ।२१। लौह महफूज में लिखा हुआ है ।" २२ रुकू १। कु० पा० ३० सूरे वुरुज॥

"हमने इसको अरबी में बनाया है ताकि तुम समझो ।३। और यह (कुरान) हमारे यहां असल किताब में बड़े पाये की हिकमत की है" ।४। कु० पा० २५ सूरे जुखरुफ रुकू १॥

मौजूदा कुरान आसान कर दिया है

"फिर हमने कुरान को समझने के लिये आसान कर दिया है तो कोई है कि शिक्षा पकड़े ।" कु० पा० २७ सू० कमर रुकू २ ॥

तो हमने इस (कुरान) को तुम्हारी जबान में इस गरज से आसान कर दिया है कि तुम इससे परहेजगारों को खुशखबरी सुनाओ, झगड़ालुओं को सजा से डराओ ।९७। कुरान पा० १६ सू० मरियम रु० ६ ।

"अगर हम कुरान को किसी ऊपरी जबान बाले पर (उसकी जबान में) उतारते ।१९८। और वह उसे इन (अरब वालों) को पढ़ कर सुनाते तो वह उस पर ईमान लाते ।१९९। कु० पा० २९ सू० शुअरा रु० ११।

"यह ठीक तुम्हारे परवर्दिगार की ओर से है ताकि तुम उन लोगों को जिनके पास तुम से पहिले कोई डराने वाला नहीं पहुँचा (खुदा की सजा से) डराओ" ।३। कु० पा० २१ सू० सज्दह रु० १।

मौजूदा कुरान मक्का वालों को डराने को उतरा

और ऐ पैगम्बर ! हमने इसको इस वजह से उताराहै कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आसपास रहते हैं उनको डराओ..."।९२।

कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ११ ।

वक्तव्य—इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि असल कुरान मौजूदा कुरान नहीं है। असल कुरान तो खुदा के पास कठिन भाषा में कहीं लोहे महफूज पर लिखा हुआ मौजूद है। वह किस भाषा में होगा यह भी नहीं बताया गया है। मौजूदा कुरान को सरल भाषा में सिर्फ मक्का व उसके आसपास रहने वालों को डराने के लिये उन्हीं की जवान अर्बी में जो वे समझते थे बनाया गया है। यह खुदा के पास वाले असली बड़े कुरान का एक हिस्सा मात्र हो सकता है पूरा नहीं। क्योंकि मौजूदा कुरान के बारे में कुरान में लिखा है कि—

'यह सरल कर दिया गया है' इसका स्पष्ट अर्थ है कि असल को बदल कर सरल बनाया गया है।

इसके अतिरिक्त एक वात कुरान और भी कहता है। वह बताता है कि—

असल कुरान में हर पदार्थ व हर बात का जिक्र होना चाहिए

"......और तुम्हारे परवर्दिगार से जरा भी कुछ छिपा नहीं रह

सकता, न जमीन में और न आसमान में, और जर्रे से छोटी चीज हो या बड़ी रोशन किताब में लिखी हुई है ।६१। कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० ७ तथा कु० पा० ७ सूरे अनआम रु० ७ ।५९।

जिसमें विश्व भर की प्रत्येक बात लिखी हो । यह रोशन किताब लोहे महफूज पर खुदा ने लिख रखी है । उसी में से कुछ हिस्सा कुरान के नाम से यहाँ अरब में भेजा था । अतः असल किताब रोशन किताब है जो खुदा के पास रहती है । मौजूदा अरबी कुरान में सभी कुछ लिखा नहीं मिलता है । यह तो असल किताब के कुछ हिस्से की नकल मात्र हो सकती है । इस पर भी मौजूदा कुरान यह कुरान नहीं है जो पहिली बार में खुदा ने उतारा था । यह बात भी कुरान से ही स्पष्ट है कि यह कुरान सबके लिये नहीं था यह केवल उन थोड़े से मक्का व उसके आसपास रहने वालों के लिये था । जिनमें मुहम्मद से पहिले कोई अन्य पैगम्बर नहीं आया था जहाँ मैदान खाली था ।

मौजूदा कुरान में आयतें बदल डाली गई हैं

'हम कोई आयत मन्सूख कर दें या बुद्धि से उसको उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुँचा देते हैं । क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है ।१०६। कु० पा० १ सू० बकर रु० १३ तथा कु० पा० १४ सू० नहल रु० १४ आ० १०१।

जो कुरान पहिली बार में बना था मौजूदा कुरान वही नहीं है । यह तो संशोधित पुस्तक है । पहिले कुरान में कभी ४० सिपारे होते थे, पर अब ३० सिपारे वाला कुरान मिलता है । दस सिपारे इसमें कम हैं । इसलिये भी हम मौजूदा कुरान को असली व पूर्ण कुरान मानने में असमर्थ हैं ।

असली कुरान की परीक्षा की एक पक्की लाजवाब कसौटी भी मौजूदा कुरान में दी गई है। कुरान में लिखा है कि—

असली कुरान की पक्की कसौटियाँ

'और अगर कोई कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उस से जमीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगें तो वह यही होता…"।३१। कु० पा० १३ सू० राद रु० ४।

'ऐ पैगम्बर! अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि वह खुदा के डर के मारे झुक गया और फट गया होता। हम यह मिसाल लोगों के लिये बयान फरमाते हैं ताकि वह सोचें।२१। कु० पा० २८ सू० हशर रु० ३।

वक्तव्य—मौजूदा कुरान को रखने से न तो पहाड़ झुकता या फटता है, न अलमारी या मेज पर भूकम्प आता है न उससे कोई मुर्दा जिन्दा हो पाता है अतः यह असली कुरान हरगिज हरगिज नहीं माना जा सकता है। जिस कुरान से ऊपर की शर्तें पूरी हो सकेंगी, हम उसे ही सही कुरान मान सकेंगे। कुरान का वायदा है कि उसमें झूठ किधर से भी नहीं प्रविष्ट हो सकता है। तब या तो खुदा की यह कसौटी (आयत) बिलकुल गलत माननी पड़ेगी अथवा मौजूदा कुरान सच्चा कुरान नहीं माना जावेगा।

खुली किताब कौन सी है?

आसमान और जमीन में ऐसी कोई बात नहीं जो खुली किताब में न लिखी हो।७५। कु० पा० २० सू० नम्ल रु० ६।

प्रश्न—कुरान में तो हर बात लिखी नहीं है तब फिर वह खुली किताब कौन सी है?

तीसरा अध्याय

खुदाई किताब में गोलमाल

कुरान में परस्पर विरुद्ध चन्द स्थल

मौजूदा कुरान विश्वास योग्य नहीं है

खुदा का कुरान के बारे में दावा

'तो क्या लोग कुरान में विचार नहीं करते और अगर खुदा के सिवाय (किसी और के पास से) आया होता तो जरूर उसमें बहुत भेद पाते।' ८२। कु० पा० ५ सू० निसा रु० ११।

वक्तव्य—कुरान में खुदा ने दावा किया है कि कुरान में कोई भेद या परस्पर विरुद्ध बातें नहीं हैं न उसमें कोई दोष हैं। हम इस दावे को कुरान पढ़ने पर सही नहीं पाते हैं। इस अध्याय में ऐसे कुछ स्थल हम आगे उपस्थित करते हैं जिनमें कुरान में परस्पर बहुत विरोध है। परस्पर विरोधी स्थल जिस किताब में हों वह किसी भी दशा में प्रमाणिक (मान्य) नहीं हो सकती है और न वह खुदाई किताब मानी जा सकती है चाहे वह संसार

की कोई भी पुस्तक क्यों न हो हम ऐसा मानते हैं। साथ ही किसी भी पुस्तक में परस्पर विरोधी अनेक स्थलों का होना उसके लेखक की अल्पज्ञता व अयोग्यता का खुला सबूत होता है। कुरान के परस्पर विरोधी स्थल कुरान के मान्य खुदा बन्द के विषय में ऐसी ही स्थिति क्या प्रगट नहीं करते हैं? उल्माये कुरान इस पर विचार करें।

(१) कुरान खुदाई किताब है

'और कुरान जो हमने उतारी है उस पर ईमान लाओ '।४१।
(कु० पा० १ सू० बकर रु० ५)

'यह किताब कुरान इस किस्म का नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे ' '।३७।
(कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० ४)

'हमी ने यह शिक्षा कुरान उतारी है और हमी उसके निगहबान भी हैं' ।९। कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० १।

'और यह कुरान दुनियाँ के परवर्दिगार का उतारा हुआ है' ।१९२।
(कु० पा० १९ सू० शुअरा रु० ११)

'किताब (कुरान) जो हमने ईश्वरी सन्देशे से तुम पर उतारी है यह ठीक है' ।३१। कु० पा० २२ सू० फातिर रु० ५।

कुरान खुदाई किताब नहीं है

कुरान पारा १ सू० फातिहा आ० १ में लिखा है—

'शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत दयावान मेहरबान हैं' ।१।

नोट —इसमें कुरान को लिखने वाला खुदा से भिन्न है जो खुदा का नाम लेकर कुरान लिखना शुरू करता है।

'यहूद कहते हैं कि उज़ेर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। यह उनके मुँह का कहना है, उन्हीं काफिरों जैसी बातें बनाने लगे है जो इनसे पहिले हैं। खुदा इनको गारत करे, किधर को भटके चले जा रहे हैं' ।३०।

(कु० पा० १० सू० तौबा रु० ५)

नोट —'खुदा उनको गारत करे' यह शब्द खुदा के न होकर किसी दूसरे के हैं जो कुरान का लेखक हैं वह खुदा से उनको गारत करने की प्रार्थना करता हैं।

'खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता और खुश खबरी सुनाता हूँ' ।२।

(कु० पा० ११ सू० हूद रु० १)

नोट —इसमें कुरान लेखक खुदा से जुदा है और वह खुदा की ओर से लोगों को डराने की बात कहता है। या तो यह मानना पड़ेगा और या दो खुदा मानने पड़ेंगे जो कि कुरान को मान्य नहीं है। अतः कुरान लेखक खुदा से प्रथक है।

'खुदा की कसम तुमसे पहिले हमने बहुत सी उम्मतों की तरफ पैगम्बर भेजे' ।६३। कु० पा० १४ सू० नहल रु० ८।

नोट — इसमें खुदा की कसम खाने वाला कोई असली खुदा से प्रथक व्यक्ति है जिसने खुदा की कसम खाई है। स्पष्ट है कुरान लेखक (कसम खाने वाला) खुदा नहीं है।

'तेरे परवर्दिगार की कसम है कि हम इन सबसे पूछेंगे ।९२।' कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० ६। स्पष्ट है कि क़सम खाने वाला खुदा से भिन्न कुरान का लेखक है, खुदा नहीं है ।

खुदा ने कहा '(ऐ पैगम्बर) कुरान में मरियम का जिक्र करो' ।
(कु० पा० ६ सू० मरियम रु० २|१६)

नोट—स्पष्ट है कि कुरान में कुल बातें मौहम्मद साहब ने लिखी थीं, चाहे खुदा के हुक्म से लिखी हो या किसी अन्य के हुक्म से ।

'यह कुरान बड़ी शान का है । लोहे महफूज पर लिखा हुआ है ।'
(२१।२२। कु० पा० ३० सू० बुरुज)

नोट—असली कुरान ख़ुदा के पास है जो लोहे महफ़ूज की तख्ती पर खुदा ने लिख रखा है । वह भी तब जब कि दुनियाँ बनी भी नहीं थी । उसमें मुहम्मद-ईसा-मूसा-मरियम का जिक्र भी नहीं हो सकता है क्योंकि तब ये कोई भी नहीं थे । मौजूदा कुरान असली कुरान न होकर नकल मात्र है । वह भी कितने हिस्से की है, कोई नहीं जानता है ।

ऐ मुहम्मद ! ख़ुदा तुझे माफ करे । तूने क्यों उनको इस लड़ाई में न जाने का हुक्म दिया, इससे पहिले तुझे उज्र में सच्चे और झूठे मालूम हो ? ४३। कु० पा० १० सू० तौबा रु० ७।

वक्तव्य—ऊपर के दोनों प्रकार के प्रमाणों में परस्पर विरोध है, यह स्पष्ट है ।

(२) कर्मों का फैसला कयामत के दिन होगा

"और तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा माफी करने वाला मेहरबान है ।

अगर इनके काम के बदले में इनको पकड़ना चाहता तो फौरन ही इन पर सजा उतार देता, लेकिन इनके लिये एक म्याद है जिससे इधर कहीं शरण नहीं पा सकते" ।५८।

(कयामत के दिन) हम लोगों को घेर बुलावेंगे और उनमें से किसी को नहीं छोड़ेंगे ।४७। पांति की पांति (लाइन में) तुम्हारे परवर्दिगार के सामने पेश किये जावेंगे...।४८। और लोगों की कारगुजारियों का रजिस्टर रखा जायगा...और तुम्हारा परवर्दिगार किसी पर बे इन्साफी नहीं करेगा' ।४६। कु० पा० १५ सू० कहफ रुकू ६ ॥

'कयामत के दिन (लोगों के काम की तौल के लिए) हम सच्ची तराजू लगा देंगे तो किसी पर जरा भी जुल्म न होगा..." ।४७।

(कु० पा० १७ सू० अम्बिया रु० ४)

'यही लोग अपने परवर्दिगार के सामने (कयामत के दिन) पेश किये जावेंगे और गवाह गवाही देंगे कि यही है जिन्होंने अपने परवर्दिगार पर झूठ बोला था..." ।१८। कु० पा० १२ सू० हूद रुकू २ ॥ बड़ी बढ़ती तो उस दिन की है जब हम हर एक गिरोह को उनके पेशवाओं समेत बुलावेंगे तो जिनको कारनामों का लेखा उनके हाथों में दिया जावेगा वह अपने लेखे को पढ़ेंगे.......' ।७१।

कु० पा० १५ सू० बनी इसराएल रु० ८ ॥

'सुनो तुमने दुनियां की जिन्दगी में उनकी तरफ होकर झगड़ा कर लिया तो कयामत के दिन उनकी तरफ से अल्लाह के साथ कौन झगड़ा करेगा और कौन उनका वकील होगा' ।१०६।

(कु० पा० ५ सू० निसा रु० १६)

कर्मों का बदला यहां व कयामत में लोगों की इच्छानुसार मिलेगा

'और कोई शख्स बे हुक्म खुदा मर नहीं सकता, जिन्दगी लिखी

हुई है और जो शख्स दुनियां में वदला चाहता है। हम उसका वदला यहीं दे देते हैं और जो कयामत मे वदला चाहता है मैं उसको वहीं वदला दूंगा और जो लोग शुक्र करते हैं मैं उनको जल्दी वदला दूंगा' ।१४६।

कुरान पारा ४ सू० आल इमरान रुकू १५ ॥

जबर्दस्ती तुरन्त सजा देने के दृष्टान्त

'.....फिर हमने उनके गुनाहों के सवव से उनका नाश करा दिया ..'

।६। कु० पा० ७ सूरे अनआम ।

'तो जव वह नसीहतें जो उनको की गई थीं भुला दिया तो जो लोग बुरे काम से मना करते थे उनको हमने वचा लिया और जालिमों को उनकी वे हुक्मी के वदले हमने सख्त सजा में फंसाया ।१६५। फिर जिस काम से उनको मना किया जाता था जव उसमें हद से वढ़ गये तो हमने उनको हुक्म दिया कि फटकारे हुए वन्दर वन जाओ' ।१६६। तुम्हारा परवर्दिगार जल्द सजा देता है ।१६७।

(कु० पा० ९ सू० आराफ रु० २१)

'खुदा ने कोप उतारा और वन्दर सूअर वना दिया था' ६०।

(कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ९)

'... जो लोग हद से वढ़ गये हमने उनको मार डाला' ।९।

(कु० पा० १७ सू० अम्विया रु० १)

वक्तव्य—कुरान में ऊपर के प्रमाणों से स्पष्ट है कि खुदा किसी भी वात का पक्का नहीं है उसकी हर वात का विरोध कुरान के ही अन्य स्थलों से हो जाता है। खुदा ने कयामत का दिन सभी मनुष्यों के फैसले को नियत कर रखा है। उस दिन सभी लोग कुरान के अनुसार कवरों से उठकर लाइन वनाकर

खुदा के सामने पेश होंगे। हर गिरोह का पेशवा (पैगम्बर) वकील होगा व खुदा से झगड़ा करेगा। लोगों को उनके कर्म लेखा दिये जावेंगे। तराजू लगेगी और खुदा सभी का न्याय करेगा व कर्मों के अनुसार सजा वा इनाम देगा।

इस वायदे के खिलाफ दूसरी जगह खुदा ने कहा है कि कर्म फल यहां तुरन्त या कयामत के दिन जैसी कर्म करने वाले की ख्वाहिश होगी उसे दिया जावेगा। इसके अनुसार कयामत के दिन ही फैसला होगा यह बात गलत हो गई। साथ ही यह भी घोषणा खुदा ने कर दी कि कर्म करने वाले की मर्जी पर निर्भर होगा कि वह फल यहां चाहता है या कयामत के दिन। इसका अर्थ यह हुआ कि जो यहां फल नहीं चाहेंगे उन्हें खुदा हरगिज यहां नतीजा सजा या इनाम नहीं देगा।

आगे चल कर हमने देखा कि खुदा ने लोगों से विना पूंछे बिना उनकी मर्जी के यहीं पर उन्हें उनके पापों के बदले में मार डाला और कुछ को आदमी से जानवर सुअर बना दिया कि वे कर्मों की सजा भुगतें। इससे खुदा का यह दावा भी गलत हो गया कि वह यहां पर कर्ता की इच्छा पर ही सजा देता है।

इस प्रकार हमने देखा कि खुदा की सभी बातें कुरान में परस्पर विरुद्ध हैं। उसका कोई नियम नहीं है, कोई भी बात विश्वास योग्य नहीं है। इन्सान को इन्सान से कर्मफल भुगतने को सूअर की पशु योनि में भेज देना स्पष्टतया आर्यों के पुनर्जन्म के लिये जीवों को कर्मानुसार विभिन्न योनियों में जाने की बात का समर्थन है। यह भी साफ हो गया कि कर्मफल देने के लिए पैगम्बर वकील व कर्म लेखा पेश करने की भी कुरान की बात गलत है, क्योंकि विना उसके भी खुदा फैसला कर देता है।

(३) खुदा एक है

तुम्हारा पूजित एक ईश्वर है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वह बड़ा दया करने वाला कृपालु है। १६३। कु० पा० २ सू० बकर रु० १९।

'(ऐ पैगम्बर !) कहो कि वह अल्लाह एक है।१। और न कोई उसकी समता का है' ।४। कु० पा० ३० सू० इखलास रु० १ ।

खुदा एक से भी अधिक हैं

(खुदा ने कहा) 'तेरे परवर्दिगार की कसम है कि हम उनसे पूछेंगे।'
।९२। कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० ६।

(खुदा ने कहा) खुदा की कसम है तुमसे पहिले हमने बहुत सी उम्मतों (गिरोहों) की तरफ पैगम्बर भेजे।'
कु० पा० १४ सू० नह्ल रु० ८ ।

(खुदा ने कहा) 'मैं पूरब व पश्चिम के परवर्दिगार की कसम खाता हूँ कि हम उस पर सामर्थ रखते हैं' ।४०।
(कु० पा० २९ सू० मआरिज रु० २)

(खुदा ने कहा) खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो। मैं उसी की ओर से तुमको डराता और खुश खबरी सुनाता हूँ' ।२।
कु० पा० ११ सू० हूद रु० १ ।

वक्तव्य—प्रमाणों से स्पष्ट है कि कुरान ने जहां कुछ स्थानों पर खुदा केवल एक ही माना है वहां दूसरे स्थानों पर से यह भी प्रगट है कि कुरान कहने वाला खुदा अपने से प्रथक किसी दूसरे खुदा की कसमें खाता है, उसी की ओर से लोगों को डराता

है, पूरब और पश्चिम का मालिक कोई दूसरा खुदा भी है जो कुरानी खुदा से प्रथक हस्ती रखता है। कुरान में खुदा के एक या अनेक होने के बारे में परस्पर विरोध स्पष्ट है।

(४) खुदा बन्दों के पास है व सब जगह है

(खुदा ने फरमाया ऐ पैगम्बर) जब हमारे बन्दे तुम से हमारे बारे में पूछें तो (उनको समझा दो कि) हम उनके पास हैं, जब कभी हमें पुकारता है तो हम पुकारने वाले की टेर कबूल कर लेते हैं?

कु० पा० २ सू० बकर रु० २३ आ० १८६।

'अल्लाह ही का पूरब पश्चिम है तो जहां कहीं मुँह कर लो उधर ही अल्लाह का सामना है' ।११५। कु० पा० १ सू० बकर रु० १४।

जमीन से खुदा बेहद दूर जन्नत में रहता है

'खुदा के मुकाबिले में जो सीढ़ियों का मालिक है ।३। उससे फरिश्ते और रूह उस (खुदा) की तरफ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज ५० वर्ष का है' ।४। कु० पा० २९ सू० मआरिज रु० १।।

'परहेजगार जन्नत में बागों में और नहरों में होंगे' ।५४। सच्ची बैठक में बादशाह (खुदा) के पास जिसका सब पर कब्जा है बैठेंगे ।५५।

कु० पा० २७ सूरे कमर रुकू ३ ।।

वक्तव्य—एक स्थान पर खुदा को सर्वत्र (हाजिर नाजिर) माना है, दूसरी जगह उसे आसमान में बहुत दूर जन्नत में रहने वाला बताया है। दोनों बातें परस्पर विरुद्ध हैं।

(५) खुदा ईमानदारों का मददगार है

'अल्लाह ईमान वालों का मददगार है कि उनको अंधेरे से निकाल कर रोशनी में लाता है......'

(कु० पा० ३ सूरे वकर रुकू ३४ आ० २५७)

खुदा बे-ईमान बनना सिखाता है

'तुम लोगों के लिये खुदा ने तुम्हारी कसमों के तोड़ डालने का भी हुक्म रखा है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार और वह जानकार हिकमत वाला है'। कु० पा० २८ सू० तहरीम रु० १ आ० २॥

'ईमान वालों को खुश खबरी सुना दो ।२२३। तुम्हारी फिजूल कस्मों पर खुदा तुमको नहीं पकड़ेगा। लेकिन उनको पकड़ेगा जो तुम्हारे दिली इरादे हों और अल्लाह बख्शने वाला (और) बर्दाश्त करने वाला है।' ।२२५। कु० पा० २ सू० वकर रु० २८। तथा सू० मायदा रु० १२ आ० ८६।

वक्तव्य—लोगों (मुसलमानों) को ईमानदार तथा बे-ईमान बनने के परस्पर विरोधी उपदेश देने से कुरान में परस्पर विरोध स्पष्ट है।

(६) विषय भोग एक ही प्रकार से करो

(ऐ पैगम्बर ! लोग) तुमसे हैज (मासिक धर्म) के बारे में पूछते हैं तो समझा दो कि वह गन्दगी है। (हैज) के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न हो ले उनके पास न जाओ। फिर जब

नहा धो लें तो जिधर से जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है, उनके पास जाओ ।२२२। पा० २ सू० बकर रु० २८ ।

विषय भोग चाहे जैसे करो छूट है

तुम्हारी बीवियाँ (गोया) तुम्हारी खेतियां हैं। अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिये आयन्दा का भी बन्दोबस्त रखो··· ऐ पैगम्बर ईमान वालों को (यह) खुश खबरी सुना दो ।२२३।

कु० पा० २ सू० बकर रु० २८ ॥

वक्तव्य—कुरान ने विषय भोग का पहिले एक ही प्रकार की ओर इशारा किया था। पर शायद लोगों के ऐतराज पर तुरन्त उसके खिलाफ लिख दिया कि जैसे किसान अपनी खेती में चाहे जैसे चाहे जिधर से अपनी मर्जी के अनुसार चला जाता है वैसे ही हर मुसलमान को अपनी बीवी रूपी खेती में चाहे जैसे जाहे जिधर से जाने (विषय भोग करने) की पूरी छूट देदी गई। स्पष्ट है कि ऊपर की दोनों बातें कुरान में परस्पर विरुद्ध हैं।

(७) खुदा 'हो' कहकर सब कुछ बना लेता हैं

जब हम किसी चीज को चाहते है तो हमारा कहना उसके बारे में सिर्फ इतना ही होता है कि हम उसको फर्मा देते हैं कि 'हो' और वह हो जाता है ।४०। कु० पा० १४ सू० नहल रु० ५ ।

खुदा ने मेहनत करके संसार बनाया

'और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके बीच

में है छः दिन में बनाया और हम नहीं थके' ।३७।

(कु० पा० २६ सू० काफ रु० ३)

—खुदा ने आसमानों को बाहु बल से बनाया था—

'और हमने आसमानों को अपने बाहु बल से बनाया और हम सामर्थ वाले हैं' ।४७। कु० पा० २७ सू० जारियात रु० ३।

वक्तव्य—स्पष्ट है कि खुदा के दावे परस्पर विरोधी हैं। उसे दुनियां बनाने में बहुत कड़ी मेहनत छः दिन तक करनी पड़ी थी, अपने हाथों से मेहनत करके उसने जमीन आसमान व सभी कुछ बनाया था यह उसने खुद स्वीकार किया है। इस दशा में खुदा का पहिला दावा कि केवल 'हो' कहकर वह सभी कुछ बना देता हैं सर्वथा गलत साबित हो जाता है। कुरान व खुदा के दावे में परस्पर विरोध स्पष्ट है।

(८) कयामत को दरिया पाट दिये जायेंगे

'जिस वक्त दरिया पाट दिये जांय' ।६।

(कु० पा० ३० सू० तकवीर रु० १)

नदियां बह चलेंगी

(कयामत के दिन)' जब नदियाँ बह चलें' ।३।

वक्तव्य—कयामत के दिन नदियां यदि बहेंगी तो पटी नहीं होंगी और यदि पट जावेंगी तो वह नहीं सकेंगी। दोनों बातें (आयतें) परस्पर विरुद्ध बात कहती हैं।

(६) खुदा सब कुछ जानता है

अल्लाह हर चीज से जानकार है। कु० सू० तौबा रु० १४ आ० ११५। तुमको मालूम है कि जो कुछ आसमानों और जो कुछ जमीन में हैं, अल्लाह जानता है और यह कि अल्लाह हर चीज से जानकार है।

कु० पा० ७ सूरे मायदा रु० १३ आ० ६६

खुदा सब कुछ नहीं जानता है

(खुदा ने) "जमीन और आसमान दोनों से कहा कि तुम दोनों खुशी से आये या लाचारी से ?

दोनों ने कहा हम खुशी से आये।' कु० पा० २४ सूरे हामीम-सज्दह रु० २ आ० ११।

(खुदा ने कहा) फिर कई वर्ष के लिये हमने गुफा में उनके कान थपक दिये।११। फिर हमने उनको उठाया ताकि हम देख लें कि दो गिरोहों में किसको ठहरने की अवधि याद है।'

(कु० पा० १५ सूरे कहफ रुकू १ आ० १२)

(कयामत के दिन खुदा) दोजख से पूछेगा कि तू भर चुका। वह कहेगा क्या कुछ और भी है। कु० पा० २६ सू० काफ रु० ३ आ० २६।।

वक्तव्य—ऊपर के स्थलों से स्पष्ट है कि कुरान कहीं पर खुदा को सब कुछ जानने वाला 'सर्वज्ञ' मानता है और दूसरे स्थानों पर बताता है कि खुदा स्वयं कुछ नहीं जानता है वह पूछ व परीक्षा करके ही बातों को जान पाता है। स्पष्ट है कि कुरान का खुदा को सर्वज्ञ बताने का दावा कुरान से ही गलत साबित हो जाता हैं। दोजख का जवाब देना भी विलक्षण बात है।

(१०) बुराई का बदला अच्छाई से देवे

(खुदा ने कहा) 'और नेकी और बदी बराबर नहीं। बुराई का बदला अच्छे वर्ताव से दे, तो तुझमें और जिस आदमी में दुश्मनी थी तू पक्का दोस्त पायेगा।' कु० पा० २४ सू० सज्दह रु० ४ आ० ३४।

बुराई का बदला बुराई से देवें

'ऐ ईमान वालो ! जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको जान के बदले जान का हुक्म दिया जाता है। आजाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत।'

(कु० पा० २ सूरे बकर रु० २२ आ० १७८)

'जो लोग खुदा की आयतों को सुनकर इन्कारी हैं, बेशक उनको सख्त सजा मिलेगी, और अल्लाह जबरदस्त बदला लेने वाला है।'

(कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० १ आ० ४)

'जो लोग काफिर हुए और इन्कारी की ही हालत में मर गये, उनमें का कोई शख्स जमीन के बराबर भी सोना बदले में देना चाहे तो हरगिज कबूल नहीं किया जायगा। यही लोग हैं जिनको दुःखदाई सजा होगी।' कु० पा० ४ सू० आल इमरान रु० ९ आ० ९१।

वक्तव्य—ऊपर एक स्थान पर बुराई का बदला बुराई से न देकर भलाई से देने का उपदेश है तो दूसरे स्थानों पर स्वयं खुदा भी बुराई का बदला बुराई से देता दिखाई देता है तथा दूसरों से भी कहता है कि वे भी बुराई का बदला भलाई से न देकर बुराई से ही दिया करें यथा औरत के बदले निर्दोष औरत पर भी जुल्म करें। स्पष्ट है कि कुरान में परस्पर विरोधी बातों का समावेश है।

(११) खुदा ने धोखा खाया व बात पलटी

ऐ पैगम्बर ! मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि अगर तुममें से जमे रहने वाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे, अगर तुममें से सौ होंगे तो हजार पर काफ़िरो पर ज्यादा ताकतवर बैठेंग। क्योंकि वह ऐसे लोग हैं जो समझते ही नहीं।६५।

इस आयत में खुदा ने मुसलमानी फौज की ताकत का अन्दाज लगाकर जाना था कि वे बड़े बहादुर लड़ने वाले हैं। खुदा ने अपने इसी अन्दाजे या जानकारी के बल पर उन्हें बताया कि बीस मुसलमान दो सौ पर और सौ मुसलमान हजार काफिरों पर ज्यादा बलवान बैठेंगे। मगर जल्द ही खुदा को अपनी गलती का पता चल गया और उसने अपनी पहिली बात पलट कर फिर कहना प्रारम्भ किया कि—

'अब खुदा ने तुम पर से अपने (पहिले) हुक्म का बोझ हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुम में कमजोरी है तो अगर तुममें से जमे रहने वाले सौ होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकतवर होंगे और अगर तुममें से हजार होंगे खुदा के हुक्म से वह दो हजार पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी है जो जमे रहते हैं।६६।

(कु० पा० १० सू० अन्फाल रुकू ९)

वक्तव्य—पहिले मुसलमानों की ताकत का गलत अन्दाज लगाना और फिर अपनी भूल के मालूम होने पर पहिला आदेश खारिज करके दूसरा आदेश देना खुदा की नातजुर्बेकारी-कम समझी व सब कुछ न जानने वाला उसे साबित करना है।

(१२) शैतान एक ही था

(खुदा से) "शैतान ने कहा ऐ मेरे परवर्दिगार ! जैसी तूने मेरी राह

मारी मैं भी दुनियां में इन सबको वहारें दिखाऊँगा और इन सबको राह से वहकाऊँगा।' कुरान पारा० १४ सू० हिज्र रुकू ३ आ० ३९।

शैतान बहुत से थे

(ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो कि मैं तुमको बताऊँ कि किस पर शैतान उतरा करते हैं।२२१। वह हर झूठे कुकर्मों पर उतरा करते हैं।२२२। कु० पा० १९ सू० शुअरा रु० ११।

वक्तव्य—शैतान कुरान में एक ही माना है जिसने आदम को सिजदा करने से इन्कार कर दिया था और खुदा का सामना किया था किन्तु दूसरे स्थान पर कुरान ने अनेक शैतानों का अस्तित्व स्वीकार किया है जो कि कुरान में परस्पर विरोधी वातों का होना सिद्ध करता है।

(१३) दीन में जबर्दस्ती नहीं

'दीन में जवर्दस्ती नहीं, भूल और सुधार जाहिर हो चुकी है...।'

(कु० पा० ३ सू० वकर रु० ३४ आ० २५६)

दीन (इस्लाम) को जबर्दस्ती फैलाओ

(ऐ मुसलमानो) 'काफिरों से लड़ते रहो यहाँ तक कि फसाद न रहे और सब खुदा का ही दीन हो जाय।'

(कु० पारा ९ सूरे अन्फाल रु० ४० आ० ३९)

तुम उनसे लड़ो या वे मुसलमान हो जायें।१६।

(कु० पा० २६ सू० फतह रुकू २)

(१४) खुदा एक बार देकर फिर उसमें तबदीली नहीं करता

'मेरे यहाँ बात नहीं बदली जाती और मैं बन्दों पर जुल्म नहीं करता' ।२८। कु० पा० २६ सू० काफ रु० २।

'यह इसलिए कि खुदा ने जो पदार्थ किसी कौम को दिये हों जब तक कि वह लोग आप ही न बदलें जो उनके जी में है, खुदा (की आदत) नहीं कि उसमें कुछ हेर फेर करे, अल्लाह सुनता और जानता है।'

कु० पा० १० सू० अन्फाल रु० ७ आ० ५३।

खुदा ने पहिला हुक्म बदला

'अन्त को यहूदियों की शरारत की वजह से हमने पाक चीजें जो उनके लिये हलाल थीं उन पर हराम करदीं और इस वजह से कि अकसर खुदा की राह से रोकते थे।'

(कु० पा० ६ सू० निसा रुकू २२ आ० १६०)

वक्तव्य—खुदा की नातजुर्बेकारी अज्ञानता तथा उसकी दोनों बातों में परस्पर विरोध स्पष्ट है। खुदा जबान पलट जाता है।

(१५) खुदा ने शर्त लगाई

"यह किताब (कुरान) इस किस्म का नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई उसे अपनी तरफ से बना लावे..."।३७। क्या वह कहते हैं कि उसे खुद (मुहम्मद) पैगम्बर ने बना लिया है ? (तू कह दे कि) यदि

सच्चे हो तो एक ऐसी ही सूरत तुम भी बना लाओ और खुदा के सिवाय जिसे चाहो बुला लो" ।३८।।

(कु० पा० ११ सू० यूनिस रुकू ५)

खुदा ने शर्त बदल डाली

क्या (काफिर) कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल से बना लिया है, तो इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाई हुई दस सूरतें ले आओ और खुदा के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुला लो, अगर तुम सच्चे हो ।१३।

॥ कु० पा० १२ सू० हूद रुकू २ ॥

(१६) कयामत के दिन रिश्तेदारियां बाकी न रहेंगी

"फिर जब नरसिंहा फूँका जायगा तो उस दिन लोगों में न तो रिश्तेदारियाँ बाकी रहेंगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे ।"

(कु० पा० १८ सूरे मोमिनून रु० ६ आ० १०१)

रिश्तेदारियां बाकी रहेंगी

तो जिसको उसका कर्म लेखा दाहिने हाथ में दिया जायगा ।७। तो उससे आसानी से हिसाब लिया जायगा ।८। और वह खुश खुश अपने बाल बच्चों में वापिस जायगा ।९। कु० पा० ३० सू० इन्शिकाक रुकू १।।

(बहिश्त में) 'उनके बड़ों और उनकी बीबियों और उनकी औलाद जो भला काम करने वाले होंगे (सब उनके साथ जायेंगे) ।'

(कु० पा० १३ सू० राद रु० ३ आ० २३)

(१७) खुदा काफिरों का ढेर लगाकर दोजख में झोंकेगा

"काफिर दोजख की तरफ हांके जायेंगे ।३६। ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सब का ढेर लगाये, फिर उस ढेर को दोजख में झोंक दे। यही लोग हैं जो घाटे में रहेंगे' ।३७। कु० पा० ६ सू० अन्फाल रु० ४।।

काफिर टोलियां बनाकर खुद दोजख में दाखिल होंगे

(काफिरों से कहा जायगा) नरक के दरवाजों में जा दाखिल हों।"
(कु० पा० २४ सू० मोमिन रु० ८)

"और काफिर नरक की तरफ टोलियां बना बनाकर हांके जायेंगे यहां तक कि जब दोजख (नरक) के पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाजे खोल दिये जायेंगे और नरक का दरोगा उनसे कहेगा कि क्या तुममें के पैगम्बर तुम्हारे पास नहीं आये थे कि वह तुम्हारे परवर्दिगार की आयतें तुमको पढ़कर सुनाते और इस दिन की मुलाकात से तुम्हें डराते। यह जवाब देंगे कि हां मगर सजा का हुक्म काफिरों पर कायम हो गया है ।७१। (फिर इनसे) कहा जायगा कि दोजख (नरक) के दरवाजों में दाखिल हो, हमेशा इसमें रहो। गरज अकड़ वालों का बुरा ठिकाना है ।७२।
(कु० पा० २४ सू० जुमर रु० ८)

"कयामत के दिन फिरऔन अपनी जाति के आगे आगे होगा और ले जाकर उन्हें दोजख में दाखिल करेगा' ।९८। सू० हूद रु० ९ पा० १२।

(१८) खुदा फरिश्तों की फौजें मदद को नहीं भेजा करता

"और हमने उसके पीछे उसकी कौम पर आसमान से फरिश्तों का कोई लश्कर न उतारा और हम फौजें नहीं उतारा करते।"

(कु० पा० २३ सूरे यासीन रुकू २ आ० २८)

खुदा ने फरिश्तों की फौजी मदद भेजी और खुद भी लड़ने गया

वल्कि अगर तुम मजबूत वने रहो और वचो और दुश्मन अभी इसी दम तुम पर चढ़ आये तो तुम्हारा परवर्दिगार पांच हजार फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा।१२६। यह मदद तो खुदा ने सिर्फ तुम्हारे खुश करने को की···' ।१२७। कु० पा० ४ सू० आल इमरान रु० १३१ ॥

"उसने (खुदा ने) तुम्हारी सुनली कि हम लगातार हजार फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा।९।

(ऐ पैगम्बर !) यह वह वक्त था कि तुम्हारा परवर्दिगार (युद्ध क्षेत्र में) फरिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं, तुम मुसलमानो को जमाये रखो, हम जल्द काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे, वस तुम इनकी गर्दनें मारो और इनके टुकड़े टुकड़े कर डालो।१२।

(कु० पा० ९ सू० अन्फाल रु० २)

"फिर अल्लाह ने अपने पैगम्वर पर और मुसलमानों पर अपना सब्र उतारा और ऐसी फौजें भेजीं जो तुमको दिखलाई नहीं पड़ती थीं और काफिरों को बड़ी सख्त मार दी और काफिरों की यही सजा है।'

।२६। कु० पारा १० सू० तौवा रुकू ४॥

वक्तव्य—कुरान की दोनों बातों में परस्पर विरोध स्पष्ट है। खुदा ही जाने कि कौन सी सच है।

(१६) खुदा ने सारा संसार छः दिन में बनाया था

"तुम्हारा परवर्दिगार अल्लाह है जिसने छः दिन में जमीन और आसमान को पैदा किया फिर तख्त पर जा विराजा""""।"

(कु० पा० ८ सूरे आराफ रु० ७ आ० ५४)

"जिसने जमीन और आसमान को और जो कुछ आसमान और जमीन में है (सब को) छः दिन में पैदा किया, फिर तख्त पर जा बैठा (वही खुदा) रहमान है तो उसकी खबर किसी समझदार से पूछो।"

(कु० पा० १६ सू० फुर्कान रु० ५ आ० ५६)

खुदा ने छः दिन में सिर्फ जमीन व उस पर खुराकें पैदा की थीं

(आठ दिन में संसार बनाया था)

"(ऐ पैगम्बर!) कहो क्या तुम उससे इन्कार करते हो जिसने दो दिन में जमीन को पैदा किया और तुम उसका शरीक बनाते हो। यही सारे जहान का परवर्दिगार है।६। और उसी ने जमीन में पहाड़ बनाये और उसमें बरकत दी और उसी में मांगने वालों के लिये चार दिनो में खुराकें ठहरा दीं।१०।"

"इसके बाद दो दिन में उसके सात आसमान बनाये और हर एक आसमान में अपना हुक्म उतारा और पहिले आसमान को हमने तारों

से सजाया और हिफाजत रखी। यह जोरावर हिकमत वाले से सधा है" ।१२। कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० १ व २॥

वक्तव्य—ऊपर पहिले तो केवल छः दिन में जमीन आसमान व जो कुछ भी उनके बीच में है बनाने की बात कही गई है। दूसरी जगह केवल जमीन व उस पर हर चीज केवल छः दिन में बनाने की बात लिखी है तथा आसमानों को सातवें व आठवें दिन बनाना बताया है। अर्थात् छः दिन के वजाय आठ दिन में संसार बनना बताया गया है जो कि परस्पर विरोधी वर्णन है।

(२०) खुदा बेपरवाह है (उसको कोई गरज नहीं है)

"अल्लाह वेपरवाह है" । कु० पा० ३० सू० इखलास आ० २।

खुदा परवाह वाला (गरज मन्द है)

(खुदा ने कहा) और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी मतलव से बैदा किया है कि हमारी पूजा करें' ।५६।

(कु० पा० २७ सू० जारियात रु० ३)

(२१) खुदा ने लोगों को मुशरिकीन बना दिया

ऐ पैगम्बर ! (कुरान) जो तुम्हारे परवर्दिगार के यहाँ से प भेजा गया है, उसी पर चले जाओ खुदा के सिवाय कोई पूजित नहीं और मुशरिकीन से अलग रहो ।१०६। अगर खुदा चाहता तो वे शरीक न ठहराते और हमने तुमको इन पर निगहवान नहीं किया और न तुम इन पर वकील हो ।१०७।' कु० पा० ७ सू० अनआम रु० १३ ॥

"खुदा चाहता तो तुम (सब) को एक ही गिरोह बना देता। मगर वह जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सुझाता है..."।९३। कु० पा० १४ सू० नहल रु० १३ ॥

खुदा की मुशरिकीन से शत्रुता व उन्हें कत्ल करने का आदेश

"यह गुनाह तो अल्लाह माफ नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीक ठहराया जाये, और इससे कम जिसको चाहे माफ करे और जिसने अल्लाह का साझी ठहराया वह दूर भटक गया।११६।'

(कु० पा० ५ सू० निसा रु० १८)

"किताब वालो और शिर्क वालो जकात में से जो लोग इन्कार करते रहे दोजख की आग में होंगे।६।' कु० पा० ३० सू० बय्यिनह ॥

"फिर जब अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहाँ पाओ कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो। उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो..." ।५।

(कु० पा० १० सू० तौबा रु० १)

वक्तव्य—कुरान के अनुसार खुदा ने लोगों को स्वयं ही मुशरिक बनाया, उन्हें गुमराह किया और फिर उन्ही को कत्ल करने उनसे लड़ने को मुसलमानों को आदेश दिया। खुदा का यह आचरण परस्पर विरोधी स्पष्ट है।

(२२) खुदा नहीं चाहता कि लोग मुसलमान बनें

ऐ पैगम्बर ! तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो जितने आदमी जमीन की सतह में हैं सबके सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों को मजबूर

कर सकते हो कि वह ईमान ले आवें ।६६। किसी शख्स के हक में नहीं है कि बिना हुक्म खुदा के ईमान ले आवें " ।१०।

कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० १०॥

"और दीन के रास्ते दो प्रकार के है, एक सीधा रास्ता खुदा तक है और दूसरा टेढ़ा। और खुदा चाहता तो तुम सबको सीधा रास्ता दिखा देता ।६।' कू० पा० १४ सू० नहल रु० १ ॥

"हम ही ने इनके दिलों पर परदे डाल दिये हैं ताकि सच बात को न समझ सकें और इनके कानों में (एक प्रकार का) बोझ पैदा कर दिया है। (ऐ पैगम्बर !) अगर तुम इनको सच्ची राह की तरफ बुलाओ तो यह कभी राह पर आने वाले नहीं ।५७।"

(कु० पा० १५ सू० कहफ रु० ८)

"तुम इनसे कहो कि अल्लाह जिसको चाहता है भटकाया करता है।' कु० पा० १३ सू० राद रु० ४ आ० २७ ॥

"जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुम में और उन लोगों में जिनको कयामत का विश्वास नहीं एक परदा कर देते हैं ।४५। उनके दिलों पर आड़ रखते है ताकि कुरान को न समझ सकें और उनके कानों में बोझ डालते हैं ताकि सुन न सकें .....।४६।"

(कु० पा० १५ सू० बनी इस्राएल रु० ५)

काफिरों (गैर मुसलमानों) से लड़कर उन्हें मुसलमान बनाओ

(ऐ मुसलमानो) काफिरों से लड़ते रहो यहाँ तक कि फसाद न रहे और सब खुदा ही का दीन हो जाय...।३६।"

(कु० पा०६ सू० अन्फाल रु० ५)

वक्तव्य—कुरान में बताया है कि खुदा जिसे चाहे बहकाता है, जिसे चाहे सही रास्ता दिखा देता है। खुदा चाहता तो दुनियां में सभी लोग मुसलमान बन जाते। मगर खुदा को सबको मुसलमान बनाना मंजूर न था। यहां तक कि खुदा गैर मुस्लिमों के दिलों व दिमागों पर परदे डाल देता था कि वे कुरान को सुन व समझ भी न सकें। इससे प्रगट है कि काफिर यदि मुसलमान नहीं बनें तो उनका कोई दोष नहीं था। मगर आगे खुदा ने मुसलमानों को आदेश दिया है कि वे लड़ कर काफिरों को मुसलमान बनने पर मजबूर करे। उधर खुदा यह भी स्वीकार करता है कि बिना खुदा के हुक्म के कोई भी काफिर मुसलमान नहीं बनेगा चाहे कोई कितना भी जोर लगा लेवे। स्पष्ट है कि कुरान में परस्पर विरोधी बातें लिखी हैं जो उसकी शान में बट्टा लगाने वाली हैं।

(२३) लोगों को गुमराह कराने को खुदा ने उन पर शैतान लगाये हैं

"क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफिरों पर छोड़ रखा है कि वह उनको उकसाते रहते हैं।८३।"

(कु० पा० १६ सू० मरियम रु० ६)

जो शख्स (खुदा) कृपालु की राह से बराता है हम उस पर एक शैतान मुकर्रर कर दिया करते हैं। और वह उसके साथ रहता है।३६। और शैतान पापियों को राह से रोकता है और वह समझते है कि हम राह पर हैं।३७। कु० पा० २५ सूरे जुखरुफ रुकू ४॥

शैतान से बचो वह गुमराह करेगा खुदा का आदेश

शैतान की पैरवी न करो, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।१६८।

वह तो तुम्हें वदी और वेशर्मी वतायेगा और यह चाहेगा कि वे समझे वूझे तुम खुदा के वारे में झूठे जंजाल गढ़ो ।१६६।

(कु० सू० बकर रु० २१ पा० २)

"शैतान लोगों में झगड़ा डलवाता है और शैतान आदमी का खुला वैरी है ।५३। कु० पा० ।१५ सू० वनी इसराएल रु० ५।।

वक्तव्य—खुदा ने लोगों को गुमराह करने के लिए उनके पीछे शैतानों को लगाया ताकि वे उन्हें बुरे कामों के लिए उकसाते रहा करें । इसके मानी यह हुए कि भोले भाले इन्सान को गुमराह कराने की जिम्मेदारी खुदा की रही । अब जब कमजोर इन्सान पर शैतान हावी हो गया तो खुदा शैतान की बुराई करता है और इससे बचने का उपदेश देता है । दोनों प्रकार की बातें परस्पर विरोधी हैं और खुदा को वदनाम करने वाली हैं ।

(२४) ब्रह्मचर्य (इन्द्रि निग्रह) का उपदेश और खण्डन

" विषयेन्द्रिय को थामने वाले मर्द और विषयेन्द्रिय को थामने वाली औरतें और अक्सर याद करने वाली औरतें इन (सव) के लिए अल्लाह ने पापों की क्षमा और वड़े फल तैयार कर रखे हैं ।३५।"

(कु० पा० २२ सू० अहजाव रुकू ५)

'और जो अपनी शहवत की जगह (विषयेन्दियाँ) थामते हैं ।२६। मगर अपनी जोरुओं और बाँदियों से, सो उन पर उलाहना नही ।३०।'

(कु० पा० २६ सू० मआरिज रु० १)

"और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरा और इन्द्रियों की इच्छाओं को रोकता रहा ।४०। तो उसका ठिकाना वहिश्त है ।४१।'

(कु० पा० ३० सू० नाजियात रुकू २)

"जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ वे अपने को थामे रहे···और तुम्हारी लोडियाँ जो पाक रहना चाहती हैं उनको दुनियाँ की जिन्दगी के फायदे की गरज से हरामकारी पर मजबूर न करो और जो उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किये गये पीछे क्षमा करने वाला मेहरवान है।" ३३। कु० पा० १८ सू० नूर रु० ४ ॥

और वह जो अपनी शर्मगाहों की रक्षा करते हैं।५। मगर अपनी बीवियों और बाँदियों के बारे में इल्जाम नहीं है।६।

(कु० पा० १८ सू० मोमिनून रु० १)

(जन्नत में) "ऐसा ही होगा हम बड़ी २ आँखों वाली हूरों से उनका ब्याह कर देंगे।५४।' कु० पा० २५ सू० जासियह रु० ३ ॥

'उनमें (पाक हूरें) होंगी जो आँख उठा कर भी नहीं देखेंगी और बैकुण्ठ वासियों से पहिले न तो किसी मनुष्य ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने।५६।' उनमें अच्छी खूब सूरत औरतें होंगी।७०। हूरें जो खीमे में बन्द हैं।७२। कु० पा० २७ सूरे रहमान रु० ३॥

"जो कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिये तुमको खुदा का हुक्म है। और इनके सिवाय दूसरी सब औरतें हलाल हैं जिनको तुम माल देकर कैद में लाना चाहो न कि मस्ती निकालने को।२४। और तुममें से जिसको मुसलमान बीबियों से निकाह करने की ताकत (मिहर आदि के कारण) न हो तो खैर बांदियाँ ही सही जो तुम मुसलमानों के कब्जे में आ जायें···' कु० पा० ५ सू० निसा रु० ४ ॥

वक्तव्य— ऊपर ब्रह्मचर्य के उपदेश देने वाली बातें तो ठीक हैं मगर साथ ही साथ कई कई बीबियों, बांदियों, लूट में हाथ लगी औरतों के साथ विषय भोग की छूट दे देना बादियों से बलात्कार के पाप को भी खुदा द्वारा माफ करने की घोषणा,

बहिश्त में अछूती क्वारी खूब सूरत औरतों से निकाह करने का प्रलोभन देना आदि बातों का कुरान में वर्णन होने से ब्रह्मचर्य का खुदा का उपदेश स्वयं जहां परस्पर विरोधी बात हैं वहां वह एक मखौल बन गया है। इस्लामी साहित्य के अनुसार ह० मुहम्मद साहब की ११ निकाही व ६ विना निकाही स्त्रियां थीं।

(२५) कर्ता को ही उसके कर्म का फल मिलेगा

(ऐ यहूद !) "यह लोग हो चुके, उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुमको, और तुमसे उनके काम की पूछताछ नहीं होगी।"

(कु० पा० १ सू० बकर रु० १६ आ० १३४)

खुदा किसी पर भी रत्ती भर जुल्म नहीं करता है

"अल्लाह रत्ती भर जुल्म नहीं करता वल्कि भलाई हो उसको वढ़ाता है और अपने पास से बड़ा वदला दे देता है।४०।" " अल्लाह जिसको चाहता पाक वनाता है और जुल्म तो किसी पर रत्ती के वरावर भी न होगा।५०।" कु० पा० ५ सू० निसा रुकू ६ व ७॥

बे गुनाहों पर जुल्म का खुदाई आदेश

(खुदा ने कहा) 'ऐ ईमान वालो (मुसलमानो) ! जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको (जान के) बदले जान का हुक्म दिया जाता है। आजाद के वदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम, औरत के वदले औरत।

(कु० पा० २ सू० वकर रु० २२ आ० १७८)

वक्तव्य—यदि कोई दुष्ट किसी भी औरत के साथ ज्यादती कर डाले तो न्याय के अनुसार उस दुष्ट को उसके कर्म का दण्ड

चाहिए। पर यह खुदा का कहां का इन्साफ है कि वह उस दुष्ट की वेगुनाह औरत से ठीक वैसा ही वदला लेने का आदेश देवे जैसा कि उस दुष्ट मनुष्य ने विपक्षी की औरत के साथ किया है ? खुदा का यह आदेश कुरान के उस आदेश का विरोधी है कि कर्मफल केवल उसे करने वाले को ही मिलेगा और खुदा रत्ती भर भी जुल्म नहीं करता है।

(२६) खुदा ने धोखा खाया

"और हमने चमत्कारों को भेजना वन्द किया क्योंकि अगले लोगों ने झुठलाया।...और हम चमत्कार सिर्फ डराने की गरज से भेजा करते हैं।५९।...वावजूदें हम इन लोगों को डराते हैं लेकिन हमारा डराना इनकी सरकशी को वढ़ाता है।६०।"

(कु० पा० १५ स० वनी इस्राएल रु० ६)

खुदा सर्वज्ञ है

"क्या इन मनुष्यों को यह वात मालूम नहीं कि जो कुछ छिपाते हैं और जो कुछ जाहिर करते हैं, अल्लाह जानता है।७७।"

(कु० पा० १ सू० वकर रु० ९)

वक्तव्य—खुदा का यह दावा करना कि वह सब कुछ प्रगट वा अप्रत्यक्ष जानता है स्वतः गलत हो जाता है जव कि वह यह भी पहिले से न जान सका कि उसके चमत्कार भेजने से वजाय डरने के लोग सरकश बनेंगे। यदि पहिले खुदा यह जानता होता तो चमत्कार भेजने की गलती नहीं करता और न बाद को अनुभव होने पर अपनी गलती का उसे चमत्कार भेजना वन्द

करके सुधार करना पड़ता। स्पष्ट है कि कुरान की दोनों बातों में परस्पर विरोध है और खुदा सर्वज्ञ नहीं है।

(२७) खुदा फौज लेकर लड़ने आता था

(एक बार मुसलमानों और गैर मुसलमानों के बीच बड़ी लड़ाई हुई थी जो बदर की लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध है। उसमें मुसलमान हारने लगे थे तो कुरान के अनुसार खुदा अपनी फौज लेकर उनकी ओर से लड़ने आया था। कुरान में लिखा है कि)

"ऐ पैगम्बर! यह वह वक्त था कि तुम्हारा परवर्दिगार फरिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि (लड़ाई के मैदान में) हम तुम्हारे साथ हैं, तुम मुसलमानों को जमाये रखो, हम जल्द काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे, बस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके टुकड़े टुकड़े कर डालो।"

(कु० पा० ९ सू० अनफाल रु० २)

(एक युद्ध में खुदा) यहोवा यहूदा के साथ रहा, इसलिये कि उसने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया, परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे इसलिये वह उन्हें न निकाल सका।" बाइबिल न्यायियों १।१९॥

'याकूब के साथ सारी रात खुदा को कुश्ती हुई कुश्ती बराबर पर छूटी

॥बाइबिल-उत्पत्ति ३२॥

वक्तव्य—तौरात में खुदा एक आदमी से भी कुश्ती में न जीत सका, उसकी ताकत का अन्दाजा हो गया। एक युद्ध में वह यहूदा के साथ विरोधियों से हार भी गया था पर बदर की

लड़ाई में वह बेशुमार फरिश्तों की फौजी मदद के कारण काफिरों से जीत गया था। यदि फरिश्ते उसकी मदद न करते तो निश्चय था कि वहां भी उसकी बुरी हार हो जाती। स्पष्ट है कि कुरानी ख़ुदा फरिश्तों की मदद का युद्ध में मुहताज रहता है। वह सर्व शक्तिमान (कादिरे मुतलक) नहीं है।

(२८) खुदा से कोई सीधी बात नहीं कर सकता है

"और किसी आदमी की ताकत नहीं कि खुदा से बात करे मगर आकाशवाणी से या पर्दे के पीछे से या किसी फरिश्ते को उसके पास भेज दे और वह खुदा के हुक्म से जो मंजूर हो पहुँचा देता है। वह सबके ऊपर हिकमत वाला है।५१।" कु० पा० २५ सू० शूरा रु० ५॥

याकूब ने खुदा से कुश्ती लड़ी और बातें कीं

"और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पफटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा।२४। जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता तब उसकी जाँघ की नस को छूआ तो याकूब की जाँघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही चढ़ गई।२५। तब उसने कहा मुझे जाने दे क्योंकि भोर हुआ चाहता है। याकूब ने कहा जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।२६। और उसने याकूब से पूछा तेरा नाम क्या है। उसने कहा याकूब।२७। उसने कहा तेरा नाम अब याकूब नहीं परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है।२८। याकूब ने कहा, मैं विनती करता हूँ, मुझे अपना नाम बता। उसने कहा तू मेरा नाम क्यों पूछता है? तब उसने उसको वहीं आशीर्वाद दिया।२९। तब याकूब ने यह कहकर उस स्थान का नाम 'पनीएल' रखा कि परमेश्वर को

आमने सामने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया, तौ० उत्पति ३२।३०। यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने सामने करता था जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे।३०। (इस्राइल=ईश्वर से युद्ध करने हारा) (तौरात उत्पत्ति ३२।११)।

वक्तव्य—कुरान के दावे का तौरात से खण्डन स्पष्ट है कि कोई भी आदमी खुदा से सीधी बात नहीं कर सकता है। तौरात के अनुसार बातें भी की गई और रात भर याकूब साहब ने खुदा से डटकर कुश्ती भी लड़ी यहां तक कि दोनों पहलवान बराबर पर छूटे, कोई किसी को न पछाड़ पाया। कुरान की घोषणा है कि वह तौरात की ताईद (समर्थन) करता है पर यह घोषणा गलत सिद्ध हो गई।

(२९) खुदा की बे इन्साफी का नमूना

—सजा कर्मों के बराबर मिलेगी—

"जिसने नेकी की तो उसका दस गुना उसको मिलेगा, और जिसने बदी की तो वह उसके बराबर सजा भुगतेगा और उस पर जुल्म नहीं होगा।१६०।" कु० पा० ८ सू० अनआम रु० २०॥

इसमें पापों का फल कर्मों के बराबर देने की घोषणा की गई है। पर इसके आगे दूसरे स्थान पर लिखा है—

पापों का फल दूना मिलेगा

'जब सबके सब नरक में जमा होंगे तो उनमें से पिछला गिरोह अपने से पहिले गिरोह के हक में बुरी दुआ करेगा कि ऐ हमारे परवर्दिगार ! इन्हीं लोगों ने ह को भटका दिया, तू इनको दूनी सजा

दे। (खुदा) कहेगा कि हर एक को दूनी सजा, मगर तुमको मालूम नहीं।३८।' कु० पा० ८ सू० आराफ रु० ४॥

वक्तव्य—दूसरे के कहने मात्र से खुदा लोगों को अपने ही वायदे को तोड़ कर दूनी सजा देने का हुक्म दे बैठा यह उसका अन्याय है जुल्म है व परस्पर विरुद्ध भी है तथा कुरान की इस घोषणा को भी गलत सावित करती है कि—

खुदा रत्ती भर जुल्म नहीं करता

"खुदा रत्ती भर भी जुल्म नहीं करता है।४०।

(कु० पा० ५ सू० निसा रु० ६)

(३०) खुदा बात नहीं बदलता है

खुदा ने कु० पा० २६ सू० काफ रु० २ आ० २८ में कहा हैं कि मेरे यहाँ बात नहीं बदली जाती है और मैं बन्दों पर जुल्म नहीं करता'।

खुदा ने बात बदल दी

खुदा ने पहिले रोजों में विषय भोग करना नाजायज करार दिया हुआ था। किन्तु जव मियाँ भाई उन दिनों में भी विषय भोग करने से वाज नहीं आये तो खुदा ने झट से अपना पहिला आदेश खारिज कर दिया और कहा—

"मुसलमानो! रोजों की रातों में अपनी वीवियों के पास जाना तुम्हारे लिए जायज कर दिया गया है। वह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो। अल्लाह ने देखा कि तुम (चोरी चोरी) उनके पास जाने से अपना (दीन) नुकसान करते थे तो उसने तुम्हारा कसूर माफ कर दिया और तुम्हारे कसूर से दर गुजर की। पस अब उनके साथ हम बिस्तर हो"'।१८७। कु० पा० २ सू० वकर रु० २३॥

वक्तव्य—स्पष्ट है कि कुरानी खुदा अपनी किसी भी बात का पायबन्द नहीं था। उसे मुसलमानों के हर आराम की यहां तक विषय भोगों के प्रबन्ध की भी चिन्ता रहती थी। उसने अपना पहिला रुकावट वाला हुक्म वापिस लेकर रोजों में भी अय्याशी की खुली छूट देदी। ऐसे हमदर्द खुदा को हजार बार धन्यवाद मुसलमान इसी लिये देते थे कि जब भी वे चाहें और जो भी चाहें खुदा से कानून बनवा लेते थे। वस्तुतः उसके सार कानून गैर मुस्लिमों पर जुल्म ढाने के लिये थे, मुसलमानों के लिये उसका कोई कानून था ही नहीं यह कुरान से स्पष्ट है। विषय भोगों की छूट का कानून बना कर खुदा ने मुसलमानों को खुश कर दिया।

(३१) मुहम्मद पहिला मुसलमान था

"ऐ पैगम्बर ! कह दे कि मुझको तो हुक्म मिला है कि सबसे पहिले मैं मुसलमान बनूं और मुशरिकों में न हूं।१४।

(कु० पा० ७ सू० अनआम रु० २)

"(ऐ पैगम्बर ! इन लोगों से) कहो कि मुझे हुक्म मिला है कि मैं केवल अल्लाह ही की पूजा करूं।११। और मुझे यही आज्ञा मिली है कि मैं सबसे पहिला मुसलमान बनूं।१२। कु० पा० २३ सू० जुमर रु० २॥

मुसलमान मुहम्मद से भी बहुत पहिले से थे

(फिरऔन के जादूगरों ने फिरऔन राजा से कहा) और तू हमसे इसलिये दुश्मनी करता है कि हमने अपने परवर्दिगार के करामात जब हमारे पास पहुंचे मान लिये हैं। ऐ हमारे परवर्दिगार। हमें सब्र दे और हमें मुसलमान ही मान।१२६।' कु० पा० ९ सू० आराफ रु० १४॥

वक्तव्य—कुरान के अनुसार इस्लाम मुहम्मद साहब से फैला था तो फिरऔन के जादूगरों का सैकड़ों वर्ष पहिले अपने को मुसलमान कहना झूठा था। यदि वे सच बोले थे तो मुहम्मद का अपने को पहिला मुसलमान बताना गलत हो जाता है। दोनों में परस्पर विरोध है।

मुहम्मद से पहिले इब्राहीम मुसलमान था

"(इब्राहीम ने कहा) ऐ मेरे परवर्दिगार ! मुझको और मेरी सन्तान को ताकत दे कि मैं नमाज पढ़ता रहूँ और ऐ मेरे परवर्दिगार ! मेरी दुआ कबूल कर।" ४०। कु० पा० १३ सू० इब्राहीम रु० ६ ॥

मूसा से भी पहिले इब्राहीम हुए थे

"ऐ किताब वालो ! इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। तौरात और इञ्जील तो उनके बाद उतरी। क्या तुम नहीं समझते ? ६५।"

(कु० पा० ३ सूरे आल इमरान रुकू ७)

वक्तव्य—कुरान के अनुसार सूरते फातिहा से नमाज पढ़ी जाती है जो कि अरबी जबान में कुरान शरीफ की सर्व प्रथम सूरत है जिसमें सात आयतें हैं। यह मौजूदा कुरान बनने पर बनी है। और उनसे ही नमाज पढ़ने की प्रथा सर्व प्रथम मुहम्मद साहब से प्रारम्भ हुई थी। अतः मुहम्मद साहब सबसे पहिले मुसलमान थे जैसा कि कुरान भी कहता है। तब मुहम्मद साहब से हजारों साल पहिले पैदा हुए यहूदी महापुरुष इब्राहीम को नमाज पढ़ने वाला मुसलमान बताना कुरान का इतिहास के विरुद्ध होने से गलत स्वयं सिद्ध है। यहुदी व इस्लामी समाज तो एक दूसरे के सदैव घोर शत्रु रहे हैं।

यदि इब्राहीम मुसलमान थे नमाज पढ़ते थे तो मुहम्मद साहब पहिले मुसलमान नहीं रहे।"

(३२) बहिश्त दोजख में हमेशा रहेंगे

'जिनकी गर्दनों में तोक होंगे। यही दोजखी हैं और हमेशा दोजख ही में रहेंगे।५। कु० पा० १३ सू० राद रु० १॥

और जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये...उनके लिये बहिश्त के बाग हैं""वहाँ उनके लिये बीबियाँ पाक साफ होंगी और वह उनमें सदैव रहेंगे।२५।' कु० पा० १ सू० बकर रु० ३॥

बहिश्त व दोजख में रहने की एक म्याद होगी

"जब तक आसमान और जमीन (कायम) हैं (वे) हमेशा उसी में रहेंगे।१०७। कु० पारा १२ सू० हूद रुकू ६॥

"फिर तुम लोगों की गिनती के (अनुसार) हजार वर्ष की मुद्दत का एक दिन होगा। उस दिन तमाम इन्तजाम उसके सामने से गुजरेगा।"

॥५। कू० पा० २१ सू० सज्दह रु० १॥

वक्तव्य—कुरान का पहिला दावा कि लोग दोजख व बहिश्त में हमेशा रहेंगे कभी वहां से निकल न सकेंगे स्वयं कुरान की दूसरी बात से गलत साबित हो जाता है। जब कयामत्त के दिन की अवधि ही १ दिन=१००० साल की होगी तो उसके अन्त में जमीन व आसमानों को खुदा समाप्त कर देगा और सभी लोग दोजख व बहिश्त से निकल जावेंगे और हमेशा उसमें रहने की बात खतम हो जावेगी। स्पष्ट है कि कुरान में इस विषय में परस्पर विरोध विद्यमान है। पर कुरान ने यह कहीं नहीं बताया कि दोजख बहिश्त से निकल कर वे कहां जावेंगे। क्योंकि कुरान के अनुसार संसार तो मिट जावेगा और पुनः सृष्टि व उनका पुनर्जन्म इस्लाम व कुरान मानता नहीं है।

कयामत के दिन के बारे में कुरान में स्पष्ट लिखा है कि—'जब

आसमान फट जायगा ।२। और जब जमीन तान दी जावेगी ।३। और जो कुछ उसमें है बाहर डाल देगी और खाली हो जावेगी ।४।

(कु० पा० ३० सू०इन्शिकाक रु० १)

जब जमीन मारे धक्के के चकनाचूर हो जाय ।२३। कु० पा० ३० सू० फजर । और आसमान फटकर दरवाजे दरवाजे हो जायेंगे ।१९।

। पा० ३० सू० नवा ।

"फिर जब सूर फूँका जायगा ।१३। और जमीन और पहाड़ उठाये जायेंगे और एक दम तोड़े जायेंगे ।१४। और आसमान फट जायेगा ।१६

(कु० पा० २९ सू० हाक्का रु० १)

जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं ।१४। कु० पा० १७ सू० अम्बिया रु० ७ ॥

"कयामत के दिन सारी जमीन उसकी मुट्ठी में होगी और सब आसमान उसके दांये हाथ में होंगे ।६७।"

(कु० पा० २४ सू० जुमर रु० ७)

इससे स्पष्ट है कि कयामत के दिन संसार की पूर्ण प्रलय (विनाश) कुरान को मान्य है और उसी दिन बहिश्त व दोजख का भी सर्वनाश हो जावेगा । अतः हमेशा के लिये उनमें रहना बताने वाली आयतें गलत हो जाती हैं ।

(३३) फरिश्ते के द्वारा कुरान आया

कुरान में परस्पर विरुद्ध बातों की भरमार है । पता नहीं उसको बनाने वाले की क्या योग्यता थी । कुरान में लिखा है कि—

"(ऐ पैगम्बर !) कहो कि सच तो यह है कि इस (कुरान) को

तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से पाक रूह जिब्रील लेकर आये हैं ताकि जो लोग ईमान ला चुके हैं खुदा उनको अचल रखे ··· ।"

(कु० पा० १४ सू० नहल रु० १४ आ० १०२)

इससे प्रगट है कि मुहम्मद साहब लोगों से कहा करते थे कि मेरे पास खुदा के पास से जिब्रील फरिश्ता कुरान की आयतें लाता रहता हैं। किन्तु लोग उनकी इस बात पर विश्वास नहीं किया करते थे। कुरान में एक स्थान पर इस विषय में निम्न प्रकार वर्णन आता है। लोग मौहम्मद से कहते थे कि—

कुरान किसी फरिश्ते ने नहीं उतारा

"ऐ शख्स ! तुझ पर कुरान उतरा है, तू पागल है ।६। अगर तू सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता ।७।"

(कु० पा० १४ सूरे हिज्र रु० १)

इस पर मौहम्मद साहब से कोई जवाब नहीं बन पड़ा क्योंकि फरिश्तों के आने जाने की बात सर्वथा मिथ्या थी। फरिश्तों का कोई अस्तित्व ही नहीं होता है। वे तो लोगों को बहकाने के लिए फर्जी मान लिये गये हैं। तो मौहम्मद साहब ने खुदा की ओर से तुरन्त यह आयत उतार दी कि खुदा कहता है कि—

"सो हम फरिश्तों को नहीं उतारा करते मगर फैसले के लिये (कयामत के दिन) और फिर उनको अवकाश भी नहीं मिलेगा ।८।"

(कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० १)

इस आयत में खुदा ने जिब्रील या किसी भी फरिश्ते को भेजने या उसके द्वारा कुरान उतारने आदि की सभी बातों से साफ इन्कार कर दिया है और पहिली अपनी कही हुई बात को भी झूठी साबित कर

दिया है। दोनों में कौन सी बात सच है और कौन भी झूठ है यह निर्णय करना हमारा काम नहीं है। हम तो दोनों ही बातों को गलत मानते हैं। हमारी निगाह में कुरान का खुदा से कोई सम्बन्ध नहीं था। इसे तो ह० मौहम्मद साहब ने स्वयं शायरी करके लिखा था, यही सत्य बात है।

(३४) कयामत के दिन जिन्न व आदमियों से पूछताछ होगी

"फिर हम जिन्नों और आदम के बेटों (आदमियों) दोनों से मुखातिब होकर पूछेंगे कि तुम्हारे पास तुम्हीं में के पैगम्बर नहीं आये कि तुमसे हमारा हुक्म बयान करें और इस रोज के आने से तुमको डरावें।१३०।'

(कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १६)

"फिर उस दिन नियामतों के विषय में तुमसे पूछताछ अवश्य होगी।८। कु०पा० ३० सू० तकासुर ॥

"जब इनकी जबानें और इनके हाथ और इनके पांव इनके कामों की जो कुछ वे करते थे गवाही देंगे।"

(कु० पा० १८ सू० नूर रु० ३ आ० २४)

"काफिर कहेंगे कि हमारे परवर्दिगार! तू हमें दो बार मुर्दा और दो बार जिन्दा कर चुका बस हम अपने पापों का इकरार करते हैं, फिर निकलने की कोई सूरत है।?।११। (खुदा कहेगा नहीं) यह इसलिये कि (दुनियां में) जब अकेले खुदा को पुकारा जाता था तो तुम नहीं मानते थे···।१२। कु० पा० २४ सू० मोमिन रु० २ ॥

उस दिन जिन्नों व आदमियों से पूछताछ न होगी

"तो उस दिन न तो आदमियों से उनके गुनाहों की बावत पूछा जायगा और न जिन्नों से।३९।" कु० पा० २७ सू० रहमान रु० २ ॥

वक्तव्य—स्पष्टतः कयामत के दिन पूछताछ के विषय में ऊपर के प्रमाणों में परस्पर विरोध है।

(३५) खुदा फसाद नहीं चाहता

"और जव लौटकर जावें तो मुल्क में दौड़ता फिरता है कि उसने विद्रोह फैलावे और खेती वारी को और जानों को बरबाद करे। अल्लाह फसाद नहीं चाहता।'२०५। कु० पा० २ सू० बकर रु० २५ ॥

फसाद करने का मुसलमानों को आदेश

"मुसलमानो! अपने आसपास के काफिरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुमसे सख्ती मालूम करें और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो बचते हैं।१२३। कु० पा० ११ सूरे तौबा रुकू १६ ॥

खुदा ने फसाद फैलाने के ही लिये अपराधी पैदा किये

"और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े २ अपराधी पैदा किये ताकि वहाँ फसाद करते रहें। और जो फसाद वे करते हैं अपनी ही जानों के लिए करते हैं और नहीं समझते।१२३।"

(कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १५)

"और इसी तरह हमने हर पैगम्बर के लिये आदमी और जिन्नों में से शैतान पैदा किये जो एक दूसरे को मुलम्मा जैसी झूठी बात धोखा देने को सिखाते हैं। ११२।" कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १४ ॥

वक्तव्य— खुदा का यह दावा कि वह फसाद नहीं चाहता उसी के इस कथन से गलत हो जाता है कि फिसादी बदमाश व शैतानों को खुदा ने केवल इसीलिये पैदा किया है ताकि वे झगड़ा फसाद ही करते रहें। तो जब फसाद कराना खुदा का स्पष्ट उद्देश्य सिद्ध है तो खुदा अमन पसन्द नहीं माना जा सकता। जिसे खुदा ने झगड़े के लिये ही बनाया है वह तो झगड़े करेगा ही। यदि वह बेचारा झगड़ा फसाद मार काट चोरी डकैती नहीं करेगा तो खुदा उसे मार लगावेगा और कहेगा कि जब तुझे फसाद करने के लिये ही मैंने पैदा किया है तो तू क्यों नहीं करता।

(३६) कयामत के दिन लोग अन्धे गूंगे व बहरे उठेंगे

"कयामत के दिन हम उन (गुमराह) लोगों को उनके मुंह के बल अन्धे गूंगे और बहरे करके उठावेंगे··· ।"

(कु० पा० १५ सू० बनी इस्राएल रु० ११ आ० ९७)

लोग देखते व सुनते उठेंगे

(कयामत के दिन) फिर दुबारा सूर फूंका जायगा। फिर वे खड़े हो जायेंगे और देखने लगेंगे।"

(कु० पा० २४ सूरे जुमर रु० ७ आ० ६८)

लोग बातें भी करते होंगे

"और यह लोग दोजख में चिल्लाते होंगे कि हमारे परवर्दिगार

हमको (यहाँ से) निकाल (दुनियाँ में ले चल) फिर हम जैसे कर्म करते थे वैसे नहीं करेंगे (बल्कि) सुकर्म करेंगे।"

(कु० पा० २३ सू० फातिर रु० ४ आ० ३७)

वक्तव्य—कुरानी खुदा का यह दावा कि लोग गूँगे बहरे और अन्धे उठेंगे स्वयं कुरान से ही गलत सावित हो गया जिसमें वताया है कि लोग देखते होंगे, खुदा के दूसरी बार फूँके जाने वाले सूर की आवाज भी सुनेंगे तथा चिल्ला कर खुदा से बातें भी करेंगे। स्पष्ट है कि कुरान में परस्पर विरुद्ध बातें होने का दोष विद्यमान है।

(३७) खुदा काफिरों को उपदेश नहीं दिया करता

'और अल्लाह काफिरों को उपदेश नहीं दिया करता।'

(कु० पा० १० सू० तौवा रु० ५ आ० ३७)

खुदा काफिरों में पैगम्बर भेजता था

"काफिरों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे फिर तुम हमारे मजहब में आ जाओ।१३।"

कु० पा० १३ सू० इब्राहीम रु० ३॥

वक्तव्य—खुदा काफिरों को उपदेश नहीं देना चाहता तो फिर उनमें पैगम्बर क्यों भेजता है? पैगम्बर भेजना ही बताता है कि खुदा उन्हें अपनी ओर से उपदेश देना चाहता है। स्पष्ट है कि कुरान में उपरोक्त दोनों बातों में परस्पर विरोध है।

(३८) शराब की प्रशंसा

"और खजूर और अंगूर के फलों से तुम शराब और अच्छी रोजी बनाते हो। जो लोग बुद्धि रखते हैं उनके लिये इन चीजों में निशानी है।"६७। कु० पा० १४ सू० नहल रु० ९ ॥

शराब की निन्दा

ऐ ईमान वालो ! जब तुम नशे में हो नमाज न पढ़ा करो। जब तक न समझो कि क्या कहते हो ।४३। कु० पा० ५ सू० निसा रु० ७॥

मुसलमानो ! शराब जुआ-बुत और पांसे गन्दे काम हैं। उनसे बचो शायद इससे तुम्हारा भला हो ।९०।

(कु० पा० ७ सू० मायदा रु० १२)

वक्तव्य—शराब के समर्थन व निन्दा के बारे में कुरान में विरोध स्पष्ट है।

चौथा अध्याय

कुरान को मान्य पुरानी खुदाई किताबों (तौरात-जबूर और इञ्जील) में द्रष्टान्त के लिए चन्द परस्पर विरोधी स्थल

तौरात-इञ्जील व जबूर नाम के पुराने इलहामों में परस्पर विरोधी स्थल

(१) खुदा अनेक हैं

"परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है, वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है।" भजन संहिता ८२।१ ॥

"तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया" ॥उत्पत्ति १।२७ ॥

"फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हममें से एक के समान हो गया।" उत्पत्ति ४।२२।

खुदा एक है

"एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं।" १ कुरैन्थियो ८।४।

हे इस्राएल सुन ! यहोवा हमारा परमेश्वर है; यहोवा एक ही है।
(व्यवस्था विवरण ६।४)

(२) खुदा झूठ नहीं बोल सकता है

"खुदा मनुष्य नहीं कि झूठ वोले और न वह आदमी है जो अपनी इच्छा वदले।" गिनती २३।१९।

"परमेश्वर का झूठा ठहराना अनहोना है" इब्रानियो ६।१८।

खुदा झूठा धोखेबाज भी है

"हाय प्रभु यहोवा, तूने तो यह कहकर कि तुमको शांति मिलेगी निश्चय अपनी इस प्रजा को और यरुशलम को भी वड़ा धोखा दिया है।" यिर्मियाह ४।१०।

"और इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा। ताकि वे झूठ को प्रतीत करे।" थिस्सूलनीकियों २।११।

यहोवा ने तेरे इन सव भविष्य वक्ताओं के मुँह में एक झूठ वोलने वाली आत्मा पैंठाई हैं और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है।
(१ राजा २२।२३)

(३) खुदा किसी को नहीं आजमाता है

"जव किसी की परीक्षा हो तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है, क्योंकि न तो वुरी वातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।"
(याकूव की पत्री १।१३)

खुदा इन्सान को आजमाता है

"इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने इब्राहीम से यह कह कर उसकी परीक्षा की कि हे इब्राहीम ! उसने कहा कि देख मैं यहाँ हूँ ।" उत्पत्ति २२।१ ।

(४) खुदा शान्ति प्रिय है

"क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं परन्तु शाँति का कर्ता है ।"
(१ कुरैन्थियों ३३)

खुदा लड़ाकू है

'यहोवा योद्धा है ।' निर्गमन १५।३ ।

"प्रभु यहोवा यों कहता है, देख मैं तेरे विरुद्ध हूँ और अपनी तलवार म्यान में से खींचकर तुझमें से धर्मी और अधर्मी दोनों का नाश करूँगा ।" यहेजकेल २१।५ ।

(५) खुदा पछताता नहीं है

"मुझे यहोवा ही ने यह कहा है और वह हो जायगा । मैं ऐसा ही करूँगा···न तुझ पर तरस खाऊँगा न पछताऊँगा ।"
(यहेजकेल २४।१४)

खुदा पछताता था

"और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य बनाने से पछताया और वह मन में अति दुखी हुआ ।" उत्पत्ति ६।६।

(६) खुदा सर्व शक्तिमान है

(यहोवा ने कहा) मैं तो सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ। क्या मेरे लिए कोई भी काम कठिन है।" यिर्मियाह ३२।२६-२७।

खुदा सर्वशक्तिमान नहीं है

"और यहोवा यहूदा के साथ रहा। इसलिये उसने पहाड़ी देश के निवासियो को निकाल दिया, परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे, इसलिये वह इन्हें न निकाल सका।" न्यायियों १।१६।

(७) खुदा कभी थकता व आराम नहीं करता है

"क्या तुम नहीं जानते! क्या तुमने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सिरजने हारा है, वह न थकता न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है।" याशायाह ४०।२८।

खुदा थकता व आराम करता है

"छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठंडा किया।" निर्गमन ३१।१७।

(८) यीशु का मौत से न डरने का उपदेश

"परन्तु मैं तुमसे जो मेरे मित्र हो कहता हूँ कि जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते, उनसे मत डरो।" लूका १२।४।

यीशु मौत से डरता था

यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का

यत्न कर रहे थे, इसलिये वह यहूदियो में फिरना न चाहता था ।"

(यूहन्ना ७।१)

(९) पत्नी के त्याग की आज्ञा

"यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को व्याह ले और उसके वाद उसमें कुछ लज्जा की वात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। घर से निकलने के वाद वह दूसरे पुरुष की हो सकती है ।"

(व्यवस्था विवरण २४।१)

पत्नी के त्याग का विरोध

"परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवाय किसी और कारण से छोड़ दे तो वह उससे व्यभिचार करवाता है और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे वह व्यभिचार करता है ।" मत्ती ५।३२।

(१०) क्रोध करने का आदेश

क्रोध तो करो, पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। इफिसियों ४।२६।

क्रोध की निन्दा

"क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना और झट क्रोध करने वाले के संग न चलना ।" नीति वचन २२।२४।

(११) यीशु की सहिष्णुता की शिक्षा

(ईसा ने कहा) "परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।" मत्ती ५।३९।

यीशु की असहिष्णुता

(ईसा ने कहा) "परन्तु मेरे उन वैरियों को जो नहीं चाहते कि मैं इन पर राज्य करूँ उनको यहाँ लाकर मेरे सामने घात करो।"

लूका १९।२७॥

(१२) व्यभिचार की आज्ञा

"परन्तु जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुँह न देखा हो उन सभी को तुम अपने लिये जीवित रखो।" गिनती ३१।१८॥

व्यभिचार का निषेध

"तू व्यभिचार न करना" निर्गमन २०।१४॥

(१३) भाई बहन की शादी जायज थी

"उत्पत्ति ५ में लिखा है कि खुदा ने आदम और हव्वा को पैदा किया फिर उन दौनों के संयोग से बहुत से लड़के लड़कियाँ पैदा हुईं। उन्हीं भाई बहिनों के व्यभिचार या शादी से संसार में मनुष्य फैल गये।

भाई बहिन की शादी नाजायज थी

"और यदि कोई अपनी बहिन को चाहे उसकी सगी बहिन हो चाहे

सौतेली उसका नग्न तन देखे और उसकी बहिन भी उसका नग्न तन देखे तो यह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जाति भाईयों की आँख के सामने नाश किये जाँय।" लैव्यवस्था २०।१७ ॥

"शापित हो वह जो अपनी बहिन चाहे सगी हो चाहे सौतेली, उससे कुकर्म करे।" व्यवस्था विवरण २७।२२॥
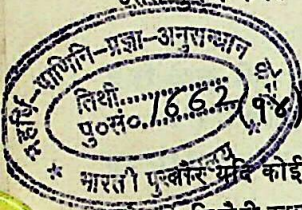
(१४) भाभी से विवाह का निषेध

यदि कोई अपनी भौजी वा भयाहू को अपनी पत्नी बनाये तो इसे घिनौनी काम जानना...इस कारण वे दोनों निर्वंश रहेंगे।"
लै व्यवस्था २०।२१॥

भाभी से विहाह जायज

"जब कई भाई संग रहते हों और उनमें से एक निपुत्र मर जाये तो उसकी स्त्री का ब्याह परगोत्री से न किया जाये। उसके पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी पत्नी करले...।"
(व्यवस्था विवरण २५।५)

(१५) दाऊद ने ७०० रथियों को मारा

परन्तु अरामी इस्राएलियों से भागे और दाऊद ने अरामियों में से सात सौ रथियां और चालीस हजार सवारों को मार डाला।"
२ शैमुएल १०।१८॥

दाऊद ने ७००० रथियों को मारा

"परन्तु अरामी इस्राएलियों से भागे और दाऊद ने उनमें से सात-

हजार रथियों और चालीस हजार प्यादों को मार डाला।"

१ इतिहास १६।१८।

(१६) मिकेल निःसन्तान मरी थी

"और शाऊल की वेटी मिकेल के मरने के दिन तक उसके कोई सन्तान न हुई।" २ शैमुएल ६।२३।

मिकेल के ५ बेटे थे

"और शाऊल की वेटी मीकल के पाँचों बेटे जो वह महोल वासी वर्जिल्लै के पुत्र अद्रीएल कीओ से थे, उनको राजा ने पकड़वा कर गोविनियो के हाथ सौंप दिया।" २ शैमुएल २१।८-६।।

(१७) खुदा और ईसा एक हैं (एक समान हैं)

"मैं और पिता एक हैं" यूहन्ना १०।३०

खुदा और ईसा प्रथक प्रथक हैं (एक समान थें)

"पिता मुझ से वड़ा हैं" यूहन्ना १४।२८।।

(१८) ईसा सर्वशक्तिमान था

"यीशु ने उनके पास आकर कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" मत्ती २८।१८।।

ईशा सर्व शक्तिमान नहीं था

"और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका, केवल थोड़े से बीमारों पर हाथ रख कर उन्हें चंगा किया।" मारकुस ६।५।।

(१९) मनुष्य केवल विश्वास से धर्मी ठहरायेगा।

"तौ भी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हमने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरे, इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई मनुष्य धर्मी नहीं ठहरेगा।" गलतियों २।१६॥

केवल विश्वास से नहीं बल्कि कर्मों से धर्मी ठहरेगा

"सो तुमने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है।" याकूब २।२४॥

(२०) हर आदमी पापी है

"निःसंदेह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिससे पाप न हुआ हो।" सभोपदेशक ७।२०॥

"निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं हैं।" (१ राजा ८।४६)

"सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

रोमियों ३।२०॥

केवल ईसाई ही निष्पाप हैं

"जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता।"

१ यूहन्ना ३।९॥

(२१) मुर्दे कब्र से उठेंगे

"और यह क्षण भर में पलक मारते ही, पिछली तुरही फूंकते ही

होगा। क्यों कि तुरही फूँकी जायगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाये जायेंगे और हम बदल जायेंगे।" १ कुरैन्थियो ५२॥

"इससे अचम्भा मत करो क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।" यूहन्ना २८॥

मुर्दे कब्र से नहीं उठेंगे

"वे मर गये हैं फिर कभी जीवित नहीं होंगे; उनको मरे बहुत दिन हुए, वे फिर नहीं उठने के।" याशायाह २६।१४॥

(२२) सभी को कर्मों का फल यहीं मिलेगा

"देख धर्मी को पृथ्वी पर फल मिलेगा, तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा।" नीति वचन ११।३१॥

कर्मों का फल कयामत के बाद दूसरी दुनियां में मिलेगा

"फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा और पुस्तकें खोली गईं और फिर एक पुस्तक खोली गई अर्थात् जीवन की पुस्तक और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था उनके कर्मों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।" प्रकाशित वाक्य २०।१२॥

(२३) जमीन नष्ट की जायगी

"परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जायगा…और पृथ्वी और उस पर के काम जल जायेंगे।" २ पतरस ३।१०॥

"हे प्रभु आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है।१०। वे तो नाश हो जायेंगे परन्तु तू बना रहेगा।११। इब्रानियों १॥

जमीन कभी नष्ट न होगी

"तूने पृथ्वी को उसकी नीव पर स्थिर किया है ताकि वह कभी न डगमगाये" भजन संहिता १०४।५।।

(२४) यश की प्रशंसा

"अच्छा नाम अनमोल दिन से और मृत्यु का दिन जन्म दिन से भी बहतर है।" सभोपदेशक ७।१।।

"वड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है।"

नीति वचन २२।१।।

यश की निन्दा

"हाय तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें।" लूका ६।२६।।

वक्तव्य—जिन पुस्तकों में परस्पर विरुद्ध बातों की भर मार हो उन्हें किसी बुद्धिमान व्यक्ति की रचना अथवा खुदाई किताब नहीं माना जा सकता है। उन्हें धर्म पुस्तक के रूप में अन्ध विश्वास पूर्वक मान्यता देना समझदार लोगों का काम नहीं है। अल्पज्ञों की रचना होने से वे लोगों को गुमराह भी कर सकती हैं। खुदा स्वयं निर्दोष एवं सर्वज्ञ सत्ता है। अतः उसकी रचना वा ज्ञान भी सर्वथा निर्दोष-पवित्र-सत्य विद्याओं का भण्डार-पक्षपातादि दोषों से रहित सृष्टि विज्ञान के अनुकूल तथा सत्य होना चाहिए। ऐसे गुण तौरात-जबूर और इञ्जील में देखने को नहीं मिलते हैं।

पाँचवाँ अध्याय

●

कुरान में तौरात-जबूर और इञ्जील (बाइबिल) के विरुद्ध चन्द स्थल

●

खुदा का कुरान में दावा है कि

ऐ पैगम्वर ! तुझसे वही बात कही जाती है जो तुझसे पहिले पैगम्वरों से कही जा चुकी है।४३।

(कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५)

"यह किताब (कुरान) इस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बनालावे। बल्कि जो (किताबें) इससे पहिले की हैं उनकी तस्दीक है और उन्हीं की तफसील है। और इसमें सन्देह नहीं कि यह खुदा की ही उतारी हुई हैं।" ३७॥

(कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० २)

वक्तव्य–कुरान में दावा किया गया है कि इसमें जो कुछ भी लिखा गया है वह पुरानी किताबों तौरात-इञ्जील व जबूर की ही तफसील (व्याख्या) है और यह इनकी बातों का समर्थन करता है। कुरान पढ़ने पर हम देखते हैं कि यह दावा सत्य नहीं

है। कुरान में सैकड़ों स्थल ऐसे हैं जिनमें तौरात-इञ्जील और जबूर की बातों व्यवस्थाओं व आदर्शों तथा ऐतिहासिक घटनाओं का कुरान ने खुलकर विरोध वा खण्डन किया है। हम आगे इस प्रकार के कुछ स्थल तुलना करते हुए उपस्थित करते हैं। हमें बताया जावे कि इस अध्याय में कुरान में दिये ये स्थल ऊपर की कुरान की सू० हामीम सज्दह रु० ५ आ० ४३ में दिये खुदा के दावे का विरोध क्यों करते हैं?

जब चारों खुदाई मानी जाने वाली किताबों में परस्पर में विरोध है तो वे खुदाई हो ही नहीं सकती हैं। वे विभिन्न लेखकों की स्वतन्त्र रचनायें मानी जावेंगी खुदाई नहीं। एक ही खुदा की किताबों में परस्पर विरोध नहीं हो सकता है।

कुरान में तौरात जबूर इञ्जील व इतिहास विरुद्ध चन्द स्थल

(१) कुरान में 'ईसा मसीह' नाम रखने का खुदाई आदेश

"जब फरिश्तों ने कहा कि ऐ मरियम ! खुदा तुमको अपने उस हुक्म की खुश खबरी देता है। (तुम्हारे पुत्र होगा) उसका नाम होगा ईसा मसीह मरियम का बेटा—लोक और परलोक (दोनों) में इज्जत वाला और खुदा के नजदीकी बन्दों में से होगा।" ४५॥

(कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० ५)

इञ्जील में 'यीशु व इम्मानुएल' नाम रखने का आदेश

"जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्ग दूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, हे दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है।२१। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम 'यीशु' रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।" २९ मत्ती । १॥

(फरिश्ते ने कहा) "और देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, तू उसका नाम यीशु रखना।" ३२। लूका १ ॥

"सुनो एक कुमारी गर्भवती होगी, और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।" १५ याशायाह ७॥

जब आठ दिन पूरे हुए और खतने का समय आया तो उसका नाम यीशु रखा गया। लूका २।२१॥

वक्तव्य —"ईसा के विषय में उनके मत की मान्य पुस्तक वाइबिल या इञ्जील ही मान्य हो सकती है जिसकी रचना कुरान बनने से कई सौ वर्ष पूर्व की गई थी। वाइबिल ने याशायाह की भविष्य वाणी में मरियम की ओर इशारा करते हुए उसके गर्भ से उत्पन्न बालक का नाम इम्मानुएल रखे जाने की भविष्य वाणी थी तथा ईशा की पैदायश के पूर्व स्वर्ग दूतों ने उसका नाम 'यीशु' रखने का आदेश दिया था और वही नाम रखा भी गया था। बाद को यीशु को ईशा मसीह भी कहा जाने लगा था। ईसा मसीह बोलचाल में व्यवहार का नाम था, वास्तविक नाम 'यीशु' ही था। क़ुरान के बनाने वाले ने उसके वास्तविक नाम 'यीशु' के स्थान पर 'ईसा मसीह' नाम रखने का खुदाई आदेश वता कर धोखा खाया है जो कि इतिहास के विरुद्ध है और गलत भी है।

(२) खुदा ईसा को इञ्जील सिखा देगा

(इतिहास विरुद्ध है)

"और खुदा ईसा को आसमान की किताब और अक्ल की बातें और तौरात और इञ्जील सिखा देगा।" ४८ रु० ५॥

"ऐ किताब वालो ! इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो तौरात और इञ्जील तो उनके बाद उतरी, क्या तुम नहीं समझते ? ६५।

(कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० ७)

"....उन (ईसा) को हमने इञ्जील दी... ।" ४६।

(कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ६)

वक्तव्य—ईसा की मृत्यु के लगभग ३०० वर्ष के बाद अनेक

उस समय में प्रचिलित ईसा के उपदेशों के बारे में पुस्तकों का संग्रह करके इञ्जील की रचना की गई और उसे पुराना धर्म नियम तौरात व जबूर में जोड़ कर बाइबिल को पूर्ण बनाया गया था। 'इञ्जील' अर्थात् नया धर्म नियम नाम के खन्ड में विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गईं २७ पुस्तकों का संग्रह उन्हीं के नाम से दिया गया है। तो जब इञ्जील नाम की कोई एक पुस्तक कभी भी ईसा की मृत्यु तक भी नहीं बनी थी तो कुरान में खुदा का ईसा को इञ्जील देने व ईसा की अपने को खुदा से इञ्जील मिलने की बात कहना दोनों ही ऐतिहासिक एवं बाइबिल की अन्तः साक्षी के सामने सर्वथा बे सर पैर की एवं मिथ्या स्वयं सिद्ध हैं।

इञ्जील नाम की पुस्तक का संकलन ईसा की तीसरी शताब्दी में नाइस नगर में महाराजा कान्सैन्टाइन के सभापतित्व में ३२५ ईसवी में किया गया था इसी प्रकार पुराना धर्म नियम ईसा से ४०० वर्ष पूर्व संकलित किया गया था।

(३) ईसा ने मिट्टी की चिड़िया बनाके जिन्दा की

(ईसा से खुदा ने कहा) और जब तुम हमारे हुक्म से चिड़िया की सूरत मिट्टी से बनाते फिर उसमें फूँक मार देते तो वह हमारे हुक्म से पक्षी बन जाता...।" कु० पा० ७ सू० मायदा रु० १५ आ० ११०॥

वक्तव्य—सम्पूर्ण इञ्जील या बाइबिल में एक भी ऐसा स्थल नहीं है जिसमें ईसा द्वारा मिट्टी की चिड़िया बनाकर उसमें रूह फूँक कर उसे जिन्दा कर देने की बात कही गई हो। ईसा

के बारे में उनकी मृत्यु के लगभग ६०० वर्ष बाद कुरान की उपरोक्त कल्पना निराधार है और खेद की बात भी है।

(४) आदम स्वर्ग में पैदा किया गया था

"और (हमने आदम से कहा कि) ऐ आदम तुम और तुम्हारी स्त्री जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो खाओ, मगर इस दरख्त के पास न फटकना नहीं तो तुम पापी होगे।१६। कहा कि (तुम मियाँ बीबी और शैतान तीनों जन्नत से) नीचे उतर जाओ, तुम में एक एक का दुश्मन है और तुमको एक खास वक्त तक जमीन पर रहना होगा और एक वक्त तक बर्तना होगा।२४। कु० सू० आराफ रु० २॥

आदम जमीन पर पैदा किया गया

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया और आदम जीवता प्राणी बन गया।७। और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक वाटिका लगाई और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था रख दिया।८। तौरात उत्पत्ति २॥

कुरान में तौरात का विरोध नहीं

"यह कुरान (किताब) इस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई उसे अपनी तरफ से बना लावे। बल्कि जो (किताबें) इसके पहिले की हैं उनकी तस्दीक करती हैं और उन्हीं की तफसील है। इसमें सन्देह नहीं कि यह खुदा की ही उतारी हुई है।३७॥

कु० पा० ११ सूरे यूनिस रु० ५॥

वक्तव्य—क़ुरान कहता है कि आदम उसकी बीबी और शैतान तीनों का जन्म जन्नत (स्वर्ग) में खुदा के रहने की जगह पर हुआ था। साथ ही कुरान का दावा है कि जो कुछ भी कुरान में लिखा है वह उससे पहिले उतरी खुदाई किताब तोरात के अनुकूल व उसी की तफसील (व्याख्या) मात्र है, उसके विरुद्ध क़ुरान में कुछ भी नहीं लिखा है। किन्तु ऊपर स्पष्ट है कि तौरात (बाइविल में आदम को इसी जमीन पर बनाया गया और अदन के बाग में उसे रहने को रखा गया। वह स्वर्ग में पैदा नहीं हुआ था। स्पष्ट है कि क़ुरान में बाइविल (तौरात) की बात का विरोध है और खुदा की दोनों में से एक बात अवश्य झूठी साबित है।

(५) ईसा और मरियम की कथा क़ुरान में इञ्जील के विरुद्ध

"(क्वारी मरियम के प्रसव के समय का हाल) फिर उसको एक खजूर के पेड़ की जड़ के पास जनने का दर्द उठा।२२। (मरियम ने कहा) अगर मैं इससे पहिले मर चुकी होती और भूली बिसरी हो गई होती।२३। फिर उसको उसके नीचे से आवाज आई कि उदास न हो, तेरे परवर्दिगार ने तेरे नीचे एक चश्मा बहा दिया है ।२४। और खजूर की डालों को अपनी तरफ हिलाओ, उससे तेरे लिये पक्के खजूर गिरेंगे ।२५। फिर खाओ और (चश्मे का पानी) पियो और (बेटे को देखकर) आंखें ठण्डी करो। फिर कोई आदमी दिखलाई पड़े और वह तुझसे पूछे तो (इशारे से) कह देना कि मैंने दयालु (रहमान) का रोजा रखा है सो मैं आज किसी आदमी से न बोलूंगी ।२६। फिर मरियम लड़के

को गोद में लिये अपनी जाति के लोगों के पास आई। वह (देखकर) कहने लगे कि ऐ मरियम ! यह तूफान कहाँ से लाई ? ।२७। हारूं की वहिन ! न तो तेरा बाप ही वदकार था और न तेरी माता ही वद चलन थी ।२८। तो मरियम ने वच्चे की तरफ इशारा किया (कि जो कुछ पूछना हो इससे पूछ लो)। वह कहने लगे कि हम गोद के वच्चे से कैसे वात करें ।२९। इस पर वच्चा (ईसा) वोला मैं अल्लाह का सेवक हूँ उसने मुझको किताव (इञ्जील) दी और मुझको पैगम्वर वनाया ।३०। और कहीं भी रहूँ मुझको वरकत दी और मुझको आज्ञा दी कि जव तक जिन्दा रहूँ नमाज पढ़ूँ और जकात दूँ ।३१।।

(कु० पा० १६ सू० मरियम रु० २)

वक्तव्य—कुरान में वर्णित ऊपर की कथा बाइविल के इञ्जील भाग के सर्वथा विपरीत एवं कपोल कल्पित है। इञ्जील में वर्णित विवरण अधिक विश्वासनीय है जो कि निम्न प्रकार है—

सो यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञानुसार अपनी पत्नी (मरियम) को अपने यहाँ ले आया ।२४। और जव तक वह पुत्र न जनी तव तक वह उसके पास न गया और उसने उसका नाम यीशु रखा ।१।२५। मत्ती ।।

"वह (यूसुफ) रात को ही उठकर वालक और उसकी माता को लेकर मिश्र को चल दिया और हिरोदेस के मरने तक वहीं रहा।

मत्ती २।१४,१५।।

"उन दिनों औगुस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं ।१। सो यूसुफ भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया

मे दाऊद के नगर बैतलहम को गया।४। कि अपनी मंगेतर के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए।५। उनके वहाँ रहते हुए उसके जनने को दिन पूरे हुए।६। और वह अपना पहिलौंठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेट कर चरनी में रखा क्योंकि उनके लिये सराय में जगह न थी।७। लूका २॥

वक्तव्य—-बाइबिल के अनुसार मरियम का पति प्रसव के समय उसके पास था और वह एक सराय में थी। बालक को चरनी में रखकर वे दोनों उसी दिन मिस्रदेश को इसलिये चले गये कि कहीं पता लगने पर हिरोदास बादशाह उनके उस नवजात शिशु की हत्या न करा दे। वह न तो किसी खजूर के पेड़ के नीचे जंगल में अकेली बैठी थी और न नवजात बच्चे से किसी ने बातें की थीं जैसा कि कुरान में लिखा है। कोई भी व्यक्ति सोच सकता है कि पैदा होते ही बच्चा बातें कर ही नहीं सकता है न ईसा ने की थी। एक बात और भी है जो कुरान की बात को गलत साबित कर देती है। कुरान के अनुसार ईसा ने खुदा से इञ्जील हासिल करने की बात जन्मते ही कही थी जब कि इञ्जील नाम की पुस्तक का संकलन ईसा की मृत्यु के ३२५ साल बाद विभिन्न लेखकों की २७ पुस्तकों को एकत्र छाप कर किया गया था। ईसा ने कोई इञ्जील न तो बनाई न कही थी। अतः कुरान की बात कोई निराधार कल्पना है।

कुरान के अनुसार शिशु ईशा ने खुदा द्वारा नमाज जीवन भर पढ़ने का आदेश उसे देने की बात भी कही है जो कि खुली गपाष्टक है। क्योंकि कुरान शरीफ की रचना ईसा के लगभग ६०० वर्ष के बाद मुहम्मद साहब द्वारा की गई थी। उसमें पहिले सिपारे की पहिली सूरते फातिहा की सात आयतें उसी

समय अरबी भाषा में लिखी गई थीं जो कि नमाज में पढ़ी जाती हैं। ईसा ने ६०० साल पहिले उन्हें कैसे सीखा था यह नहीं बताया गया। नमाज की प्रथा इन्हीं सात आयतों पर मुहम्मद साहब ने चालू की थी जो उनके शिष्य मुसलमान पढ़ते हैं। ईसा यहूदी था उसकी भाषा अरबी न होकर हिब्रू भाषा थी जो कि यहूदियों की भाषा थी व है।

कुरान ने दावा किया है कि वह इञ्जील व तौरात को तस्दीक करता है व उन्हीं की तफसील (व्याख्या) है। उसका यह दावा भी गलत हो जाता है क्योंकि उसमें इञ्जील का विरोध विद्यमान है। कुरान पा० १६ सू० ताहा रु० १ आ० १४ में इसी प्रकार मूसा से भी खुदा ने नमाज पढ़ने का आदेश दिया है। वह भी ईसा के नमाज पढ़ने के ही समान मिथ्या है। मूसा भी यहूदी था और ईसा से बहुत पहिले पैदा हुआ था। इस प्रकार अनेक प्रमाणों से स्पष्ट है कि कुरान में इञ्जील का स्पष्ट विरोध विद्यमान है। इस दशा में कुरान को खुदाई किताब नहीं माना जा सकता है क्योंकि खुदाई कलाम में विरोध नहीं हो सकता है।

(६) ईसा के बाद 'अहमद' आवेगा

और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इस्राएल के बेटो में तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा आया हूँ···और एक पैगम्बर की खुशखबरी देता हूँ जो मेरे बाद आयेगा उसका नाम 'अहमद' होगा ···?" ६॥ कु० पा० २८ सू० सफ्फ रु० १॥

वक्तव्य—सम्पूर्ण इञ्जील में यीशु ने कोई भी भविष्यवाणी

किसी भी दूसरे पैगम्बर या 'अहमद' नाम के आदमी के अपने बाद आने की नहीं की है। कुरान की उपरोक्त घोषणा ईसा के नाम से करना सर्वथा मिथ्या है। मत्ती २।११ में यूहन्ना ने अवश्य एक भविष्यवाणी की थी कि—

"मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझसे शक्तिशाली हैं; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं; वह तुम्हें पवित्रात्मा और आग से बपतिस्मा देगा।" ११॥

सम्भव है यह इशारा यूहन्ना का ईसा के बारे में हो जिसने स्वयं भी यूहन्ना से ही बपतिस्मा लिया था किन्तु ईसा ने कभी किसी को 'आग' अर्थात हवन यज्ञ करा के दीक्षा नहीं दी थी। यज्ञ के द्वारा दीक्षा तो पिछली उन्नीसवीं सदी में आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने विधर्मी लोगों को दी व देने की विधि जारी की थी। सम्भवत: यूहन्ना का इशारा उन्हीं की ओर होगा किन्तु 'अहमद' नाम के किसी व्यक्ति का उल्लेख इञ्जील में नहीं है स्पष्ट है कि कुरान ने ईसा के नाम से गलत बात का प्रचार किया है इञ्जील का विरोध किया है।

(७) ईसा खुदा का इकलौता बेटा था

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास रखे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।" १६॥ पिता पुत्र से प्रेम रखता है उसने सर्व वस्तुयें उसके हाथ में दे दी हैं।३५। जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है परन्तु जो पुत्र को नहीं मानता वह

जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।"
यूहन्ना ३ ॥

"और देखो यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" इञ्जील। मती ३।१७ ॥

ईसा खुदा का बेटा नहीं था

"मरियम के बेटे ईसा मसीह बस अल्लाह के पैगम्बर हैं और खुदा का हुक्म जो उसने मरियम की तरफ कहला भेजा था और आत्मा खास अल्लाह की तरफ से आई। पस अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और तीन खुदा (खुदा-ईसा और पवित्रात्मा) न कहो। मान जाओ तुम्हारा भला होगा। अल्लाह एक है, वह इस लायक नहीं कि उसके कोई सन्तान हो ।" १७१।

(कु० पा० ६ सू० निसा रु० २३)

"जो लोग कहते हैं कि खुदा तो यही मरियम के बेटे मसीह हैं यह लोग काफिर हो गये हैं...।" ७२॥ कु० पा० ६ सू० मायदा रु० १०। तथा रु० ३ आ० १७ ॥

"और कोई कोई कहते हैं कि खुदा बेटा रखता है।८८। और इस लिये कि खुदा के लायक नहीं कि बेटा बनावे।" ९२॥

(कु० पा० १६ सू० मरियम रु० ६)

"अल्लाह ने किसी को बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई और खुदा है अगर ऐसा होता तो हर खुदा अपने बनाये को लिये फिरता और एक दूसरे पर चढ़ जाता।" ९१॥

(कु० पा० १८ सू० मोमिनून रु० ५)

"वह (खुदा) कोई बेटा नहीं रखता" कु० पा० १८ सू० फुर्कान रु० १ आ० २ ॥

"न कोई उस (अल्लाह) से पैदा हुआ न वह क़िसी से पैदा हुआ।" ३॥ कु० पा० ३० सू० इखलास।

वक्तव्य—इञ्जील को क़ुरान ने खुदाई किताव (इलहाम) क़ुरान में अनेक स्थानों पर माना है। इसका अर्थ है कि वह पूर्णतः सत्य है। उसी के अनुसार ईसाई लोग ईसा को खुदा का इकलौता बेटा मानते हैं। क़ुरान भी अपने को इञ्जील की तफ़सील व उसकी तस्दीक करने वाला घोषित करता है किन्तु ईसा के खुदा को खुदा का बेटा वह नही मानता है, इसका खण्डन बार २ करता है। यही नहीं बल्कि वह खुदा का ईसा को बेटा मानने वाले ईसाईयों को काफिर घोषित करके उनको गालियां भी देता है। स्पष्ट है क़ुरान इञ्जील का विरोध करता है उसकी तस्दीक नहीं करता है। अथवा यह माना जावेगा कि खुदाई दोनों किताबों में से कोई एक झूठा है।

(८) ईसा का गर्भ (क़ुरान से)

"(खुदा ने कहा) हमने अपनी रूह को उस (मरियम) की तरफ भेजा। फिर हमारा आत्मा पूरा मनुष्य बनकर उनके सामने आई।१७। मरियम कहने लगी अगर तुम परहेजगार हो तो मैं खुदा की शरण चाहती हूँ।१८। वोले मैं तेरे परवर्दिगार का भेजा (फरिश्ता) हूँ। इसलिये (आया) हूँ कि तुमको एक पाक लड़का दे जाऊं।१९। वह वोली कि मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है जब कि मुझे किसी मर्द ने नहीं छुआ और मैं कभी वदकार नहीं रही।२०। (फरिश्ते ने) कहा ऐसा ही तुम्हारा परवर्दिगार कहता है यह मामला मुझ पर आसान है और लोगों के लिए हम उसको एक निशानी और दया अपनी तरफ से किया

चाहते हैं और यह काम पहिले से ठहर चुका है ।२१। इस पर मरियम के गर्भ रह गया और फिर वह गर्भ लेकर कहीं अलग दूर के मकान में जा बैठी ।२२। कु० पा० १६ सू० मरियम रु० २ ।।

ईसा का गर्भ (इञ्जील से)

"अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ़ के साथ हो गई तो उनके इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्रात्मा की ओर से गर्भवती पाई गई ।१८। मत्ती १।।

"स्वर्ग दूत ने उससे कहा हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है ।३०। और देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, तू उसका नाम यीशु रखना ।३१। मरियम ने स्वर्ग दूत से कहा यह क्यों कर होगा ? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं ।३४। स्वर्ग दूत ने उत्तर दिया कि पवित्रात्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा ।३५। ।। लूका १ ।।

वक्तव्य—कुरान के अनुसार खुदा की रूह (फरिश्ता) जब मरियम के पास प्रथमवार गया तभी उसे गर्भवती बना गया और मरियम उस गर्भ को लेकर कहीं अलग एकान्त मकान में जाकर रहने लगी थी। परन्तु इञ्जील के अनुसार पवित्रात्मा (फरिश्ता) मरियम के पास गया और उसे केवल सन्देश दे गया कि पवित्रात्मा तुझ पर कभी उतरेगा और तू गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, उसका नाम तू 'यीशु' रखना । किन्तु पवित्रात्मा फिर कभी मरियम के पास आया हो और उसे गर्भ

धारण करा गया हो इस पर कोई साक्षी इञ्जील में न तो किसी अन्य की आंखों देखी है और न मरियम ने कभी किसी को कहा था कि मुझ पर पवित्रात्मा उतरा था और मैंने गर्भ धारण किया था। मरियम के गर्भ का पता सबसे पहिले उसके पति को लगा था जब वह सुहागरात मनाने उसके पास पहिली वार गया था, यह बात ऊपर मत्ती के प्रमाण से स्पष्ट है। पवित्रात्मा ने भी कभी किसी को सामने आकर नहीं बताया था कि गर्भ मैंने धारण कराया था। यूसुफ को स्वप्न में ऐसा लगा था कि कोई फरिश्ता उसे बता रहा है कि यह गर्भ पवित्रात्मा की ओर से है। स्वप्न की बात कोई प्रमाणिकता नहीं रखती है।

स्पष्ट है कि मरियम के गर्भाधान के समय व तरीके पर कुरान में इञ्जील की स्थापना का विरोध विद्यमान है, दोनों में एकरूपता नहीं है।

(९) ईसा की मृत्यु सूली पर हुई (इञ्जील)

"तब उन्होंने उसे (यीशु को) क्रूस पर चढ़ाया और चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिये।३५। उसका दोष पत्र उसके सिर पर लगाया कि "यह यहूदियों का राजा यीशु है।" ३८। तब उसके साथ दो डाफ एक दाहिने एक बायें क्रूसों पर चढ़ाये गये।३८। तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिये।५०। जब साँझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आपही यीशु का चेला था। उसने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ (शव) मांगा।५७। यूसुफ ने लोथ लेकर उज्वल चादर में लपेटा।५९। और उसे अपनी नई कब्र में रखा जो चट्टान में उसने खुदवायी थी और चट्टान के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़का कर चला गया।६०। मत्ती २७ ॥

नोट—ईसा के सूली पर लटकाने व मृत्यु का विवरण इञ्जील में कई जगह दिया है।

ईसा को सूली लगी ही नहीं थी न वे मरे थे (कुरान)

"और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसा मसीह को जो रसूल थे, कत्ल कर डाला, और न तो उन्होंने उनको कत्ल किया और न उनको सूली पर चढ़ाया गया, मगर उनको ऐसा ही मालूम हुआ और वे लोग इस बारे में मतभेद डालते हैं, तो इस मामले में शक में पड़े हैं। इनको इसकी खबर तो है नहीं मगर सिर्फ अटकल के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं। और यकीनन ईसा को लोगों ने कत्ल नहीं किया।१५७। बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी तरफ उठा लिया और अल्लाह जबर्दस्त हिकमत वाला है।" १५८।

(कु० पा० ६ सूरे निसा रु० २२)

वक्तव्य—कुरान का लेख इञ्जील के विवरण को झूठा बताता है कि ईसा को सूली लगी ही नहीं थी बल्कि खुदा ने ईसा को उसी समय ऊपर उठाकर बहिश्त में बुला लिया था। जब कि इञ्जील के अनुसार उनको सूली लगी, लाश को कब्र में रखा गया। सूली के बाद इञ्जील उनका तीसरे दिन कब्र में से उठना व ४० दिन तक इस्राइल देश में घूमकर प्रचार करने का इतिहास प्रस्तुत करती है। ऐतिहासिक दृष्टि से ईसा की सूली, उस पर उनके मूर्छित होने व बाद को शिष्यों द्वारा होश में लाये जाने, ४० दिन तक प्रचार करने आदि की बातें अधिक विश्वासनीय है। कुरान की कल्पना मान्य इसलिये भी नहीं है कि उसकी रचना मसीह की मृत्यु के ६०० वर्ष बाद हुई थी जब कि इञ्जील के कई अध्याय स्वयं मसीह के ही शिष्यों द्वारा लिखे गये थे।

कुरान ने इन्जील को खुदाई पुस्तक माना है तब उसे उसके विवरण का खण्डन नहीं करना चाहिये था। इस विषय में दौनों में विरोध स्पष्ट है।

(१०) खुदा किसी का पक्ष नहीं करता (इन्जील से)

"अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है वह उसे भाता है।३५। प्रेरितों के काम १० ॥

"मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।" ७। गलतियो ६।।

खुदा केवल इस्लाम का पक्षपाती है (कुरान से)

"दीन तो खुदा के नजदीक यही इस्लाम है…।" १६।

(कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० २)

"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहाँ उसका वह दीन कबूल नहीं और वह कयामत में नुकसान पाने वालों में से होगा।" ८५ ॥

(कु० पा० ४ सू० आल इमरान रु० ९)

(खुदा ने कहा) "हमने तुम्हारे लिये दीन इस्लाम को पसन्द किया…।।३। सू० मायदा रु० १।

वक्तव्य—इन्जील का कहना है कि खुदा लोगों के शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार न्याय करेगा चाहे वह किसी भी देश या धर्म का मानने वाला हो, परन्तु उसके विपरीत कुरानी खुदा केवल इस्लाम का पक्षपाती है, उसे शुभाशुभ कर्मों के आधार

पर न्याय नहीं करना है। स्पष्ट है कि कुरान की व्यवस्था इन्जील की विरोधी है और अन्यायपूर्ण है।

(११) किसी को गाली मत दो (इन्जील से)

"और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।" २२। मत्ती ५ ॥

खुदा ने गाली दी

(खुदा ने कहा) ऐ पैगम्बर ! किताब वालों और अरब के जाहिलो से कहो कि तुम भी इस्लाम को मानते हो (वा नहीं) ।२०॥

(कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० २)

वक्तव्य—इसमें स्पष्टतया इन्जील की व्यवस्था का कुरानी खुदा ने खण्डन करके खुदा से लोगों को गाली दिलाई है।

(१२) विरोधियों से भी प्रेम करो (इन्जील से)

परन्तु मैं तुम सुनने वालों से कहता हूँ कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो। जो तुमसे बैर करे उनका भला करो ।२७। जो तुम्हें स्राप दें, उनको आशीश दो, जो तुम्हारा अपमान करे उनके लिये प्रार्थना करो ।२८। जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे और जो तेरी दोहर छीन ले उसको कुरता लेने से भी न रोक ।२९। जो कोई तुझसे माँगे उसे दे, और जो तेरी वस्तु छीन ले उससे न मांग ।३०। और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें; तुम भी उनके साथ वैसा ही करो ।३१। अपने शत्रुओं से प्रेम रखो और भलाई करो और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो ।३५। लूका ६ ॥

विरोधियों (गैर मुस्लिमों को) लूटो मारो काटो
(कुरान से)

"मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं ।" २८। कु० सू० आल इमरान रु० ३ ॥

"(काफिर) अगर मुख मोड़ें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको कत्ल करो, उनमें से मित्र और सहायक न वनाना ।" ८६॥
(कु० पा० ५ सू० निसा रु० १२)

"अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनके माल खरीद लिये हैं कि उनके वदले में उनको जन्नत देगा ताकि अल्लाह की राह में लड़े और मारे ।" कु० पा० ११ सू० तौवा रु० १४ आ० १११ ॥

"मुसलमानों ! अपने आस पास के काफिरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुम से सख्ती मालूम करें ।" १२३।
(कु० पा० ११ सू० तौवा रु० १६)

"जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर से लड़ते हैं···उनकी सजा तो यही है कि मार डाले जायें या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पांव उल्टे काट दिये जाँय ।३३। कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ५॥

"काफिरों से लड़ते रहो यहां तक कि फसाद न रहे और सव खुदा ही का दीन हो जाय ।" ३९। कु० पा० ९ सू० अनफाल रु० ५॥

वक्तव्य—स्पष्ट है कि इन्जील की शत्रुओं से भी प्रेम करने की उत्तम शिक्षा का कुरान विरोधी है। वह गैर मुसलमानों से नफरत करने, युद्ध करने उनका कत्ल करने का उपदेश देकर संसार में अन्याय अत्याचार का समर्थन करता है और पुरानी

किताबों की शिक्षा का विरोधी है। उसका यह दावा कि वह इन्जील का समर्थक है, सर्वथा मिथ्या है।

(१३) केवल ईसा मसीह ही जगत का न्याय करेगा
(इञ्जील से)

"और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है।' २२। यूहन्ना ५ ॥

"क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्य (ईसा) के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित करदी है।३१। प्रेरितों के काम १७ ॥

अनेक पैगम्बरों की सिफारिश पर खुदा न्याय करेगा
(कुरान से)

"और हर उम्मत का एक पैगम्बर है तो जब वह (उनका पैगम्बर) अपने गिरोह में आता है तो उसके गिरोह में न्याय के साथ फैसला होता है।४७। पा० ११ सू० यूनिस रु० ५ ॥

(खुदा ने कहा) "और हर एक गिरोह में हम एक साक्षी (पैगम्बर) अलग करेंगे, फिर कहेंगे अपनी दलील पेश करो तब जानेंगे अल्लाह की बात सच्ची है।" कु० पा० २० सू० कसस रु० ७ आ० ७५ ॥

'मरियम के बेटे ईसा मसीह बस अल्लाह के पैगम्बर हैं।'

"...अल्लाह एक है वह इस लायक नहीं कि उसके कोई सन्तान हो।" कु० पा० ६ सू० निसा १७१ ॥

वक्तव्य—इन्जील के अनुसार सम्पूर्ण जगत का न्याय खुदा स्वयं न करके ईसा मसीह नाम के अपने इकलौते बेटे से करावेगा। कुरान के अनुसार खुदा न्याय करेगा और हर गिरोह का पैगम्बर हाजिर होकर अपने गिरोह के लोगों को बहिश्त में भेजने की सिफारिश खुदा से करेगा। इन्जील मसीह को खुदा का बेटा मानती है कुरान उसका खण्डन करता है। स्पष्ट है कि कुरान ने इन्जील का खुला विरोध किया है न कि समर्थन।

(१४) अशुद्ध तलाक शुदा स्त्री को पूर्व पति न ले
(तौरात से)

"यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को व्याह ले और उसके बाद उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो तो वह उसके लिये त्याग पत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे।१। और जब वह उसके घर से निकल जाए तो दूसरे पुरुष की हो सकती है।२। (परन्तु यदि वह दूसरा पुरुष भी उसे उसी प्रकार निकाल दे) तो उसका पहिला पति जिसने उसे निकाल दिया हो उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी न बनाने पाये क्योंकि यह यहोवा के सम्मुख घृणित बात है।४। व्यवस्था विवरण।" २४॥

अशुद्ध कराने के बाद ही पूर्व पति स्त्रीको ग्रहण करे (कुरान)

"अब औरत को तीसरी बार तलाक दे दी हो तो उसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न कर ले उसके लिये हलाल नहीं (हो सकती) हाँ अगर (दूसरा पति उससे विषय भोग करके) उसको तलाक दे दे तो दोनों (पूर्व पति व तलाक शुदा पत्नी) पर कुछ पाप नहीं (आपस में पुनः निकाह कर सकते हैं) २३०।

(कु० पा० २ सू० बकर रु० २९)

वक्तव्य—कुरान ने तौरात को खुदाई किताब माना है तथा उसकी ताईद करने की घोषणा की है। तौरात में दूसरे पति द्वारा भोगी गई तलाक शुदा पत्नी को पूर्व पति हरगिज ग्रहण नहीं कर सकता है पर कुरान में दूसरा पति करके उससे विषय भोग कराके आने के वाद ही पहिले पति को उसे पुनः स्वीकार करने का आदेश है। विना अशुद्ध हुए औरत को उसका पूर्व पति ले ही नही सकता है। स्पष्टतः दोनों व्यवस्थाओं में विरोध है। कुरान तौरात का स्पष्टतया विरोधी है और उसकी व्यवस्था का खण्डन करता है। कुरान की व्यवस्था समझ में आने योग्य भी नहीं है।

(१५) शराब व मांस खाने का निषेध (इञ्जील से)

भला तो यह है कि तू मांस न खाये और न दाख रस पीये, न और कुछ ऐसा करे जिससे तेरा भाई ठोकर खाये।" २१। रोमियो १४॥

मांस खाने की आज्ञा (कुरान से)

और हमने तुम्हारे लिये कुरवानी के ऊँटों को उन चीजों में कर दिया जो खुदा के साथ नामजद की जाती हैं। उनमें तुम्हारे लिये फायदे है तो उनको खड़ा रखकर उनपर खुदा का नाम लो, फिर जब वह किसी पहलू पर गिर पड़े तो उसमें से खाओ और सब्र वालों और फकीरों को खिलाओ। हमने तुम्हारे बस में इन जानवरों को कर दिया है ताकि तुप शुक्र करो।३६।" कु० पा० १७ सू० हज्ज रु० ५॥

"दरियाई शिकार और खाने की दरियाई चीज तुम्हारे लिये हलाल की जाती हैं ताकि तुमको और मुसाफिरों को लाभ पहुँचे।" ९६।

(कु० पा० ७ सू० मायदा रु० १३।

"वही जिसने नदी को आधीन कर दिया ताकि तुम उसमें से (मछलियाँ निकाल कर उनका) ताजा माँस खाओ....।" १४।

(कु० पा० १४ सू० नहल रु० २)

"वह चीज मुर्दार हो या वहता हुआ खून या सुअर का माँस, यह चीजें नापाक हैं या हुक्म उदूली का सवब हो या खुदा के सिवाय किसी दूसरे के नाम पर जिवह हो, उस पर भी जो शख्स लाचार हो (तो सभी कुछ खा लेवे) तेरा परवर्दिगार माफ करने वाला मेहरवान है।" १४५। कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १८ ॥

वक्तव्य—इन्जील का कुरान से मांसाहार पर विरोध स्पष्ट है जब कि कुरान को इन्जील की हर बात का समर्थन करना उचित ही नहीं आवश्यक है।

(१६) खुदा मांस खून व चर्बी खाता है

मेरे सेवा टहल करने को मेरे समीप आया करें और मुझे चर्बी और लोहू चढ़ाने को मेरे सन्मुख खड़े हुआ करें, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। यहेजकेल ४५।१५ ॥

"यहोवा (खुदा) कहता है तुम्हारे मेल वलि मेरे किस काम के हैं। मैं तो मेढ़ों के होम वलियों से पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूँ।" याशायाह १।११।

खुदा तक गोश्त व खून नहीं पहुँचते हैं

"खुदा तक न तो इनके गोश्त ही पहुँचते हैं और न इनके खून।"

(कु० पा० १७ सू० हज्ज रु० ५ आ० ३७)

वक्तव्य—कुरान नें बाईबिल की बात का खण्डन किया है यह स्पष्ट है। दौनों की व्यवस्थायें परस्पर विरोधी हैं जब कि दौनों कितावें कुरान ने खुदाई मानी हैं।

(१७) कयामत के दिन भौतिक नहीं आत्मिक देह उठेगी
(इञ्जील से)

"शरीर नाशमान वोया जाता है और अविनाशी रूप में जी उठता है वह अनादर से वोया जाता है तेज के साथ जी उठता है। प्राणिक देह वोई जाती है और आत्मिक देह जी उठती है। जव स्वाभाविक देह है तो आत्मिक देह भी है।" १। कुरैन्थियों ४२-४४ ॥

उस दिन अन्धे मुर्दे अन्धे ही उठेंगे (भौतिक देह उठेगी)
(कुरान)

"जो इसमें अन्धा रहा वह कमायत में भी अन्धा होगा और राह से बहुत दूर भटका हुआ होगा।"

(कु० पा० १५ सू० बनी इस्राईल रु० ८ आ० ७२)

वक्तव्य—स्पष्ट है कि इन्जील आत्मिक देह का तेज सहित कयामत के दिन उठना मानती है जव कि कुरान उसके विलकुल खिलाफ यह मानता है कि जैसा मुर्दा जमीन में गाढ़ा जाता है वैसा ही जवान-वच्चा-वूढ़ा अन्धा या सूझता उठता है। कुरान का इन्जील से विरोध स्पष्ट है।

(१८) शराबियों की मोक्ष न होगी

"क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के

वारिस न होंगे, धोखा न खाओ, न वेश्या गामी, न मूर्ति पूजक, न परस्त्री गामी, न लुच्चे न पुरुषगामी।६। न चोर, न लोभी, न पियक्कड़ परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" इञ्जील १ कुरैन्थियो ६॥

खुदा बहिश्त में शरावें पिलायेगा

..."उनको खालिस शराव मुहर की हुई पिलाई जायगी।२५। जिस (बोतल) की मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिए कि उसकी इच्छा करें।२६। और उस शराब में तसनीम (वहिश्ती चश्मे) के पानी की मिलावट होगी।" २७ कु० पा० ३० सू० तफीफ॥

"निःसन्देह सुकर्मी (शराव के) प्याले पीवेंगे जिसनें कपूर की मिलावट होगी।" कु० पा० २९ सू० दहर रु० २॥

वक्तव्य—दोनों किताबें इञ्जील और कुरान यदि खुदाई हैं जैसा कि कुरान मानता है तो एक में शराव पीने का विरोध तथा दूसरी में खुदा का स्वयं बहिश्ती जवानों को शरावें पिलाना व लालच देना परस्पर विरुद्ध बातें स्पष्ट हैं। दोनों किताबों को खुदाई नहीं माना जा सकता है।

(१९) ऊंट का मांस खाने का निषेध (तौरात से)

(१) फिर यहोवा (खुदा) ने मूसा और हारुन से कहा (२) इस्राएलियों से कहो, कि जितने पशु पृथ्वी पर हैं उन सबों में से तुम जीवधारियों का माँस खा सकते हो (३) पशुओं में जितने चिरे वा फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं, उन्हें खा सकते हो (४) परन्तु पागुर करने वाले वा फटे खुर वालों में से इन पशुओं को न खाना, अर्थात् ऊंट जो पागुर तो करता है, परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिये वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरा है। तोरात लै० व्यवस्था ११॥

ऊंट का मांस खा जाओ (कुरान से)

और हमने तुम्हारे लिये कुरवानी के ऊंटों को उन चीजों में कर दिया है जो खुदा के साथ नामजद की जाती हैं। उनमें तुम्हारे लिये फायदे हैं तो उनको खड़ा रखकर उन पर खुदा का नाम लो (तब उसकी छाती में भाला मारो) फिर जब वह किसी पहलू पर गिर पड़े तो उनमें से खाओ और सब्र वालों और फकीरों को खिलाओ। हमने यों इन जानवरों को तुम्हारे वस में कर दिया है ताकि तुम शुक्र करो।"

(कु० पा० १७ सू० हज्ज रु० ५ आ० ३६)

वक्तव्य—तौरात में ऊंट मार कर खाना वर्जित किया जा चुका था किन्तु कुरान में उसे खाना जायज लिखा गया है। स्पष्ट है कि कुरान में तौरात की खुदाई व्यवस्था का खण्डन है। दोनों किताबों को खुदाई कैसे माना जा सकता है जब कि उनमें परस्पर विरोधी बातों की भरमार मौजूद है?

छठा अध्याय

कुरान में तौरात ज़बूर व इञ्जील की नकल के चन्द दृष्टान्त

वक्तव्य—यदि कोई पुस्तक अपने से पहिले प्रकाशित पुस्तकों के उदाहरण वा व्यवस्थायें नकल करके अथवा उसी के आधार पर कल्पनायें करके अपना कलेवर पूरा कर लेती है तो उस नवीन पुस्तक का महत्व कुछ नहीं रहता है क्योंकि उसमें उसका अपना कुछ नहीं होता है वह तो केवल दूसरों की नकल मात्र होती है। कुरान शरीफ की अधिकांश सामग्री उससे पूर्व विद्यमान तौरात-जबूर व इन्जील से नकल करके ली गई है। अतः क़ुरान का महत्व समाप्त हो जाता है क्योंकि वह पहिली पुस्तकों की नकल मात्र है।

हम इसी प्रकार के कुछ स्थल तौरात जबूर इन्जील में से तथा कुरान में नकल किये हुए स्थलों के साथ आगे उपस्थित करते हैं जिससे पाठक कुरान की तुलनात्मक दृष्टि से सही स्थिति को समझ सकेंगे और नकल करने वाली किताब कुरान के बारे में अपनी सम्मति बना सकेंगे। मुस्लिम विद्वान भी कुरान की नकल की स्थिति पर विचार करें कि जब तौरात जबूर और इञ्जील् कीकिताबें पहिले ही से बेशुमार मौजूद थीं तो खुदा ने उनकी बातों को बिना जरूरत कुरान में नकल करके

(दोहरा के) कुरान का कलेवर बढ़ाने में कौन सी बुद्धिमता का इजहार (प्रदर्शन) किया है ? कुरान में यदि नई बातें दी जातीं जो पुरानी किताबों में पहिले से मौजूद न होतीं तब तो कुरान की उपयोगिता थी। एक ही प्रकार की बातों को बार २ लिखना वा कहना लेखक की शान को बट्टा लगाने वाली बात होती है।

(१) किस्सा जकरयाह (इञ्जील से)

"यहूदियों के राजा हेरोदेस के समय में अब्वियाह के दल में जकरयाह नाम का एक याजक था और उसकी पत्नी का नाम इलिशिवा था।५। उनके कोई सन्तान न थी।६। क्योंकि इलिशिवा बांझ थी।७। (जकरयाह को) प्रभु का एक स्वर्ग दूत धूप की वेदी की दाहिनी ओर खड़ा हुआ दिखाई दिया।११। स्वर्गदूत ने कहा हे—जकरयाह ! भयभीत न हो क्यों कि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलिशिवा के तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।१३। जकरयाह ने स्वर्ग दूत से पूछा; यह मैं कैसे जानूँ ? क्योंकि मैं भी तो बूढ़ा हूँ और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है।१८। स्वर्ग दूत ने उसको उत्तर दिया कि मैं जिब्रील हूँ जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ और मैं तुझसे बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूँ।१९। इन दिनों के बाद उसकी पत्नी इलिशिवा गर्भवती हुई ··· ॥२४। इञ्जील-लूका १॥

किस्सा जकरयाह (कुरान से)

(जकरयाह) बोले कि ऐ परवर्दिगार ! मेरी हड्डियां सुस्त पड़ गई हैं और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा है। और ऐ मेरे परवर्दिगार ! मैं तुझ से मांग कर खाली नहीं रहा।४। अपने (मरे) पीछे मुझको भाई बन्दों से डर है और मेरी बीवी बांझ है, पस अपनी तरफ से मुझको एक वारिस (बेटा) दे।५। (खुदा ने कहा) जकरियाह ! हम तुमको एक

लड़के की खुशखबरी देते हैं जिसका नाम यहिया होगा····।७। (जकरिया ने) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है जब कि मेरी बीबी बाँझ है और मैं बिलकुल बूढ़ा हो गया हूँ।८। (खुदा ने) कहा ऐसा ही तुम्हारा परवर्दिगार कहता है कि तुमको इसमें बेटा देना हमारे लिये आसान है····।" ९।

कु० पा० १६ सू० मरियम रु० १॥

वक्तव्य—इञ्जील और कुरान की कथा हमने संक्षेप में ऊपर दी है। दोनों कथायें बिलकुल एक हैं, कोई भी अन्तर नहीं है। कुरान ने इञ्जील की नकल की है। एक बात कुरान ने इञ्जील के विरुद्ध लिखी है कि उस पैदा होने वाले बच्चे का नाम इञ्जील के अनुसार 'यूहन्ना' रखा गया था जो कि ऐतिहासिक सत्य है पर कुरान ने उसके विपरीत अपनी मनमानी से उसका नाम 'यहिया' रख दिया है जो कि गलत है, क्योंकि इञ्जील में कहीं भी यहिया नाम का कोई व्यक्ति कभी नहीं हुआ था। यूहन्ना और ईसा का समकालीन होना, ईसा का यूहन्ना से ही दीक्षा लेना आदि ईसाई मतानुसार ऐतिहासिक तथ्य हैं। अतः कुरान की यह बात अमान्य है। नकल करते समय कुरानकार को यहां भूल नहीं करनी चाहिये थी। इससे कुरान की इस बात (दावे) का भी खण्डन हो गया कि—

"ऐ पैगम्बर! तुझसे वही बात कही जाती है जो तुझसे पहिले पैगम्बरों से कही जा चुकी है···।" ४३।

कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५॥

(२) मूसा का समुद्र फाड़ना और फिरौन की सेना का डूबना (तौरात से)

और मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और यहोवा ने

रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई और समुद्र को दो भाग करके जल ऐसा हटा दिया जिससे कि उसके बीच सूखी भूमि हो गई। तब इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले और जल उनकी दाहिनी और बाँई ओर दीवाल का काम देता था।२२। तब मिश्री अर्थात फिरौन के सब घोड़े रथ और सवार उनका पीछा किये हुए समुद्र के बीच में चले आए।२३। फिर यहोवा ने मूसा से कहा अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा कि जल मिस्रियों और उनके रथों और सवारों पर फिर बहने लगे।२६। तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और भोर होते होते क्या हुआ कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने बल पर आ गया और मिस्री उल्टे भागने लगे परन्तु यहोवा ने उनको समुद्र के बीच ही में झटक दिया।२७। और फिरौन की सारी सेना उसमें डूब गई और उसमें से एक भी न बचा।२८। परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले गये।३०। तौरात निर्गमन पर्व १४॥

उपरोक्त कथा (कुरान से)

(उस समय को याद करो) जब हमने तुमको फिरऔन के लोगों मे छुड़वाया जो तुम पर जुल्म करते थे। वे तुम्हारे बेटों को हलाल करते और तुम्हारी स्त्रियों (बहू बेटियों) को (अपनी सेवा के लिए) जीवित रख लेते थे, इसमें तुम्हारे पालनकर्ता की बड़ी आजमायश थी।४६। (वह वक्त भी याद करो) जब मैंने तुम्हारी वजह से नदी को फाड़ दिया, फिर तुमको बचाया और फिरऔन के लोगों को तुम्हारे देखते डुबो दिया।५०।" कु० पा० १ सू० बकर रु० ६॥

वक्तव्य—कुरान ने तौरात की विस्तृत कथा को संक्षिप्त करके नकल किया है किन्तु तथ्य एक ही प्रकार है। साथ ही एक विरोध यह किया है कि तौरात में समुद्र फाड़ने का उल्लेख है तो कुरान में समुद्र की जगह नदी बता दी गई है। स्पष्ट है

कि एक बात में तौरात से कुरान का विरोध विद्यमान है जो कि नहीं होना चाहिए क्योंकि दोनों ही किताबों में ब्यान खुदा का ही दिया है। हो सकता है कि कुरान लिखाते वक्त खुदा यह भूल कर गया हो।

(३) फरिश्तों की फौजी पलटनें (इञ्जील में)

"(यीशु ने कहा) क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूँ और वह स्वर्ग दूतों की बारह पलटन से भी अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा।" मत्ती २६।५३॥

फरिश्तों की लड़ाकू पलटनें (कुरान में)

"ऐ पैगम्बर! यह वह वक्त था कि तुम्हारा परवर्दिगार फरिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि (लड़ाई के मैदान में) हम तुम्हारे साथ हैं तुम मुसलमानों को जमाये रखो हम जल्द काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे। बस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके टुकड़े २ कर डालो।" कु० पा० ९ सू० अनफाल रु० २ आ० १२॥

वक्तव्य—खुदा फरिश्तों की लड़ाकू फौजी पलटनें रखता है कुरान ने इञ्जील से यह विचार नकल किया है यह स्पष्ट है।

(४) आदम व हव्वा की उत्पत्ति (कुरान से)

कुरान पा० ४ सू० निसा रु० १ आ० १ में आदम व उसकी बीवी की पैदायश के बारे में लिखा है कि—

"ऐ लोगो! अपने परवर्दिगार से डरो जिसने तुमको एक शख्स

से पैदा किया और उससे उसकी बीवी को पैदा किया और उन दो से बहुत मर्द और औरत फैला दिये…।"

"उसी ने (खुदा ने) मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया।" १४। कु० पा० २७ सू० रहमान रु० १॥

"और हमने आदमी को सनी मिट्टी से बनाया है।" १२।

(कु० पा० १८ सू० मोमिनून रु० १)

तौरात से

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथुनों में जीवन का श्वाँस फूँक दिया और आदम जीविता प्राणी बन गया।७।

"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उससे उसकी एक पसुली निकाल कर उसकी सन्ती माँस भर दिया।२१।

और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उसने आदम में से निकाली थी स्त्री बना दिया और उसको आदम के पास ले आया।२२।

तौरात उत्पत्ति २॥

'परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है।६। और तुम तो फूलो फलो और बढ़ो और पृथ्वी में बहुत बच्चे जन्मा के उसमें भर जाओ।७। तौरात उत्पत्ति ६॥

वक्तव्य—ऊपर के वर्णन से स्पष्ट है कि कुरान ने आदम व उसकी पत्नी हव्वा की उत्पत्ति तथा उनसे पृथ्वी भर में मनुष्यों के फैल जाने की सारी कहानी तौरात से ही नकल की है, उसकी अपनी कल्पना नहीं है।

(५) आदम को फल खाने का निषेध (तौरात से)

"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है।१६। पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना; क्योंकि जिस दिन उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।१७। तौरात उत्पत्ति ५।

कुरान से

और मैंने कहा ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी बहिश्त में बसो और उसमें जहाँ कहीं से तुम्हारी जो तबियत चाहे वे खटके खाओ, मगर इस पेड़ के पास मत फटकना। (ऐसा करोगे) तो अपराधी हो जाओगे।" ३५ कु० पा० १ सू० बकर रु० ४॥

वक्तव्य— इससे भी स्पष्ट है कि यह वर्णन कुरान में तौरात से नकल किया गया है। कुरान में शैतान द्वारा आदम हव्वा को बहका कर ज्ञान वृक्ष का फल खिला देने और खुदा का उनको फटकार कर निकाल देने का जो वर्णन सू० बकर आ० ३६ में दिया है वह सारा का सारा तौरात उत्पत्ति पर्व ३ की नकल की गई है।

(६) खुदा एक है (तौरात जबूर से)
(स्वर्ग में रहता है)

सम्पूर्ण तौरात व जबूर में केवल एक यहोवा परमेश्वर का ही उल्लेख है और उसी की उपासना व पूजा का आदेश है।

जबूर के सभोपदेशक ५।२ में लिखा है "क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है, इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों।" इसके अनुसार खुदा के रहने का स्थान स्वर्ग माना गया है।

खुदा एक है वह बहिश्त में रहता है (कुरान से)

"तुम्हारा पूजित एक ईश्वर है, इसके सिवा कोई पूजित नहीं। वह बड़ा दया करने वाला कृपालु है।" १६३।

कु० पा० २ सू० बकर रु० १९ ॥

"परहेजगार (मुसलमान) स्वर्ग के बागों में और नहरों में होंगे।५४। सच्ची बैठक में बादशाह (खुदा) के पास जिसका सब पर कब्जा है।" ५५। कु० पा० २७ सू० कमर रु० ३॥

वक्तव्य—एक खुदा होने की मान्यता तौरात व जबूर से ही कुरान ने सीखी है और खुदा के स्वर्ग में रहने की बात भी उसी से नकल की गई है। एकेश्वर वाद की मान्यता वस्तुतः वेद की है। कुरान की अपनी कल्पना नहीं है उसने यहूदी मत से उसे सीखा था।

(७) मूसा ने आदमी की हत्या की (तौरात से)

"उन दिनों में ऐसा हुआ कि जब मूसा जवान हुआ और बाहर अपने भाई बन्धुओं के पास जाकर उनके दुःखों पर दृष्टि करने लगा तब उसने देखा कि कोई मिश्री जन मेरे एक इब्री भाई को मार रहा है।११। जब उसने इधर उधर देखा कि कोई नहीं है, तब उस मिश्री को मार डाला और बालू में छिपा दिया।१२।" तौरात निर्गमन २॥

कुरान से

(मूसा ने कहा) "और मेरे जिम्मे एक पाप उनका दावा भी है (मैंने एक किब्ती को मार दिया था) सो मैं डरता हूँ कि मुझे मार न डालें।१४।" कु० पा० १९ सू० शुअरा रु० २॥

(८) मूसा ने पत्थर से पानी निकाला

(तौरात से)

खुदा ने मूसा से कहा "देख मैं तेरे आगे चल कर होरेव पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा और तू उस चट्टान पर मारना, तब उसमें से पानी निकलेगा, जिससे ये लोग पियें। तव मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया।६। तौरात निर्गमन १७॥

(कुरान से)

"जव मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की तो मैंने कहा कि ऐ मूसा ! अपनी लाठी पत्थर पर मारो, लाठी मारने पर पत्थर से वाहर चश्मे (सोते) फूट निकले...।" ६०।

कु० पा० १ सू० बकर रु० ७॥

(९) हारुन की लाठी सांप बन गई

(तौरात से)

"तव मूसा और हारुन ने फिरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञानुसार किया, और जव हारुन ने अपनी लाठी को फिरौन और उसके कर्मचारियों के सामने डाल दिया तव वह अजगर वन गया।१०। तव मिश्र के जादूगरों ने आकर अपने अपने तंत्र मंत्र से वैसा ही किया।११। उन्होंने भी अपनी अपनी लाठी को डाल दिया और वे भी अजगर वन गये। पर हारुन की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई।" १२।

तौरात निर्गमन ७॥

(कुरान से)

जव उन्होंने (जादूगरों ने अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ) डाल दीं तो जादू के जोर से लोगों की नजरवन्दी करदी (कि चारों तरफ सांप ही साँप दिखाई देने लगे) और उनको भय में डाल दिया और वड़ा जादू

लाये ।११६। और हमने मूसा की तरफ खुदाई पैगाम भेजा कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो। (मूसा ने) लाठी (असा) डाल दी तो क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो झूठमूठ वना खड़ा किया था वह उनको लीलने लगा ।११७। कु० पा० ९ सूरे आराफ रु० १४ ।।

वक्तव्य—इसी प्रकार टिड्डियां, खून, मच्छर, जुँए, मैंढ़क खून आदि पैदा करना हाथ सफेद दिखाने आदि की मूसा की जादूगरी का जो भी वर्णन कुरान में सू० आराफ रु० १६ में किया गया है वह सारा का सारा तौरात निर्गमन पैरा ४ से १२ तक में विस्तार से दिया है और वहीं से उसे लेकर कुरान में नकल किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से कुरान में उनके होने से उसकी कोई विशेषता नहीं है।

(१०) मूसा का जन्म-नदी में बहाना-व दूध व्यवस्था

(तौरात से)

तौरात निर्गमन पैरा २ में लिखा है कि फिरौन वादशाह मिश्र के नवजात पुत्रों को मरवा देता था व लड़कियों को जिन्दा रखता था। मूसा को जन्म के बाद तीन माह तक उसकी माँ ने छिपा के रखा, फिर टोकरी में रखकर नदी में बहा दिया तथा उसकी बहिन उसे देखती रही। फिरौन की लड़की ने उसे बहते से उठा लिया और लड़की से पूछकर बिना उसे बताये मूसा की माँ को ही उसकी धाया बनवा दिया और इस तरह मूसा पाला गया।

(कुरान से)

कुरान पा० २० सू० कसस रु० १ में आ० २ से लेकर १३ तक में उपरोक्त तौरात वाली कथा उससे नकल करके लगभग ज्यों की त्यों

दे दी गई है। इसमें भी कुरान पुरानी किताबों की नकल करने का दोषी पाया गया है।

(११) मूसा ने आग देखी, खुदा मिल गया
(तौरात से)

"मूसा अपने ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़ बकरियों को चराता था, और वह उन्हें जंगल की परली ओर होरेब नाम परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया, और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया और उसने दृष्टि उठा कर देखा कि झाड़ी जल रही है पर भस्म नहीं होती।२। तब मूसा ने सोचा कि मैं उधर फिर के इस बड़े अचम्भे को देखूँगा कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती।३। जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा कि हे मूसा हे मूसा ! मूसा ने कहा क्या आज्ञा।४। उसने कहा इधर पास मत आ और अपने पांवों से जूतियां उतार दे......।" ५। पैरा ४॥ तौरात निर्गमन।

यहोवा ने उससे कहा तेरे हाथ में वह क्या है ? वह बोला लाठी।२। उसने कहा उसे भूमि पर डाल दे; जब उसने उसे भूमि पर डाला वह सर्प बन गई और मूसा उसके सामने से भागा।३। तब यहोवा ने मूसा से कहा हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़ ले।४। जब उसने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई।५। फिर यहोवा ने उससे यह भी कहा कि अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप। सो उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप लिया, फिर जब उसे निकाला, तब क्या देखा कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान

श्वेत हो गया है ।६। तब उसने कहा अपना हाथ छाती पर रखकर फिर ढाँप, और उसने अपना हाथ छाती पर रखकर फिर ढाँप लिया और जब उसने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखता है कि वह फिर सारी देह के समान हो गया ।७। पैरा ४।। तौरात निर्गमन ।

मूसा को आग में खुदा मिल गया

(कुरान से)

"जब उनको (मूसा को) आग दिखाई दी तो उन्होंने अपने घर के लोगों से कहा ठहरो, मुझको आग दिखाई दी है, अजब नहीं उससे तुम्हारे लिये चिनगारी ले आऊँ या आग से राह का पता मालूम करूं ।१०। फिर जब मूसा वहां आये तो उनको वहां आवाज आई कि ऐ मूसा ।११। मैं तेरा परर्वादिगार हूँ, तू अपनी जूतियां उतार डाल···· ।१२। और मूसा तुम्हारे दाहिने हाथ में यह क्या है ? ।१७। मूसा ने कहा यह मेरी लाठी है···।१८। फर्माया ऐ मूसा ! इसको जमीन पर डाल दे ।१९। चुनाचे मूसा ने लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक भागता हुआ साँप बन गई ।२०। फर्माया इसको पकड़ लो और डरो मत, हम इसकी फिर वही पहिली हालत कर देंगे ।२१। और अपने हाथ को सिकोड़कर अपनी बगल में रखलो और फिर निकालो तो वह विना किसी तरह की बुराई के सफेद निकलेगा, यह दूसरा चमत्कार है ।२२। कु० पा० १६ सूरे ताहा रु० १ ।।

नोट—इससे आगे सारी कथा आयत नं० ८० तक तौरात की नकल की हुई हैं । यही कथा कु० पा० २९ सू० नम्ल में भी दी गई है ।

वक्तव्य—तौरात और कुरान की भाषा व सामग्री बिलकुल एक जैसी है । स्पष्ट है ज्यों की त्यों यह कथा भी तौरात से

क़ुरान बनाने वाले ने नकल की है, उसकी अपनी कोई विशेषता इसमें नहीं है।

(१२) किस्सा लूत (तौरात से)

(दो फरिश्ते सदोम नगर से आये। लूत उनको अपने घर ले गया और ठहराया। इससे आगे इस प्रकार है।) उनके सो जाने से पहिले उस सदोम नगर के पुरुषों ने, जवानों से लेकर बूढ़ों तक वरन् चारों ओर के सब लोगों ने आकर उस घर को घेर लिया।४। और लूत को पुकार कर कहने लगे कि जो पुरुष आज रात को तेरे पास आये हैं वे कहां हैं, उनको हमारे पास बाहर ले आ कि हम उनसे भोग करें।५। तब लूत उनके पास द्वार के बाहर गया और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके कहा।६। हे मेरे भाइयो, ऐसी बुराई न करो, सुनो मेरी दो बेटियाँ हैं जिन्होंने अब लो पुरुष का मुंह नहीं देखा, इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊं और तुमको जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उनसे करो, पर इन पुरुषों से कुछ न करो क्योंकि ये मेरी छत के तले आये हैं।८। (इसके बाद कथा दी है कि लूत अपने बच्चों सम्बन्धियों और पत्नी के साथ वहाँ से चला गया। फरिश्तों ने दिन निकलते २ उस गाँव को उलट पुलट कर सत्यानाश कर दिया। लूत की पत्नी ने जाते समय पीछे मुड़कर देखा तो वह मर कर नमक का खम्भा बन गई।) तौरात उत्पत्ति १९॥

किस्सा लूत (क़ुरान से)

"और लूत (को भेजा) जब उन्होंने अपनी कौम से कहा कि तुम बेशर्मी का काम करते हो जो तुमसे पहिले दुनियाँ जहान के लोगों में से

किसी ने नहीं किया ।२८। क्या तुम लड़कों पर गिरते और राह मारते और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो ।"

(कु० पा० २० सू० अन्कबूत रु० ३ आ० २६)

और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये तो उनका आना उनको बुरा लगा और उनके आने की वजह से तंग दिल हुए···।७७। लूत की जाति के लोग दौड़े दौड़े लूत के पास आये और यह लोग पहिले से ही बुरे काम किया करते थे। लूत कहने लगे कि भाइयो ! यह मेरी बेटियाँ हैं, यह तुम्हारे लिये ज्यादा पवित्र हैं। तो खुदा से डरो और मेरे महमानों में मेरी बदनामी न करो। क्या तुममें कोई भला आदमी नहीं ? ।७८। उन्होंने जवाब दिया कि तुमको तो मालूम है कि हमको तो तुम्हारी बेटियों से कोई ताल्लुक नहीं। हमारे इरादे से तुम भली-भांति जानकार हो ।७६। लूत बोले आज मुझको तुम्हारे मुकाबिले की ताकत होती या मैं किसी जोरावर आसरे का सहारा पकड़ पाता ।८०। (फरिश्ते) बोले ऐ लूत हम तुम्हारे परवर्दिगार के भेजे हुए हैं। ये लोग हरगिज तुम तक नहीं पहुँच पायेंगे। तो तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात से निकल भागो और तुममें से कोई मुड़कर न देखे। मगर तुम्हारी बीबी देखे कि जो सजा इन लोगों पर उतरने वाली है उस पर भी जरूर उतरेगी। इनके वायदे का समय सुबह है। क्या सुबह करीब नहीं ।८१। फिर जब हमारा हुक्म आया तो (ऐ पैगम्बर) हमने बस्ती लौट दी और उन पर जमे हुए खंजड़ के पत्थर बरसाये ।८२।

कु० पा० १२ सू० हूद रु० ७ ॥

वक्तव्य—तौरात की कथा लूत की पूरी ज्यों की त्यों कुरान ने नकल की हुई है। विस्तार से जो देखना चाहें वे उक्त स्थल पर तौरात में देख सकेंगे। कुरान को नकल करते समय तौरात का उल्लेख करना चाहिये था ताकि यह पता लगता कि यह

उसकी अपनी कथा नहीं है वरन असल में यह तौरात की है। दूसरों की चीज को बिना उसका उल्लेख किये अपनी किताब में दे देना एक जुर्म है, और कुरान में यह दोष विद्यमान है।

(१३) दुनियां छः दिन में बना के सातवें दिन आराम किया (तौरात)

"क्योंकि छः दिन में यहोवा (खुदा) ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है सबको बनाया और सातवें दिन विश्राम किया इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया ।११। तौरात-निर्गमन पर्व २० ॥

संसार छः दिन में बना के आराम किया (कुरान से)

"जिसने आसमान और जमीन और जो कुछ आसमान और जमीन में है (सबको) छः दिन में पैदा किया फिर तख्त पर जा बैठा" ।५९।

कु० पा० १९ सू० फुर्कान रु० ५॥

वक्तव्य—दुनियां छः दिन में बनाने और सातवें दिन आराम करने की खुदा की बात की कल्पना तौरात ने की थी। स्पष्टतया कुरान ने इस बात में उसी की नकल की है। दौनों की भाषा भी एक जैसी ही है।

(१४) खुदा ने हाथों से आकाश को ताना (बाइबिल से)

"मैंने ही पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सृजा है;

मैंने ही अपने हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है।" याशायाह ४५।१२॥

(कुरान से)

"और हमने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ वाले हैं।" कु० पा० २७ सू० तूर रु० ३ आ० ३७॥

वक्तव्य—बाइबिल और कुरान दोनों में खुदा का आसमानों को अपने हाथों से बनाने का वर्णन बताता है कि कुरान ने बाइबिल की नकल की है।

(१५) खुदा बादल के साथ आता था

(बाइबिल से)

यहोवा ने उस तम्बू में बादल के खम्भ में से होकर दर्शन दिया और बादल का खम्भा तम्बू के द्वार पर ठहर गया।१५। व्यवस्था विवरण ३१॥

तब यहोवा ने बादल के खम्बे में उतर कर तम्बू के द्वार पर खड़ा होकर हारुन और मरियम को बुलाया...।५। गिनती १२॥

खुदा बादलों में से आता है

(कुरान में)

क्या यह लोग इसी की बाट देखते हैं कि अल्लाह फरिश्तों के साथ बादलों का छाता लगाये, उनके सामने आवे और जो कुछ होना है, हो चुके और सब काम अल्लाह ही के हवाले हैं।२१०।

कु० पा० २ सू० बकर रु० २५॥

वक्तव्य--खुदा बादलों में होकर या बादलों का छाता लगाकर आता है यह कुरान की कल्पना बाइबिल की कल्पना की नकल स्पष्ट है।

(१६) कयामत के दिन मुर्दे जिन्दा होंगे
(बाइबिल से)

"तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे मुर्दे उठ खड़े होंगे...और पृथ्वी मुर्दों को लौटा देगी।" १६। याशायाह २६॥

कयामत के दिन मुर्दे जिन्दा होंगे
(कुरान में)

सब लोग एक खुदा जबर्दस्त के सामने निकल कर खड़े होंगे।४८।
कु० सू० इब्राहीम रु० २ आ० १३॥

"मुर्दों को खुदा जिला उठायेगा, फिर उसी की तरफ जायेंगे।"३६।
कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ६॥

जिस दिन मुर्दों से जमीन फट जायगी, वे दौड़ेंगे यह जमा कर लेना हमको सहल है।४३। कु० पा० २६ सू० काफ रु० ३॥

वक्तव्य—स्पष्ट है कि मुर्दों के पुनः जमीन से निकलने व खुदा के सामने खड़े होने की कल्पना कुरान ने बाइबिल से ही नकल की है।

(१७) आसमान व जमीन बुलाने पर खुदा के पास आते हैं (बाइबिल से)

"निश्चय मेरे ही हाथों ने पृथ्वी की नींव डाली और मेरे ही दाहिने

हाथ ने आकाश फैलाया; जब मैं उनको बुलाता हूं, वे एक साथ उपस्थित हो जाते हैं।" याशायाह ४८।१३॥

आसमान जमीन का आना
(कुरान में)

उसी (खुदा) ने जमीन में पहाड़ बनाये और उसमें बरकत दी ... ।१०। फिर...जमीन और आसमान दौनों से कहा कि तुम दौनों खुशी से आये या लाचारी से; दौनों ने कहा, हम खुशी से आये।" ११॥
कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० २ ॥

वक्तव्य—जड़ जमीन आसमान का खुदा के पास आना और खुदा के सवालों का जवाव देना यह सब हास्यास्पद वातें वाइविल से ही कुरान ने नकल की हैं, यह स्पष्ट है।

(१८) खुदा बात पलट जाता था
(तौरात से)

"इस लिये इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैंने कहा तो था कि तेरा घराना और तेरे मूल पुरुष का घराना मेरे सामने सदैव चला करेगा; परन्तु अव यहोवा की वाणी यह है कि यह वात मुझ से दूर हो; क्योंकि जो मेरा आदर करे मैं उसका आदर करूंगा, और जो मुझे तुच्छ जाने वे छोटे समझे जायेंगे।" १। शैमूएल २।३०॥

(खुदा ने कहा) और अपना भोजन जौ की रोटियों की नाईं (तरह) बनाकर खाया करना और उसको मनुष्य की विष्ठा से उनके देखते वनाया करना।१२।

फिर यहोवा ने कहा इसी प्रकार से इस्राएल उन जातियों के वीच अपनी रोटी अशुद्धता से खाया करेंगे जहां मैं उन्हें वरवस पहुंचाऊंगा।

।१३। तब मैंने कहा, हाय यहोवा परमेश्वर देख, मेरा मन कभी अशुद्ध नहीं हुआ और न मैंने बचपन से लेकर अब तक अपनी मृत्यु से मरे हुए वा फाड़े हुए पशु का मांस खाया और न किसी प्रकार का घिनौना मांस मेरे मुँह में कभी गया है ।१४। तब उसने मुझसे कहा देख मैंने तेरे लिए मनुष्य की विष्ठा की सन्ती (बदले में) गोबर ठहराया है और उससे तू अपनी रोटी बनाना ।" १५। यहेजकेल ४॥

कुरान में खुदा ने हुक्म पलटा
(कुरान से)

"अन्त को यहूदियों की शरारत की वजह से हमने पाक चीजें जो उनके लिये हलाल थीं इनपर हराम कर दी हैं और इस वजह से कि अक्सर खुदा की राह से रोकते थे।"

कु० पा० ६ सू० निसा रु० २२ आ० १६०॥

(मुसलमानो !) रोजों की रातों में अपनी बीवियां के पास जाना तुम्हारे लिये (अब) जायज कर दिया गया है वह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो। अल्लाह ने देखा कि तुम (चोरी चोरी) उनके पास जाने से अपना (दीनी) नुकसान करते थे तो उसने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया और तुम्हारे अपराध से दरगुजर की। पस अब (रोजों में रात के वक्त) उनके साथ हम बिस्तर हो…।" १८७।

कु० पा० २ सू० बकर रु० २३॥

"… हम कोई आयत मंसूख कर दें या बुद्धि से उसको उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुँचा देते है। क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है।" १०६।

कु० पा० १ सू० बकर रु० १३॥

वक्तव्य—खुदा अपनी बात का पक्का नहीं था, वह अपने

हुक्मों को अपनी प्रतिज्ञाओं को पलट देता था यह कमजोरी ईसाई खुदा में बाइबिल ने दिखाई थी। उसी की नकल में कुरान ने भी अपने खुदा को जवान का कच्चा, बात, आदेश व कुरान की आयतों को पलट देने वाला घोषित कर दिया है। स्पष्ट है कि कुरान ने बाइबिल की इस बात में भी नकल करली है।

(१६) तुरई फूंकने पर मुर्दे उठेंगे

(इन्जील से)

और यह क्षण भर में पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा, क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाँएगे और हम बदल जाँएगे ।।५२। १ कुरेन्थियो १५।।

सूर फूंकने पर मुर्दे उठेंगे

(कुरान से)

"और सूर (नरसिंहा) फूंका जायगा तो जो आसमानों और जमीन में हैं बेहोश हो जायेंगे मगर जिसको खुदा चाहे (बेहोश न होगा)। फिर दुबारा सूर फूंका जायगा फिर वे (मुर्दे) खड़े हो जायेंगे और देखने लगेंगे ।६८। कु० पा० २४ सू० जुमर रु० ७।।

वक्तव्य—कयामत के दिन सूर फूंकने पर मुर्दे कबरों में से उठ खड़े होने की कुरानी कल्पना इन्जील की नकल है।

(२०) बिना भोगे पाप क्षमा होते हैं

(इन्जील से)

हे बालको ! मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूँ कि उसके नाम से तुम्हारे

पाप क्षमा हुए ।१ यूहन्ना २।१२। तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करेगा । मत्ती ६।१५।।

बिना भोगे पाप क्षमा होते हैं

(कुरान से)

"अल्लाह तमाम पापों को क्षमा कर देता है । वह बख्शने वाला मेहरबान है ।५३।" कु० पा० २४ सू० जुमर रु० ६।।

वक्तव्य—बिना भोगे हुए पापों के क्षमा हो जाने की कल्पना की नकल कुरान बनाने वाले ने इञ्जील से ही की है यह स्पष्ट है ।

(२१) प्रलय के दिन खुदा न्याय करेगा

(इञ्जील से)

"क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिला कर यह बात सब पर प्रमाणित करदी ।" प्रेरितों के काम १७।३१।।

कयामत का फैसला एक दिन में

(कुरान से)

"लोगो अपने परवर्दिगार का डर रखो और उस दिन से डरो कि न कोई बाप अपने बेटे के काम आवेगा और न कोई बेटा अपने बाप के काम आ सकेगा । खुदा का वायदा कयामत के दिन का सच्चा है ।३३।" कु० पा० २१ सू० लुकमान रु० ४ ।

"वह आसमान से जमीन तक का बन्दोबस्त करता है । फिर तुम

लोगों की गिनती के अनुसार हजार वर्ष की मुद्दत का एक दिन होगा।
उस दिन तमाम इन्तजाम उसके सामने गुजरेगा।"

कु० पा० २१ सू० सज्दह रु० १ आ० ५॥

वक्तव्य–कयामत के एक दिन संसार केसभी मनुष्यों के कर्मों के अनुसार फैसला होने की कल्पना मूलतः इञ्जील की थी। कुरानकार ने उसी की नकल करके कुरान में उसे लिख दिया है। एक दिन बराबर हजार साल के होगा यह कुरान बनाने वालों की अपनी नई कल्पना है जिसका समर्थन किसी अन्य ग्रन्थ से नहीं होता है।

(२२) खुदा सिंहासन (बड़ा तख्त) तथा मेज रखता है

(बाइबिल से)

परन्तु तुम लोग उसको यह कह कर अपवित्र ठहराते हो कि यहोवा की मेज अशुद्ध है और जो भोजन वस्तु उस पर से मिलती है वह भी तुच्छ है।" १२। मलाकी १॥

"जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा, मैंने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया।" १। याशायाहु ६॥

खुदा बड़े तख्त (सिंहासन) पर बैठता है

(कुरान से)

"तुम्हारा परवर्दिगार वही अल्लाह है जिसने ६ [illegible]न में आसमान और जमीन को बनाया फिर अर्श पर जा विराजा।"

कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० १॥

"वही है जिसने आसमान और जमीन को ६ दिन में बनाया और उसका तख्त पानी पर था।" कु० पा० १२ सू० हूद रु० १ आ० ७॥

"जो फरिश्ते तख्त को उठाये हुए हैं और जो तख्त के आसपास हैं अपने परवर्दिगार की पाकी के साथ याद करते हैं ··।" ७।

कु० पा० २४ सू० मोमिन रु० १॥

"सो खुदा सच्चा बादशाह बहुत ऊंचा है··· वही बड़े तख्त का मालिक है।११६। कु० पा० १८ सू० मोमिनून रु० ६॥

"उस (कयामत के) दिन तुम्हारे परवर्दिगार के तख्त को ८ फरिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे।" १७। कु० पा० २९ सू० हाक्का रु० १॥

वक्तव्य—ऊपर के वर्णन से स्पष्ट है कि खुदा का ऊंचे तख्त (सिंहासन) पर बैठने की कल्पना बाइबिल वालों की है। उसी की नकल कुरान ने करली है। खुदाई तख्त के पानी पर होने व उसे ८ फरिश्तों द्वारा उठाये रहने की कल्पना कुरान-कार की अपनी है। पर इन कल्पनाकारों से यदि कोई यह पूछ बैठे कि तख्त यदि पानी पर था तो पानी किस पर था? और यदि फरिश्ते थक कर खुदाई तख्त को पटक देवें तो खुदा व तख्त का क्या बनेगा, वह कहां पर गिरेंगे? तथा अनन्त विश्व के कण कण में प्रतिक्षण ज्ञान पूर्वक क्रिया शील रहने वाले सर्व व्यापक ईश्वर को एक देशीय मानने से ईश्वर सीमित-अल्प हो जावेगा तो उन आक्षेपों का कोई उत्तर कुरान व बाइबिल मानने वालों के पास नहीं होगा,

(२३) खुदा में गुस्सा करने का दोष है

(बाइबिल से)

(खुदा ने कहा) "क्रोध के झकोरे में आकर मैंने पल भर के लिए

तुझसे मुँह छिपाया था पर अब अनन्त करुणा से मैं तुझ पर दया करूंगा। तेरे छुड़ाने वाले यहोवा (खुदा) का यही वचन है।"

याशायाह ५४।८॥

खुदा में गुस्सा करने का दोष

(कुरान से)

भला जो शख्स अल्लाह की मर्जी का हो वह उस शख्स जैसा कैसे हो सकता है जो खुदा के गुस्से में आ गया हो और उसका ठिकाना दोजख हो और वह बुरा ठिकाना है।१६३।

कु० पा० ४ सू० आल इमरान रु० १७॥

वक्तव्य—गुस्सा दिमाग की एक बीमारी है। बाइबिल ने खुदा में यह बीमारी होना माना था तो कुरान ने भी खुदा में इस बीमारी होने की नकल करके खुदा को बदनाम कर डाला है।

(२४) सेना सहित खुदा मनुष्यों के साथ युद्ध करता था

(बाइबिल से)

"और यहोवा (खुदा) यहूदा के साथ रहा इसलिये उसने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया, परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे इसलिये वह उन्हें न निकाल सका।" न्यायियों १।१६॥

"यहोवा परमेश्वर तुझको बचाने और तेरे शत्रुओं को हरवाने को तेरी छावनी के मध्य घूमता रहेगा।" व्यवस्था विवरण २३।१४।

सेना सहित खुदा युद्ध के मैदान में गया

(कुरान से)

"ऐ पैगम्बर यह वह वक्त था जब कि तुम्हारा परवर्दिगार फरिश्तों

को (युद्ध क्षेत्र में) आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं। तुम मुसलमानों को जमाये रखो, हम जल्द काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे बस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके टुकड़े टुकड़े कर डालो।

कु० पा० ९ सू० अनफाल रु० २ आ० १२॥

"खुदा काफिरों को मुसलमानों पर हरगिज जीत न देगा।" १४१।

कु० पा० ५ सू० निसा रु० २०॥

वक्तव्य--स्पष्ट है कि खुदा के युद्ध क्षेत्र में अपनी फौज लेकर जाने व लड़ने की बाइबिल की कल्पना की ही नकल कुरान में की गई है। सर्व शक्तिमान परमात्मा फौजें लेकर आदमियों से लड़ने जाता है कुरान व बाइबिल की यह कल्पना हास्यास्पद है।

(२५) दुष्टों को नरक के अग्नि कुण्ड में डाला जावेगा

(इञ्जील से)

जगत के अन्त में ऐसा ही होगा, स्वर्ग दूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे।४९। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।५०। इञ्जील-मत्ती १३॥

पापी दोजख की आग में झोंके जावेंगे

'जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया हम उनको दोजख की आग में झोंकेंगे।" कु० पा० ५ सू० निसा रु० ८ आ० ५६।

"वे चाहेंगे कि आग से निकल भागें मगर वहाँ से नहीं निकल पायेंगे।" ३७। कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ६॥

"तो जो अभागे हैं वह नरक में होंगे, वहाँ उनका चिल्लाना और चीखना होगा।" १०६। सू० हूद पा० १२ रु० ६॥

'यह लोग आग पर सेके जायेंगे।'

कु० पा० २६ सू० जारियात आ० १३॥

'दोजख की आग से डरो जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे।' ।२४। सू० वकर॥

'इनके ऊपर आग का ही ओढ़ना और आग का ही विछौना होगा।' १६। कु० सू० जुमर पा० २३॥

वक्तव्य—स्पष्ट है कि कुरान ने दोजख की कल्पना की नकल इञ्जील से की है। दोजख में लोगों के रोने चीखने की बात भी ज्यों की त्यों इञ्जील से कुरान ने नकल की है।

(२६) खुदा फौजें रखता है

(इञ्जील से)

(स्वर्ग में) फौजों के सवारों की गिनती वीस करोड़ थी, मैंने उनकी गिनती सुनी।१६। और मुझे इस दरशन में घोड़े और उनके सवार दिखाई दिये।१७। प्रकाशित वाक्य।६॥

(यीशु ने कहा) क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूँ और वह स्वर्ग दूतों की बारह पलटन से भी अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा।मत्ती २६।५३॥

खुदा के पास फौजी पलटनें हैं

(कुरान से)

"जब कि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना

काफी नहीं कि तुम्हारा पालन कर्ता तीन हजार फरिश्ते भेजकर तुम्हारी मदद करे ।१२५। बल्कि अगर तुम मजबूत बने रहो और बचो और (दुश्मन) अभी इसी दम तुम पर चढ़ आये तो तुम्हारा परवर्दिगार पाँच हजार फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा ।१२६। (यह मदद) इसलिये थी कि काफिरों को कम करे या जलील करे ताकि असफल वापिस चले जावें ।१२८। कु० पा० ४ सू० आल इमरान रु० १३॥

वक्तव्य—बाइबिल का खुदा फौजें (घुड़ सवार व पैदल सेना) रखता है तो कुरान का खुदा भी उससे पीछे क्यों रहे। कुरान ने भी खुदा को फौजें रखने वाला उसी की नकल में घोषित कर दिया है। खुदा फौजों की मदद का मोहताज है यह उसकी भारी कमजोरी इन किताबों ने मानी है। अतः वह सर्व शक्तिमान नहीं रहा।

(२७) खुदा ने अपनी ही शपथ खाई
(बाइबिल से)

(खुदा ने कहा) मैंने अपनी ही शपथ खाई, धर्म के अनुसार मेरे मुख से यह वचन निकला है और वह नहीं टलेगा ।" याशायाह ४५।२३।

खुदा ने भी खुदा की शपथ खाई
(कुरान से)

"खुदा की कसम तुमसे पहिले हमने बहुत सी उम्मतों की तरफ पगम्बर भेजे । कु० पा० १४ सू० नहल रु० ८ आ० ६३॥

(खुदा ने कहा) मैं तो पूरब और पश्चिम के परवर्दिगार की कसम खाता हूँ ।" ४०। कु० पा० २९ सू० मआरिज रु० २॥

वक्तव्य—बाइबिल में खुदा ने अपनी कसम खाई तो कुरान बनाने वाले ने भी उसी की नकल करके खुदा से खुद अपनी ही कसमें खिला दीं। कसम खाना कोई उत्तम बात नहीं मानी जाती है। सभ्य लोग कसम खाना पाप समझते हैं। जिसकी बात का विश्वास नहीं होता है उसकी कसम पर भी कोई विश्वास नहीं करता है। खुदा का कसमें खाना उसकी कमजोरी प्रगट करता है। उसकी शान में बट्टा लगता है।

(२८) आकाश लपेटा व तारे पृथ्वी पर झड़ पड़े
(इञ्जील से)

"और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आँधी से हिल कर अञ्जीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं।१३। और आकाश ऐसे सरक गया जैसे पत्र लपेटने से सरक जाता है।" १४।

प्रकाशित वाक्य ६॥

यही वर्णन कुरान में

"और सूर्य और चन्द्रमा जमा किये जावेंगे।९।

सू० कयामत पा० २९॥

"जिस वक्त सूरज लपेट लिया जाय।१। और जिस वक्त तारे झड़ पड़ें।" २। कु० पा० ३० सू० तकवीर॥

"जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं।" १०४। कु० पा० १७ सू० अम्बिया रु० ७॥

वक्तव्य—स्पष्ट है जमीन पर सूरज चांद व तारों को कयामत के दिन जमा करने व आकाश को कागज की तरह

लपेटने की वे तुकी बातें कुरान बनाने वाले ने विना अक्ल से सोचे समझे इञ्जील से नकल करली हैं। इस जमीन से १३ लाख गुना बड़ा सूरज जमीन पर कहां रखा जावेगा यह मौलाना लोग हमको वतावें ?

(२९) दया करना या दण्ड देना ईश्वर की मर्जी पर है
(इञ्जील से)

"सो वह (खुदा) जिस पर चाहता है उस पर दया करता है और जिसे चाहता है उसे कठोर कर देता है।" रोमियो ९।१८॥

क्षमा या सजा खुदा की मर्जी पर है
(कुरान से)

क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमान और जमीन में अल्लाह ही की हुकूमत है, जिसको चाहे सजा दे और जिसको चाहे क्षमा करे, अल्लाह हर चीज पर ताकतवर है।४०।

कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ६ ॥

"इसी (खुदा) ने एक गिरोह को हिदायत दी और एक गिरोह को भटका दिया।" ३०। कु० पा० ८ सू० आराफ रु० ३॥

'अल्लाह सलामती के घर (जन्नत) की तरफ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है।" २५।

(खुदा ने कहा) फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे।२६।

कु० पा० ११ सू० आराफ रु० ३॥

वक्तव्य--इञ्जील ने क्षमा करना या दण्ड देना खुदा की मर्जी पर निर्भर होना लिख दिया तो कुरान ने उसकी नकल

करके खुदा के हाथ में बिना कारण क्षमा या सजा की बात रहने दी बल्कि लोगों को नेक रास्ता दिखाना तथा दूसरों को बिना कारण गुमराह करने का अधिकार भी खुदा पर छोड़ दिया है। क्या यही खुदाई न्याय है कि बिना वजह किसी पर कृपा और किसी पर सजा डाल दे। यदि किसी न्यायाधीश के सामने यह बात रखी जावे तो उसका निर्णय होगा कि खुदा घोर अन्यायी आदमी है। सजा या पुरस्कार लोगों के कर्मों के अनुसार उनको देना ही न्याय होगा। इसमें खुदा की मर्जी को कोई स्थान नहीं हो सकता है। पर कुरानकार को तो हर भली बुरी बात को दूसरी किताबों से बिना सोचे समझे नकल करना इष्ट था। वही उसने किया है और यही कुरान की विशेषता है चाहे उससे खुदा की पाक जात कितनी ही कलंकित क्यों न हो जावे, उसे इससे सरोकार नहीं।

(३०) खुदा कयामत को किताबों से न्याय करेगा

(इञ्जील से)

"फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को (खुदा के) सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं, और फिर एक और पुस्तक खोली गई अर्थात् जीवन की पुस्तक, और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।" १२। प्रकाशित वाक्य २०॥

खुदा किताबें देखकर न्याय करेगा

(कुरान से)

"फिर दुबारा सूर फूंका जायगा। फिर वे (मुर्दे) खड़े हो जायेंगे और देखने लगेंगे।६८। और जमीन अपने परवर्दिगार के नूर से चमक

उठेंगी और कितावें रख दी जायेंगी और उनमें पैगम्बर गवाह हाजिर किये जायेंगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जायगा और उन पर जुल्म न होगा।६६। कु० पा० २४ सू० जुमर रु० ७।।

कुकर्मी लोगों के कर्म रोजनामचा और कैदियों के रजिस्टर में हैं।७। अच्छे मनुष्यों का कर्म लेखा वड़े रुतवे वाले लोगों के रजिस्टर में है।१८। कु० पा० ३० सू० ततफीफ रु० १।।

वक्तव्य--खुदा लोगों के कर्मों का रजिस्टर (रोजनामचा) रखता है और कितावें भी रखता है। कयामत के दिन उनको देखकर हर एक का फैसला करेगा, यह कल्पना इञ्जील की थी। कुरानकार ने उसे खुदा के नाम से ज्यों की त्यों नकल करली है। यह उसकी अपनी कल्पना नहीं रही है यह कल्पना प्रकाशित वाक्य पुस्तक में सर्व प्रथम लिखी गई। इञ्जील में विभिन्न लेखकों द्वारा लिखित २७ पुस्तकें संग्रहीत की गई हैं जो समय समय पर लिखी गई थीं। प्रकाशित वाक्य पुस्तक मिस्टर यूहन्ना साहब ने लिखी थी जो कि इञ्जील में तीन अध्यायों (पुस्तकों के) लेखक थे।

(३१) व्यभिचार के लिये औरतों की लूट

(तौरात से)

"परन्तु स्त्रियाँ और वाल बच्चे और पशु आदि जितनी लूट उस नगर में हो उसे अपने लिये रख लेना, और तेरे शत्रुओं की लूट जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना।" १५।

व्यवस्था विवरण २० ।।

व्यभिचार के लिये औरतें लूटो

(कुरान से)

"मगर जो (औरतें) कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिये तुमको खुदा का हुक्म है। और इनके अलावा दूसरी सब औरतें हलाल हैं जिनको तुम माल देकर कैद में लाना चाहो...।" कु० पा० ५ सूरे निसा रुकू ४ आ० २४।

वक्तव्य—व्यभिचार के लिए शत्रुओं वा विजित लोगों की औरतों को लूट लाना यह तौरात की व्यवस्था थी। इस बुराई की भी नकल कुरान बनाने वाले ने उसमें से ज्यों की त्यों करली है। संसार युद्ध में भी शत्रुओं के बच्चों – बूढ़ों व स्त्रियों तथा निरपराधों पर अत्याचार करना पाप कर्म मानता है। खेद है कि तौरात व क़ुरान ने इस बुराई को भी जायज माना है। इसी आधार पर पाकिस्तानी फौजों ने बंगला देश की लाखों औरतों से व्यभिचार किया था।

(३२) शराब पीने का निषेध

(बाइबिल से)

"वेश्यागमन और दाख मधु और ताजा दाख मधु ये तीनों बुद्धि को भ्रष्ट करते हैं।" ११। होशे ३॥

"दाख मधु से धोखा होता है।" ५ हबक्कु २॥

जुआ व शराब निन्दा

(कुरान में)

(ऐ पैगम्बर !) तुमसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं तो

कहदो कि इन दोनों में बड़ा पाप है, और लोगों के लिये फायदे भी हैं, मगर इनके फायदे से इसका पाप वढ़कर है।" २१६। कु० पा० २ सूरे बकर रुकू २७॥

शराब, जुआ और बुत ये गन्दा काम हैं इनसे बचो।६०।

कु० सूरे मायदा आ० ६ रु० १२॥

वक्तव्य—शराब की निन्दा की नकल कुरान ने बाइबिल से की है यह स्पष्ट है।

(३३) खुदा शराब पिलाता था

(बाइबिल से)

सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये जेवनार करेगा, जिसमे भाँति-भांति का चिकना भोजन और निथरा हुआ दाख मधु (शराब) होगा।६। याशायाह २५॥

"यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों को उत्तर दिया—सुनो, मैं अन्न और नया दाख मधु और ताजा तेल तुम्हें देने पर हूँ"।१९। योएल २॥

यीशु ने उनसे कहा— मटकों में पानी भरदो, सो उन्होंने मुँहामुँह भर दिया ।७। तब उसने उनसे कहा अब निकाल कर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।८। वे ले गये, जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा तो दाख रस (शराब) बन गया था।९। यूहन्ना २॥

खुदा शराब पिलाएगा

(क़ुरान से)

और उनका परवर्दिगार उन्हें पाक शराब पिलावेगा।२१।

निःसन्देह सुकर्मी प्याले (शराब के) पीवेंगे जिनमें कपूर की मिलावट होगी ।५। कु० पा० २९ सूरे मुर्सलात ॥

"उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जायगी ।२५। जिस बोतल की मौहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिये कि उसकी इच्छा करें ।२६। कु० पा० ३० सूरे ततफीफ ॥

वक्तव्य—बाइबिल ने शराब की निन्दा की तो कुरान ने उसकी नकल करके खुद भी निन्दा करदी। जब बाइबिल में लिखा गया कि खुदा तथा उसके बेटे ईसा ने शराब लोगों को स्वयं पिलाई तो कुरान ने भी तपाक से नकल में लिख दिया कि खुदा लोगों को कपूर व कस्तूरी की मिलावट की बढ़िया शराब पिलायेगा। नकल करने वालों में अपनी अक्ल कम होती है। यह स्पष्ट है कि कुरान में तौरात, इञ्जील और जबूर की हर बात की नकल बे सोचे समझे की गई है।

(३४) कयामत के दिन पहाड़ टल जायेंगे

(इञ्जील से)

"और हर एक पहाड़ और टापू अपने स्थान से टल गया ।१४।

प्रकाशित वाक्य ६ ॥

पहाड़ चलने लगेंगे

(कुरान से)

"और पहाड़ चलने लगेंगे" ।१०। कु० पा० २७ सूरे तूर रुकू १ ॥

वक्तव्य—पृथ्वी के अन्दर मीलों गहरे पहाड़ जमीन पर

अपने स्थान से चलने लगेंगे यह गल्प इञ्जील वाले ने लिखदी तो बिना सोचे समझे कुरान में उसकी नकल करली गई यह स्पष्ट है ।

(३५) खुदा ने चमड़े के अंगरखे पहनाये

(इञ्जील से)

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अँगरखे बनाकर उनको पहिना दिये ।" उत्पत्ति ३।२१॥

लोगों को खुदा ने चमड़े के डेरे बनाकर दिये

(कुरान से)

"और अल्लाह ही ने चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए डेरे बनाये कि तुम अपने कूँच के वक्त और अपने ठहरने के वक्त उनको हल्का पाते हो···"।८० कु० पा० १४ सूरे नहल रु० ११॥

वक्तव्य—तौरात में यदि खुदा ने चमड़े के अँगरखे पहिनाना लिखा तो कुरान ने चमड़े के डेरे बनाकर देने की बात लिख दी। कुरान ने खुदा के इस हुनर के बारे में तौरात की नकल की है यह स्पष्ट है । खुदा को ऊनी, सूती, रेशमी, टैरीकॉट अथवा टैरालिन के कपड़े बनाने अथवा जीन के तम्बू बनाने की बात उस जमाने में शायद ज्ञात नहीं थी ।

(३६) औरत को तलाक

(कुरान से)

यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को व्याह ले और उसके बाद उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिए त्यागपत्र

लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे ।१। और जब वह उसके घर से निकल जाये तब दूसरे पुरुष की हो सकती है ।२। परन्तु यदि वह उस दूसरे पुरुष को भी अप्रिय लगे, और वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे ।३।। व्यवस्था विवरण २४ ।।

औरत को तलाक

(कुरान से)

तलाक दो दफे (करके दी जाय) ।२२९। अब अगर औरत को (तीसरी बार) (पति ने) तलाक देदी तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न करले उस (पहिले पति) के लिए हलाल नहीं (हो सकती) । हाँ अगर (दूसरा पति उससे विषय भोग करके) उसको तलाक दे दे तो दोनों मियां बीवी पर कुछ पाप नहीं ।२३०।

कुरान पारा २ सूरे बकर रुकू २९।

नोट—तलाक का दस्तूर यह है कि जब कोई मुसलमान मर्द अपनी औरत को तलाक देता है तो कम से कम दो आदमियों के सामने देता है । और इसी तरह एक महीने के बाद दूसरी तलाक भी इसी तरह देता है । यहाँ तक तो मियाँ बीवी में समझौता हो सकता है । इसके एक महीने बाद तीसरी तलाक दी जाती है, इस तलाक देने के बाद मर्द औरत के पास नहीं जा सकता है । यह औरत ३ माह १० दिन बाद निकाह कर सकती है । दूसरे पति से निकाह होने पर अगर दूसरा पति तलाक दे दे तो सिर्फ इस हालत में कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग करा चुकी हो अपने पूर्व पति के साथ निकाह कर सकती है । परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ निकाह करके सम्भोग न कराले, कदापि पूर्व पति से निकाह नहीं कर सकती है ।

वक्तव्य—तलाक की प्रथा की तौरात से कुरान ने नकल की है तथा विधि में कुछ परिवर्तन अपने यहां की स्थिति के अनुसार कर लिया है। तलाक की हुई औरत गैर आदमी से संभोग करा आवे केवल तभी उसका पूर्व पति उसे पुनः ले सकता है, यह विचित्र व्यवस्था केवल इस्लाम में ही देखने को मिलती है। इसमें वैज्ञानिक रहस्य क्या है इसे कुरान मानने वाले ही समझ सकते हैं, हम तो नही समझ सके हैं। उल्माये कुरान कृपया इसे स्पष्ट करें।

(३७) एक पक्ष में यहोवा लड़ता था

"यहोवा इस्राएल की ओर से लड़ता था।"

तौरात-यहोशू ।१०।१३।

खुदा मुसलमानों की ओर से लड़ता था

"वह वक्त था जब तुम्हारा परवर्दिगार (युद्ध क्षेत्र में) आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं तुम मुसलमानों को जमाये रखो…।"१२

कुरान पारा ९ सूरे अन्फाल रुकू २।

वक्तव्य—खुदा को मुसलमानों की ओर से युद्ध में लड़ाना तौरात में लिखे खुदा (यहोवा) के इस्राएल के पक्ष में लड़ने की स्पष्ट नकल है। कुरानी खुदा अकेला लड़ने नहीं गया था वह फौजें भी ले गया था जो उसकी मदद करती रही थीं अन्यथा काफिर खुदा को हराकर अवश्य कैदी बना लेते।

(३८) चाची, मौसी, सास, माँ, बेटी, बहिन, सौतेली बहिन, बेटे की बहू आदि हराम हैं ।

(तौरात से)

यदि कोई अपनी सौतेली मां के साथ सोए....वे दोनों निश्चय मार डाले जायें ।११। और यदि कोई अपनी पतोहू (पुत्र वधू) के साथ सोए तो वे दौनों निश्चय मार डाले जायें ।१२। यदि कोई अपनी पत्नी और अपनी सास दौनों को रखे तो यह महापाप है । इसलिये वह पुरुष और वे स्त्रियाँ तीनों आग में जलाये जायें ।१४। यदि कोई अपनी बहिन का चाहे उसकी सगी बहिन हो या सौतेली उसका नग्न तन देखे तो यह निन्दित बात है ; वे दोनों अपने जाति भाइयों की आँखों के सामने नाश किये जायें ।१७। और अपनी मौसी वा फूफी का तन न उघाड़ना क्योंकि जो उसे उघाड़े वह अपनी निकट कुटुम्बिन को नंगा करता है । यदि कोई अपनी चाची के संग सोए...वे दौनों अपने पाप के भार को उठाये हुए निर्वंश मर जायेंगे ।२०। तौरात—लै० व्यवस्था २० ।

शापित हो वह जो अपनी सास के साथ कुकर्म करे ।२४।

व्यवस्था विवरण २७ ।

कुरान में इसकी नकल

(कुरान से)

तुम्हारी मातायें, बेटियाँ और तुम्हारी बहिने और तुम्हारी बुआयें और तुम्हारी मौसियाँ और भाञ्जियाँ, भतीजियाँ और तुम्हारी मातायें जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और दूध शरीकी बहिनें और तुम्हारी सासें तुम पर हराम हैं ।...तुम्हारे बेटों की स्त्रियाँ और दो बहिनें एक साथ रखना भी तुम पर हराम है । मगर जो हो चुका सो हो चुका । बेशक

अल्लाह माफ करने वाला मेहरबान है ।२३।

कु० पा० ४ सूरे निसा रु० ४ ।

वक्तव्य—कुरान ने तौरात की व्यवस्था की नकल की है यह स्पष्ट है ।

(३९) व्यभिचारी स्त्री व पुरुषों को दण्ड

(तौरात से)

"फिर यदि कोई पराई स्त्री के साथ व्यभिचार करे तो जिसने किसी दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो तो वह व्यभिचारी और व्यभिचारिणी दोनो निश्चय मार डाले जायें ।" १०। तौरात ।

लै० व्यवस्था २० ।

व्यभिचारी स्त्री पुरुषों को दण्ड

(कुरान से)

"और तुम्हारी औरतों में से जो औरतें बदकारी की अपराधिन हों तो उन पर अपने लोगों में से चार गवाही लो । अगर गवाह तस्दीक करें तो उनको घरों में बन्द रखो यहाँ तक कि मौत उनका काम तमाम कर दे या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाले ।१५। और जो दो शख्स तुम लोगों में बदकारी के अपराधी हों तो उनको मारो पीटो...।१६।

कु० पा० ४ सूरे निसा रु० ३ ।

"मर्द और औरत छिनाला करें तो दोनों में से हर एक को सौ-सौ कोड़े मारो । तुमको उन पर तरस न आना चाहिये...।"२।

कु० पा० १८ सूरे नूर रुकू १ ।

वक्तव्य—स्पष्ट है कि कुरान ने व्यभिचारी को दण्ड देने की तौरात से नकल की है।

(४०) विधवाओं का बिवाह करो

(इञ्जील से)

"इसलिये मैं यह चाहता हूँ कि जवान विधवाएँ विवाह करें और बच्चे जनें और घर बार संभालें और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें।१४। १ तिमूथियुस।

विधवा बिवाह करो

(कुरान से)

"और अपनी विधवाओं के निकाह करादो।"३२।

कु० पा० १८ सूरे नूर रुकू ४।

वक्तव्य—विधवा बिवाह का यह नियम कुरान ने इन्जील से नकल किया है।

(४१) खुदा के भी दुश्मन हैं

(बाइबिल से)

यहोवा (खुदा) बदला लेने वाला और ज़लजलाहट करने वाला हैं और यहोवा अपने द्रोहियों से बदला लेता है और अपने शत्रुओं का पाप नहीं भूलता।

(बाइबिल) १ नहुम २।

खुदा के भी दुश्मन हैं
(कुरान से)

(ऐ पैगम्बर) जो लोग अल्लाह और अखीर दिन का विश्वास रखते हैं उनको न देखोगे कि खुदा और उसके पैगम्बर के दुश्मनों के साथ दोस्ती रखे....।२२। कु० पा० २८ सूरे मुजदिल रुकू ३।

(४२) मुर्दों में से दोजखी छांटे जायेंगे
(इन्जील से)

जगत के अन्त में ऐसा ही होगा ; स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे ।४९। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा ।५०। मत्ती १३।

मुर्दों में से दोजखी छाँटे जायेंगे
(कुरान से)

"तो (ऐ पैगम्बर) तेरे परवर्दिगार की कसम हम उन्हें शैतानों के साथ इकट्ठा करेंगे और नरक के गिर्द घुटनों के बल बैठायेंगे ।६८। फिर हर फिर्के में से उन लोगों को अलग करेंगे जो खुदा से अकड़े फिरते थे ।६९। फिर जो लोग नरक में जाने के लायक हैं हम उनको खूब जानते हैं ।७०। कु० पा० १६ सूरे मरियम रु० ५।

वक्तव्य—स्पष्ट है कि कयामत के दिन सभी का इकट्ठा होना और फरिश्तों का उनमें से दोजखी लोगों को छांटने की बात कुरान ने इन्जील से ली है।

(४३) सभी को कर्मों का फल यहीं मिलेगा

(बाइबिल से)

देख धर्मी को पृथ्वी पर फल मिलेगा तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा। नीति वचन ११।३१॥

कर्मों का फल यहां भी मिलेगा

(कुरान से)

"और जो शख्स दुनियाँ में बदला चाहता है हम उसका बदला यहीं देते हैं। जो कयामत में बदला चाहता है उसको वहीं दूँगा।"

कुरान पा० ४ सूरे आल इमरान रु० १५ आ० १४६॥

वक्तव्य—यहां जमीन पर कर्मों का फल मिलेगा इस बात को बाइबिल से नकल करके कुरान में लिखा गया है।

सातवाँ अध्याय

कुरान में खुदा का गलत दावा

कुरान को मान्य पुरानी किताबों के चन्द वे स्थल जो कुरान में नहीं दिए गये हैं, जब कि कुरानी खुदा का यह दावा है कि—

"ऐ पैगम्बर ! तुझ से वही बात कही जाती है जो तुझसे पहिले पैगम्बरों से कही जा चुकी है।"

कु० पा० २४ सूरे हामीम सज्दह रुकू ५ आ० ४३।

प्रश्न—कुरान में खुदा का उपरोक्त दावा यदि सत्य है तो इस अध्याय में दिये गये चन्द प्रमाणों को कुरान के विद्वान कुरान में लिखा दिखावें। अन्यथा खुदा का दावा गलत मानना होगा। कुरान के अन्दर खुदाई दावे के अनुसार वही बातें होनी चाहिए जो पुरानी किताबों में मौजूद होवें।

पुरानी किताबों [तौरात, जबूर, और इञ्जील] की

निम्न बातें कुरान में खुदा ने क्यों नहीं कहीं ?

१. खुदा मनुष्यों को बनाने से पछताया

और यहोवा (खुदा) पृथ्वी पर मनुष्यों को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित (दुःखी) हुआ। तौरात उत्पत्ति ६।६।

प्रश्न—खुदा के पछताने की बात क़ुरान में क्यों नहीं दी गई है।

२. खुदा बहुत से हैं

परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है। वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है। भजन संहिता ८२।

खुदा ने कहा—"मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के मानिन्द हो गया।" तौरात उत्पत्ति ३।२२।

प्रश्न—खुदा बहुत से हैं यह बात तौरात की क़ुरान शरीफ में खुदा ने क्यों नहीं बताई है ?

३. ईसा खुदा का इकलौता बेटा था

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र (ईसा) दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास रखे वह

नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये।१६ यूहन्ना ३ (इञ्जील)

प्रश्न—यह बात कुरान में क्यों नहीं दी गई है ?

४. बाप–बेटी का व्यभिचार व बिवाह जायज

"और यदि कोई यह समझे कि मैं अपनी उस क्वारी का हक्क मार रहा हूँ जिसकी जवानी ढल चली है, और प्रयोजन भी होय, तो जैसा चाहें वैसा करें इसमें पाप नहीं, वे बाप बेटी ब्याहे जायें (Let them marry)"। इञ्जील। १ कुरैन्थियो ७।

प्रश्न—कुरान में खुदा ने यह खूबसूरत व्यवस्था क्यों नहीं दी ?

५. तौरात द्वारा समर्थित लूत का पुत्री-गमन

"और लूत ने सोअर छोड़ दिया और पहाड़ पर रहने लगा, क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था, इसलिये वह और उसकी दौनों बेटियां एक गुफा में रहने लगे।३०। तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, हमारा पिता बूढ़ा है और पृथ्वी भर में ऐसा कोई पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए।३१। सो आ हम अपने पिता को दाख मधु पिला कर उसके पास सोयें जिससे कि हम अपने पिता के वंश को बचाये रखें।३२। सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाख-मधु पिलाया। तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई, पर उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई।३३। और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा कि देख, कल मैं अपने पिता के पास सोई, सो आज भी रात को हम उसको दाख-मधु (शराब) पिलायें तब

तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें ।३४। सो उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाख मधु पिलाया और छोटी वेटी उसके पास लेट गई पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न था ।३५। इस प्रकार लूत की दोनों वेटियाँ अपने पिता से गर्भवती हुईं ।३६। (और पुत्र जनी) ।

प्रश्न—कुरान द्वारा खुदाई किताव घोषित की जाने वाली पुस्तक तौरात में वाप बेटी के व्यभिचार व शादी को कहीं भी बुरा काम नहीं वताया गया है, किन्तु उसकी व्यवस्था है। इस खुदा द्वारा समर्थित पवित्र काम का कुरान में खुदा बन्द ताला ने जिक्र क्यों नहीं किया ?

६. खुदा के अनेक बेटे थे

"एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए और उनके वीच शैतान भी आया।" अय्यूव १।६।

प्रश्न—खुदा के वहुत से बेटे बेटियां अपने हैं, ईसा भी उनमें से शायद एक था। इस महत्वपूर्ण वात का वर्णन कुरान में खुदा ने क्यों नहीं किया है ?

७. खुदा की खुराक

"यहोवा (खुदा) कहता है तुम्हारे वहुत से मेल वलि मेरे किस काम के है। मैं तो मेढ़ों के होम वलियों से पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूँ।" याशायाह १।११।

खुदा ने कहा—"जव इस्राएली मेरे पास से भटक गए थे, वे मेरी

सेवा टहल करने को मेरे समीप और मुझे चर्बी और लहू चढ़ाने को मेरे सम्मुख खड़े हुआ करें, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।"

यहेजकेल ४४।१५।

प्रश्न—खुदा की खुराक चर्बी और खून है, उसी से उसकी भूख मिटती है और वह पेट भरता है, इस बढ़िया बात का जिक्र उसने अपनी किताब कुरान में न करने की भूल क्यों की है ? अगर कोई प्रेम से खुदा को बादाम-पिस्ते-जलेबी-लड्डू-पेड़े बालूशाही या अंगूर-सेब भेंट करके खिलावे तो खुदा उनको खावेगा या नहीं, यह भी स्पष्ट किया जावे, या सड़ा गोश्त ही खावेगा।

८. खुदा को मुकद्दमेबाजी का भी शौक था

खुदा ने कहा—"और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊंगा और वह मेरे फन्दे में फँसेगा और मैं उसको बाबुल में पहुँचा कर उस विश्वासघात का मुकद्दमा उससे लड़ूँगा जो उसने मुझसे किया था।"

यहेजकेल १७।२०।

प्रश्न—खुदा की मुकद्दमेवाजी, खुदा के वकील तथा कचहरी के मजिस्ट्रेट का हाल, इन सारी बातों में से एक भी बात का जिक्र खुदा ने कुरान मजीद नाम की अपनी किताब में क्यों नहीं किया जिसका पहिली किताबों में वह पहिले जिक्र कर चुका है ?

९. जमीन खम्भों पर रखी है

"क्योंकि पृथ्वी के खम्भे यहोवा (खुदा) के हैं और उसने उन पर

जगत धरा है।" १ शैमुएल २।८।

प्रश्न—जमीन भी मकान की छत की तरह खम्भों पर रखी हुई है यह बात यदि सत्य है तो खुदा ने कुरान में क्यों नहीं लिखी ? अगर गलत है तो पहिली किताबों में ऐसी बेतुकी बात क्यों लिखी थी ? कुरान के विद्वान कृपा कर खुलासा करें।

१०. खुदा युद्ध में हार गया

"और यहोवा (खुदा युद्ध में) यहूदा के साथ रहा इसलिये उसने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया, परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे इसलिये वह उन्हें न निकाल सका।"

न्यायियो १।१६।

प्रश्न—खुदा ने अपनी इस भयंकर हार का उल्लेख पहिली किताब में किया तो कुरान में उसका जिक्र क्यों नहीं किया है ? यदि किया है तो कहां पर किया है ? खुदा भी मनुष्यों से हार जाता है यह बढ़िया बात रही है।

११. रविवार को आग जलाने वाला भी मार डाला जावे

खुदा ने कहा—"छः दिन तक तो काम काज किया जावे, परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे लिए पवित्र और यहोवा के लिए विश्राम का दिन ठहर ; उसमें जो कोई काम काज करे वह मार डाला जाये।२। वरन विश्राम के दिन तुम अपने घरों में आग तक न जलाना।३।

तौरात निर्गमन ३५।

प्रश्न—इस वहतरीन हुक्म का खुदा ने कुरान में जिक्र क्यों नहीं किया ताकि मुसलमान लोग जो रविवार को काम काज करते हैं, चाय पीते, रोटी पकाते, दूकानदारी करते, होटल चलाते हैं वे काम करने के पाप से बच जाते ?

१२. खुदा को याकूब से कुश्ती हुई

"तब याकूब आप अकेला रह गया तब कोई पुरुष आकर पह फटने तक उससे मल्ल युद्ध करता रहा।२४। जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता तब उसकी जाँघ की नस को छुआ ; सो याकूब की जाँघ की नस उससे मल्ल युद्ध करते चढ़ गई।२५। तब उसने कहा मुझे जाने दे ; क्योंकि भोर हुआ चाहता है ; याकूब ने कहा जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।२६। और उसने याकूब से पूछा—तेरा नाम क्या है ? उसने कहा याकूब।२७। उसने कहा तेरा नाम याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है।२८। तब याकूब ने यह कर उस स्थान का नाम पनीएल रखा कि परमेश्वर को आमने सामने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।" तौरात उत्पत्ति ३२।

प्रश्न—खुदा की आदमी से कुश्ती रात भर हुई और दोनों पहलवान बराबरी पर छूटे। कोई भी किसी को पछाड़ नहीं पाया। इस अत्यन्त महत्वपूर्ण बात का जब खुदाई किताब तौरात में उल्लेख किया गया है तो कुरान में उसे क्यों नहीं लिखा गया है ? क्या इसलिए खुदा ने नहीं लिखाया कि इससे खुदा की बदनामी होती थी ? हमारा ख्याल है कि यदि याकूब को फ्रीस्टाइल कुश्ती का अभ्यास होता तो खुदा को अवश्य वह चारो खाने चित्त पटक देता।

१३. खुदा ने दुनियां का न्याय करना ईसा के सुपुर्द किया है

"और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र (ईसा) को सौंप दिया है।" यूहन्ना ५।२२।

प्रश्न—इन्जील में लिखी यह बात कुरान में क्यों नहीं लिखी गई है जब कि कुरान ने इन्जील को खुदाई किताब माना है? हजरत मुहम्मद साहब को भी खुदा ने न्याय विभाग ईसा की तरह क्यों नहीं सुपुर्द किया था? क्या इन्जील की उक्त बात गलत हो सकती है।

१४. खुदा पृथ्वी पर से मेल नष्ट करायेगा

(स्वर्ग में) "फिर एक घोड़ा निकला, जो लाल रंग का था, उसके सवार को यह अधिकार दिया गया कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले, ताकि लोग एक दूसरे का वध करें और उसे एक बड़ी तलवार दी गई।"
(प्रकाशित वाक्य ६।४ इञ्जील)

प्रश्न—यह महत्वपूर्ण बात आसमानी किताब इन्जील में जब लिखी है तो कुरान में खुदावन्द करीम ने इसका जिक्र क्यों नहीं किया? क्या इन्जील की इस बात से यह साबित नहीं होता है कि ईसाई खुदा पूरा शैतान है जो जमीन के लोगों के मेल मिलाप व उनके सुख को देखकर जलता है और उन्हें बरबाद कराने के उपाय किया करता है?

कुरान शरीफ में भी मुस्लिम खुदा ने कहा है—

"हमको जब किसी गांव को मार डालना मंजूर होता है, हम उसके खुशहाल लोगों को आज्ञा देते हैं। फिर वे उसमें बे-हुक्मी करते हैं तब उन पर यह सजा साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को मार कर तबाह कर देते हैं।

कु० पा० १५ सूरे बनी इसरायल रु० २।१६।

इस आयत में भी मुस्लिम खुदा बताता है कि खुशहाल लोगों की खुशहाली से चिड़कर खुदा जब उन्हें मार डालना चाहता है तो उनको ऐसे खराब हुक्म देता है जिन्हें वे पूरा नहीं कर पाते हैं और तब खुदा उन्हें बरबाद कर देता है। कृपया बतावें कि ईसाई और मुस्लिम खुदा कहीं आपस में भाई-भाई तो नहीं हैं जो एक ही जैसी हरकतें मनुष्यों को तबाह करने को किया करते हैं?

१५. खुदा कपड़े पहिनता है

"जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा मैंने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया।"

याशायाह ६।१।

प्रश्न—खुदाई किताब के ऊपर के विवरण से यह तो स्पष्ट है कि खुदा कपड़े भी पहिनता है पर यह नहीं बताया गया कि वह अङ्गरखा, कोट, पैन्ट, चूड़ीदार पाजामा पहिनता है या धोती कुरता पहिनता है और वह कपड़े सूती-रेशमी ऊनी-टैरीकाट के या टैरालिन के होते हैं या चमड़े के बने होते हैं। खुदा की पोशाक की यह महत्वपूर्ण बात जब बाइबिल में दी है तो कुरान में उसे क्यों नहीं दिया गया है?

१६. खुदा डाक्टर भी था

"देख मैं इस नगर का इलाज करके इसके निवासियों को चंगा करूंगा और उन पर पूरी शान्ति और सच्चाई प्रगट करूंगा।"

यिर्मियाह ३३।६।

प्रश्न—खुदा किस पैंथी से इलाज करता था, यूनानी से, ऐलोपैथी से या आयुर्वेद की जड़ी बूटियों से, यह बात नहीं खोली गई है, यदि खोल दी जाती तो उत्तम रहता। तथा कुरान शरीफ में खुदा ने अपनी हिकमत के बारे में यह बात क्यों नहीं बताई है? यदि बताई है तो कहां पर?

१७. खुदा सवेरे टहलता व सैर करता था

"यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंड के समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द उन (आदम हव्वा) को सुनाई दिया।८। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर उनसे पूंछा, तू कहाँ है।९। तौरात उत्पत्ति ३।

प्रश्न—खुदा सवेरे शाम बागों में घूम-घूम कर सैर किया करता था यह मजेदार बात खुदा ने अपने बारे में कुरान में क्यों नहीं बताई? आखिर अर्श पर बैठे-बैठे मन ऊब जाने पर खुदा का टहलना कोई बुरी बात तो थी नहीं जो कुरान में जिक्र करने की जरूरत उसने न समझी हो।

१८. सृष्टि उत्पत्ति का क्रम

तौरात अध्याय उत्पत्ति १ में सृष्टि उत्पत्ति का क्रम दिया है कि खुदा ने पहिले दिन घोर अंधियारे में उजाला पैदा किया और दिन व

रात बना दिये। दूसरे दिन आकाश बनाया। और तीसरे दिन समुद्र बनाये। चौथे दिन समुद्र और सूखी जमीन बनाई। जमीन पर घास-फल वृक्ष आदि पैदा किये। सूर्य व चन्द्रमा भी बनाये, तारागणों की रचना की। पाँचवे दिन जल व नभ में जीव-जन्तु बना दिये। छठे दिन पृथ्वी पर जीव जन्तु तथा मनुष्य (आदम) को अपने ही स्वरूप के समान बनाया और उन्हें फूलने फलने का आशीर्वाद दिया।

प्रश्न—चौथे दिन सूरज चांद बनाये पर तीन दिन उससे पहिले कैसे हो गये ? तथा आदम और उसकी पसली निकाल कर हव्वा औरत को बना कर उन दोनों की सन्तान भाई बहिन के व्यभिचार से जगत में मनुष्यों की उत्पत्ति यह सारा विलक्षण उत्पत्ति क्रम खुदा ने कुरान में क्यों नहीं बताया ? सिर्फ आदम व हव्वा की उत्पत्ति और उनसे संसार में मनुष्यों के फैलाव की ही बात क्यों बताई है ? प्रारम्भिक सृष्टि उत्पत्ति क्रम का वर्णन तो प्रत्येक धर्म पुस्तक में अवश्य ही होना चाहिए।

१९. खुदा तलवार से लड़ता था

(खुदा ने कहा) "इसलिए कि मैं तुझसे धर्मी और अधर्मी सबको नाश करने वाला हूँ, कारण मेरी तलवार मियान से निकल कर दक्षिण से उत्तर तक सब प्राणियों के विरुद्ध चलेगी।५। तब सब प्राणी जान लेगें कि यहोवा (खुदा) ने मियान में से अपनी तलवार खींची है।६।

यहेजकेल २१॥

प्रश्न—ईसाई खुदा तलवार हाथ में लेकर मनुष्यों से लड़ने आता था यह महत्वपूर्ण बात खुदा ने कुरान में क्यों नहीं बताई है ? आम लोगों को यह पता ही नहीं है कि खुदा लाठी-तलवार

भाला-वन्दूक-स्टेनगन-ब्रेनगन-रिवालवर इनमें से किस हथियार से लड़ता था ? जनता की जानकारी के लिए खुदा ने कुरान में इस बात को क्यों नहीं दिया ?

२०. लिङ्गहीन खुदा की सभा में न जावेगा

"जिसके अण्डकोप कुचल गये वा लिंग काट डाला गया हो वह यहोवा की सभा में न आने पाये ।"२।

तौरात व्यवस्था विवरण २३॥

प्रश्न—यह आदेश मुसलमानों की जानकारी के लिए कुरान शरीफ में भी क्यों नहीं दिया गया ताकि लिंग कटे मुसलमान खुदा के वहिश्त में जाने की उम्मीद छोड़ देते ? यह भी खुलासा किया जावे कि अण्डकोषों और लिंग को खुदा की सभा में साथ ले जाना क्यों आवश्यक वताया गया है ? क्या खुदा के यहां जाने वालों की जांच के लिए इन्सपैक्टर नियत हैं जो इस वात के लिये सभी मर्दों के शरीर की जांच किया करते हैं ?

२१. अत्याचार का बदला लेने का उपदेश

"जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा गाल भी फेर दे, और जो तेरी दोहर छीन ले उसको कुरता लेने से भी न रोक ।२९। जो कोई तुझ से माँगे उसे दे, जो तेरी वस्तु छीन ले उस से न माँग ।३०। जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उनके साथ वैसा ही करो ।३१।

लूका ६ (इञ्जील)

प्रश्न—यह अत्यन्त सुन्दर उपदेश कुरान में क्यों नही दिया गया जो कि खुदा ने ईसा से इन्जील में कहलवाया था। इसके विपरीत जुल्म के बदले जुल्म करने का उपदेश खुदा ने इस इन्जील के विरुद्ध कुरान पा० २ सू० वकर रु० २२ आ० १७८ में जान के बदले जान, और औरत के वदले औरत को कत्ल करने वा छीन लेने का हुक्म देकर (वदला लेने का हुक्म देकर) गलत काम क्यों किया है ? खुदा के दो परस्पर विरुद्ध आदेशों को देखकर उसकी कम समझी पर सभी को तरस आवेगा। क्या हम यह मान लेवें कि दोनों किताबों के वनाने वाले ईसाई और मुस्लिम खुदा अलग-अलग दो हस्तियां थी ?

२२. दण्ड का विचित्र प्रकार

"यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तुझे ठोकर, खिलाये, तो काटकर फेंक दे। टुण्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये उनसे भला है कि दो हाथ और दो पाँव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाय।८। यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाये तो उसे निकाल कर फेंक दे।९।

इन्जील-मत्ती ८।

प्रश्न—जब भलाई बुराई का कारण मन है न कि हाथ पैर या आंख, तो मन को काबू में न करके हाथ पैर-आंख को काट डालने से मनुष्य का सुधार कैसे हो सकेगा ? यह वात हमारी समझ में नहीं आई। यदि विना मन को काबू किये हाथ पैर या आंख निकाल देने से ही सुधार हो जाता है तो खुदा ने इस बढ़िया न्याय की वात को कुरान में क्यों नहीं वताया ?

२३. गर्भ के बालक ने हाथ में डोरा बंधाया

जब उसके जनने का समय आया तब यह जान पड़ा कि उसके गर्भ मे जुड़वां बच्चे हैं ।२७। और जब वह जनने लगी तब एक बालक ने अपना हाथ बढ़ाया और धाय ने लाल सूत लेकर उसके हाथ में यह कहते हुए बांध दिया कि पहिले यही उत्पन्न हुआ ।२८। जब उसने हाथ समेट लिया तब उसका भाई उत्पन्न हो गया, तब उस धाय ने कहा तू क्यों बरबस (जबर्दस्ती) निकल आया है····· पीछे उसका भाई जिसके हाथ में लाल सूत बंधा था उत्पन्न हुआ ।२६-३०।

तौरात-उत्पत्ति ३८।

गर्भ में बालकों की मारपीट

(इसहाक की बाँझ पत्नी) रिब्का गर्भवती हुई और लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपटे हुए एक दूसरे को मारने लगे तब उसने कहा मेरी जो ऐसी दशा रहेगी तो मैं क्यों कर जीवित रहूँगी ।२२।

तौरात, उत्पति २५।

प्रश्न—खुदाई किताब तौरात की संसार के डाक्टरों-वैज्ञानिकों तथा अक्लमन्दों को हैरत में डाल देने वाली ये दोनों बातें कुरान शरीफ में क्यों नहीं दी गई हैं जब कि मूसा की जादूगरी की साधारण कहानियां तक उसमें दी गई हैं ?

२४. खतना प्रथा का प्रारम्भ

"फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा तू भी मेरे साथ बंधी हुई वाचा का पालन करना । तू और तेरा वंश भी अपनी-अपनी पीढ़ीमें उसका पालन करे ।६। मेरे साथ बंधी हुई वाचा जो तुझे और तेरे वंश को पालनी

पड़ेगी, सो यह है कि तुममें से हर एक पुरुष का खतना हो।१०।तुम अपनी खलड़ी का खतना करा लेना, जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा।११। पीढ़ी-पीढ़ी में केवल तेरे ही वंश के लोग नहीं, पर जो तेरे घर में उत्पन्न हों या परदेशियों को रुपया देकर मोल लिये जांय ऐसे सब पुरुष भी जब आठ दिन के हो जायें तब उनका खतना किया जाय, सो यह मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग युग तक रहेगी।१३। जो पुरुष खतना रहित रहे अर्थात जिसकी खलड़ी का खतना न हो वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाय, क्योंकि उसने मेरे साथ बंधी हुई वाचा को तोड़ दिया।१४।

तौरात-उत्पत्ति १७।

"इसलिये परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि इस्राएलियों के बीच जितने अन्य लोग हैं, जो मन और तन दोनों से खतना हीन हैं, उनमें से कोई मेरे पवित्र स्थान में न आने पाये।६।

यहेजकेल ४४।

प्रश्न—क़ुरान शरीफ में खतना कराने या न कराने की कोई आज्ञा नहीं है किन्तु सभी मुसलमान अपना खतना कराते हैं। तब यह बहुत ही जरूरी बात थी कि खुदा को अपना यह हुक्म क़ुरान में भी उतार देना था। इतना महत्वपूर्ण हुक्म क़ुरान में शायद इसलिये खुदा ने नहीं उतारा कि यह खतना प्रथा केवल इस्राएलियों के ही लिये था। तब यहूदियों की खतना प्रथा को बिना खुदा के हुक्म या उसकी मर्जी के इस्लाम में जारी रखना कुफ्र क्यों नहीं है ?

आठवाँ अध्याय

कुरान की विलक्षण बातें

जिनका जिक्र कुरान की मान्य पुरानी खुदाई किताबों तौरात जबूर और इञ्जील में नहीं है किन्तु कुरान में है

(कुरान का दावा है कि खुदा ने मुहम्मद साहब से कुरान में केवल वही बातें कही हैं जो पहिले पैगम्बरों से तौरात जबूर व इञ्जील में कही थीं ।)

प्रमाण स्वरूप निम्न आयत देखें

"ऐ पैगम्बर ! तुझ से वही बात कही जाती है जो तुझसे पहिले पैगम्बरों से कही जा चुकी है । बेशक तेरा परवर्दिगार क्षमा करने वाला और उसकी सजा दुःखदायी है ।४३।

कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५।

हम इस अध्याय में अनेक ऐसे स्थल कुरान शरीफ से उद्धृत करते हैं जिनको हम तौरात जबूर व इञ्जील में नहीं पा सके हैं । इनमें अनेक स्थल बुद्धि-विरुद्ध इतिहास-विरुद्ध ईश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव के विरुद्ध तथा असम्भव बातों से युक्त भी हैं ।

हमको मुस्लिम विद्वान इन स्थलों को पुरानी किताबों में लिखा दिखावें तथा इनको सत्य सिद्ध करके बतावें। हमारी निगाह में यह स्थल क़ुराने मजीद की शान को कम करने वाले हैं और बुद्धिवान लोगों की समझ में भी आने वाले नहीं हैं। साथ ही हमतो यह भी मानते हैं कि खुदा इस प्रकार की बातें नहीं कह सकता है, न उसने पहले पैगम्बरों से यह बातें कभी कही थीं, इसीलिए पुरानी किताबों में इनका जिक्र नहीं है। सम्भवतः लोगों ने बाद को ये लचर बातें कुराने मजीद में अपनी ओर से गढ़गढ़ कर जोड़ दी हैं ताकि उसे और खुदा की पाक जात को कलङ्कित किया जा सके। यदि हमारे इस विचार से मुस्लिम विद्वान सहमत नहीं हैं तो वे इसका समाधान पेश करें। और इनको क़ुरान की मान्य पुरानी इलहामी किताबों में लिखा दिखावें अन्यथा कुरान का यह दावा कि जो कुछ कुरान में है वह सब पहिले पैगम्बरों से भी खुदा ने कहा था बिलकुल गलत और बे बुनियाद साबित हो जायेगा। तथा कुरान इलहाम नहीं रहेगा क्योंकि खुदाई किताबों में झूठ का प्रवेश आगे से या पीछे से कैसे भी नहीं हो सकता है जो कि स्वयं कुरान में लिखा है।

●

कुरान में विलक्षण बातें

१. हराम और हलाल परिभाषा

"पस अगर तुम लोगों को उसके हुक्मों का विश्वास है तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उस चीज को खाओ ।११८। क्या सवव है कि तुम उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, हालांकि जो चीजें खुदा ने तुम पर हराम कर दी हैं वह पूरी तरह तुममे बयान करदी हैं। वह चीज कि हराम तो है मगर भूख वगैरह की वजह से तुम उस पर मजबूर हो जाओ (तो वह भी हराम नहीं) ।११।

"जिस पर खुदा का नाम न लिया गया हो, उसमें से मत खाओ, और उसमें से खाना पाप है···· ।"१२१।

कु० पा० ८ सूरे अनआम रु० १४।

वक्तव्य— कुरान शरीफ की दृष्टि में केवल खुदा का नाम ले देने से ही प्रत्येक पदार्थ हलाल (ग्रहण करने योग्य) वन जाता है और नाम न लिया जाय तो वह हराम (ग्रहण न करने योग्य) वन जाता है। यह परिभाषा समझमें इसलिए उचित नहीं वैठती हैं क्यों कि केवल खुदा का नाम ले लेने से किसी भी पदार्थ के उसके विकारी गुण बदल नहीं जाते हैं। जो भी पदार्थ शरीर को मन को अथवा बुद्धि को हानि पहुंचाने वाले होते हैं, अथवा जिनके सेवन से देश वा समाज को हानि हो सकती है उनका प्रयोग करना हराम होता है और जिनके सेवन वा ग्रहण करने से लाभ होता है वह हलाल माने जाते हैं। हराम और हलाल हानि लाभ की दृष्टि से होते हैं चाहे खुदा का नाम उन

पर लिया जावे या नहीं अन्न व ताजी जल लाभ करता है अतः हलाल है, किन्तु तीव्र ज्वर रोगी को वह हानि करता है अतः हराप होगा। यही बात सर्वत्र हराम हलालपर लागू होगी। यदि खुदा का नाम ले लेने मात्र से स्वास्थ के लिए हानिकारक पदार्थ अपना गुण परिवर्तन करके लाभकारी बन जावें तब तो हराम हलाल खुदा के नाम पर निर्भर कर सकता है अन्यथा नहीं। अतः कुरान की परिभाषा समझ में आने योग्य नहीं है।

कुरान यह भी कहता है कि मजबूरी में हर हराम पदार्थ हलाल माना जावेगा। इस ढील देने का अर्थ यह हुआ कि वस्तुतः न कुछ हराम है और न हलाल है। चाहे जो खाओ कुछ भी पाप नहीं है, खुली छुट्टी है। नियम में अपवाद होने पर हर व्यक्ति उस अपवाद से लाभ उठाकर नियम को बेकार बना देता है। नियम अपवाद रहित होने पर ही सख्ती से पालन किया वा कराया जा सकता है। कुरान में यह कमजोरी है कि उसमें लगभग सभी नियमों में अपवाद शामिल हैं।

२. कयामत के दिन सूरज चांद जमा किये जावेंगे

"और (कयामत के दिन) सूर्य और चन्द्रमा जमा किये जावेंगे।"
कु० पा० २९ सू० कयामत

"और जब (कयामत के दिन) सितारे झड़ पड़े।"
२। पा० ३० सू० इन्फितार

वक्तव्य—सूरज चांद और तारों को झाड़कर जमा किया जाना बताना बुद्धिमानी की बात नहीं है। यह कहां पर जमा किये जावेंगे यह नहीं बताया गया है। सम्भव है अरब के रेगि-

स्तान में कोई जगह खुदा ने वना रखी हो। क्योंकि कयामत के फैसले की कचहरी भी खुदा की सम्भवतः वहीं पर लगेगी।

३. बिना खम्भों का आसमान

"इसी ने आसमानों को जिनको तुम देखते हो, वगैर खम्भों के खड़ा किया है और जमीन में पहाड़ों को डाल दिया कि तुम्हें लेकर जमीन झुक न पड़े।"१०।

कु० पा० २१ सूरे लुकमान रु० १।

वक्तव्य—शून्य आकाश को बिना खम्भों के खड़ा करने की बात कहना खुदा की अक्लमन्दी का खुला सबूत है। जमीन पहाड़ों की वजह से किसी ओर नहीं झुकेगी यह बात भी खुदा की विशेष बुद्धि की परिचायक है। विद्वान लोग अरब के खुदा की योग्यता की परीक्षा करें।

४. आसमान व जमीन खुदा की बातें सुनेंगे

जब आसमान फट जायगा।१। और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगा और यह उसका फर्ज ही है।२। और जब जमीन तान दी जावेगी।३। और जो उसमें है बाहर डाल देगी और खाली हो जावेगी।४। और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगी और यह तो उसका फर्ज ही है।५।

कु० पा० ३० सू० इन्शिकाकं

वक्तव्य—शून्य आकाश का फटना और खुदा की बात सुनना यह भी विलक्षण बात है इसी तरह जमीन में से सभी कुछ अलग अलग हो जावेगा तो जमीन नाम की कोई चीज ही बाकी न रहेगी तो फिर खुदा की बात कौन व कैसे सुनेगा। क्या

जमीन व आसमान भी खुदा की निगाह में कोई जानवर हैं और सुनते व समझते हैं ? जमीन क्या चादरा है जो तान दी जावेगी ?

५. सूरज निकलने व डूबने की जगहें

"यहां तक कि सूरज के डूबने की जगह पर पहुँचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काली काली कीचड़ के कुण्ड में डूब रहा है। और देखा कि उस (कुण्ड) के करीब एक जाति वसी है। हमने (खुदा ने) कहा कि ऐ जुल करने न चाहो सजा दो या इनको भला बनाओ।८६।

"यहां तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पहुँचा तो उसको ऐसा मालूम हुआ कि सूरज कुछ लोगों पर निकलता है जिनके लिए हमने सूरज के इधर कोई आड़ नहीं रखी।"६०।

कु० पा० १६ सू० कहफ रु० ११।

"सूरज निकलने और डूबने की जगहों का मालिक।"१७।

कु० पा० २७ सू० रहमान रु० १।

वक्तव्य—सूरज आसमान में इस जमीन से १३ लाख गुना बड़ा व ६ करोड़ मील ऊँचा (दूर) है न तो वह किसी कुण्डी या तालाब में से निकलता है और न किसी तालाब में डूबता है। न उसके किनारे पर कोई जाति वसी है। कुरान बनाने वाले को खगोल विद्या का ज्ञान कितना था, यह इसी से प्रगट है कि वह सूरज निकलने और डूबने की जगह भी मानता था।

६. पहाड़ो ! नमाज पढ़ो

और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बढ़ाई दी। ऐ पहाड़ो और परिन्दो ! दाऊद के साथ रुजू होकर (नमाज) पढ़ो और दाऊद के लिये हमने लोहे को मुलायम कर दिया।१०।

कु० पा० २२ सू० सबा रु० २।

"हमने पहाड़ों को उनके कब्जे में रखा था कि सुबह शाम उनके साथ पवित्र बोला करें।"१८। कु० पा० २३ सू० साद रु० २।

"बाज पत्थर ऐसे भी हैं जो खुदा के डर से गिर पड़ते हैं।"७४।

कु० पा० १ सूरे बकर रु० ६।

वक्तव्य—बेजान पदार्थ पहाड़ों को आदेश देना कि वे भी रुजू होकर (नमाज) पढ़ा कर विलक्षण बात है। कुरान में आसमान, जमीन और दोजख की खुदा से बातें करने का विवरण दिया है तो पहाड़ों के पढ़ने की बात भी उसी प्रकार की समझ में न आने वाली नहीं है। पत्थरों को भी डर लगता है। यह कहना भी समझदारी की बात नहीं हैं।

७. बहिश्ती गिलमें हमेशा लड़के ही रहेंगे

उन (बहिश्ती जवानों) के पास लोंडे हैं जो हमेशा (लड़के) ही बने रहेंगे।१८।

कु० पा० २७ सू० वाकिआ रु० १।

वक्तव्य—ये गिलमें (खूबसूरत लोंडे) उस अपनी उम्र के बढ़ने पर शरीर से बड़े क्यों नहीं होंगे ? और यदि ये बड़े होने पर दाढ़ी मूँछ वाले बन जावें तो बहिश्ती जवानों को उन्हें

इस्तेमाल करने और उनसे सेवा लेने में क्या रुकावट पड़ेगी ? कम उम्र के बिना बाल वाले लड़कों का लालच बहिश्ती मुसलमानों को खूदा ने किस लिए दिया था, इस रहस्य को खुलासा किया जावे ? यह लालच औरतों व लोंडों का तौरात जबूर और इञ्जील में यहूदी व ईसाइयों को क्यों नहीं दिया गया है ? जो कि कुरान से पहिले की किताबों के रूप में कुरान को मान्य हैं।

नोट—कुरान के हिन्दी टीकाकार ने गिलमों के लिए लोंडा शब्द का प्रयोग किया है वही हमने लिखा है।

८. खुदा बैठता लेटता भी है

(खुदा) जो जोरावर है फिर सीधा बैठा।६। और वह आसमान के ऊँचे किनारे पर था।७। फिर वह नजदीक हुआ और करीब आ गया।८। फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया।९। उस वक्त खुदा ने फिर अपने बन्दे (मुहम्मद) पर हुक्म भेजा।१०।"

कु० पा० २७ सू० नज्म रु० १।

वक्तव्य—इस आयत से स्पष्ट है कि खुदा ऊँचे आसमान पर शायद लेटा था, फिर उठ कर सीधा बैठ गया और नीचे जमीन की ओर खिसक आया यहां तक कि मोहम्मद साहब के बिलकुल नजदीक दो कमान की दूरी पर आ गया। इससे प्रगट है कि खुदा सर्व व्यापक (हाजिर नाजिर) नहीं है। वह थक कर लेटता-बैठता व घूमने भी जाता होगा। तौरात उत्पत्ति ३।८ में भी लिखा है कि खुदा (यहोवा) परमेश्वर जो दिन के ठंड के समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द (आदम) को सुनाई

दिया।" इससे खुदा का सवेरे सैर को घूमने का शौक स्पष्ट है। खुदा स्वर्ग में रहता है जो बहुत दूर स्थान माना गया है। इसी लिये फरिश्तों की मदद का मोहताज रहता है और हर बात को याद्दाश्त के लिये रजिस्टरों में लिखाता रहता है क्या उस आयत से खुदा की पाक जात पर आक्षेप नहीं आता है, मुसलमान भाई विचार करें।

९. सूरज चिराग व चांद को रोशन बनाया

"वही है जिसने सूरज को चमकीला बनाया और चाँद को रोशन और उनकी मंजिले ठहराई ताकि तुम लोग वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो।"५।

कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० १।

"और उनमें चन्द्रमा को उजेले के लिये और सूर्य को चिराग बनाया।"१६।

कु० पा० २९ सू० नूह रु० १।

"और उसी ने सूरज और चन्द्रमा बस में कर रखे हैं कि दोनों बंधे हुए वक्तां तक चल रहे हैं।"१३।

कु० पा० २२ सू० फातिर रु० २।

"और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को पैदा किया कि यह सब खुदा के फर्मां वर्दार हैं।"५४।

कु० पा० ८ सू० आराभ रु० ७।

"न तो सूरज ही से बन पड़ता है कि वह चांद को पकड़े और न रात ही दिन से आगे आ सकती है और हर कोई एक-एक घेरे में फिरते हैं।"४०।

कु० पा० २३ सू० यासीन रु० ३।

वक्तव्य —चन्द्रमा को रोशन बताना विद्या के विरुद्ध बात है। चांद को रोशनी सूरज से मिलती है, स्वतः उसमें कोई प्रकाश नहीं है, यह बात विज्ञान से सिद्ध हो चुकी है तथा वैज्ञानिक लोग चांद पर जाकर भी देख चुके हैं। अतः कुरान की बात सही नहीं है कि चांद को खुदा ने रोशन बनाया है।

चांद सूरज व तारे जानदार नहीं हैं वे जमीने हैं (लोक हैं) फर्मावर्दार वह होता है जो समझ रखता हो। और समझ कर हुक्म का पालन करता हो। अतः इन जड़ लोकों को फर्मावर्दार कहना भी खुदा का सही नहीं है।

चांद और सूरज का दौड़ लगाना और एक दूसरे को पकड़ न सकने की बात कहना भी गलत है। चांद जमीन से दो लाख अड़तीस हजार मील दूर है जब कि सूरज नौ करोड़ मील हमारी जमीन से दूर हैं। सूरज अपने ही स्थान पर घूमता हैं और चांद हमारी जमीन के साथ घूमते हुए अपने दायरे में घूमता रहता हैं। तब सूरज और चांद का एक दूसरे को पकड़ न सकने की बात कहना ही बेतुकी सी बात हैं। कुरान का उक्त वर्णन विद्या एवं विज्ञान दोनों के विरुद्ध है।

१०. खुदा ने गाली दी

"(ऐ पैगम्बर) किताब वालों और (अरब) के जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम को मानते हो (या नहीं)। अगर इस्लाम माने, तो बेशक वे सच्चे रास्ते पर आ गये और अगर मुंह मोड़ें, तो तेरा जिम्मा पहुँचा देना है और बस अल्लाह वन्दों को खूब देख रहा है।२०।

कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० २।

वक्तव्य— गाली देना सभ्यता की बात नहीं मानी जाती है। खुदा का अरब के रहने वालों को 'जाहिल' कहना उसकी सभ्यता को प्रगट करता है और उसकी शान में धब्बा लगाता हैं। पता नहीं कुरान के मानने वाले खुदा की तौहीन करने वाली इस आयत को कैसे बर्दाश्त करते हैं।

११. खुदा का तख्त पानी पर था

"वही है जिसने आसमान और जमीन को ६ दिन में बनाया और उसका तख्त क्रिब्रियाई (पानी) पर था ·· ।"७।

कु० पा० १२ सू० हूद रु० १।

(कयामत को) आसमान फट जायगा और वह उस दिन सुस्त हो जायगा।१६। और फरिश्ते किनारे पर होंगे और उस दिन तुम्हारे परवर्दिगार के तख्त को आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे।"१७।

कु० पा० २९ सू० हाक्का रु०; १।

वक्तव्य—इसमें कई बातें विचारणीय है। कुरान में खुदा के तख्त का पानी पर होना लिखा है तो प्रश्न है कि फिर वह पानी किस पर था? जमीन बनने से पहिले पानी के ठहरने का आधार क्या था? खुदा का तख्त कितना लम्बा चौड़ा था? खुदा उस पर बैठता है तो पूरा तख्त घिर जाता है या कुछ हिस्सा खाली भी रहता है? खुदा के तख्त को उठाने वाले आठ फरिश्ते यदि थककर उसे पटक देवें तो खुदा और तख्त कहां गिरेगा? खुदा यदि तख्त पर बैठता है तो वह सीमित (महदूद) हो गया, लामहदूद (अनन्त) विश्व में मौजूद न रहेगा तथा विशाल अनन्त आकाश खुदा से भी बड़ा सावित हो जावेगा क्योंकि आकाश के

थोड़े से हिस्से में खुदा और उसका तख्त समा जायेगा। यदि तख्त बड़ा होगा तो खुदा तख्त से भी छोटा हो जायेगा। यदि तख्त छोटा होगा तो खुदा उस पर आराम से बैठ या लेट भी न सकेगा। तख्त खुदा ने बनाया था या किसी और ने बनाया था? तख्त बनने से पहिले खुदा किस पर बैठता था? यदि तख्त भी खुदा के साथ अनादि है तो खुदा की और तख्त की उम्र बराबर होने से उम्र के मामले में खुदा और तख्त बराबर हुए, तब खुदा तुलना रहित नहीं रहा? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर कुरान मानने वालों को देना होगा। और गम्भीरता से इस आयत पर विचार करना होगा।

१२. मुस्लिम पक्षपाती खुदा

"जानो कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है।"

कु० पा० ९ सू० अनफाल रु० २ आ १९।

"दीन तो खुदा के नजदीक यही इस्लाम है।"१९।

कु० पा० ३ सू० आलइमरान रु० २।

"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहाँ उसका वह दीन कबूल नहीं और वह कयामत में नुकसान पाने वालों में से होगा।"८५।

कु० पा० ४ सू० आलइमरान रु० ९।

"खुदा काफिरों को मुसलमानों पर हरगिज जीत न देगा।"१४१।

कु० पा० ५ सू० निसा रु० २०।

(खुदा ने कहा) हमने तुम्हारे लिये दीन इस्लाम को पसन्द किया।३।"

कु० पा० ६ सू० मायदा रु० १।

वक्तव्य—जो खुदा एक मजहब या एक कौम का ही पक्षपाती हो वह वे इन्साफ तथा जालिम है। वह खुदाई के योग्य नहीं है और न किसी को उस पर विश्वास करना चाहिये। ऐसे पक्षपाती अरबी खुदा से तो हमारे यहां के निष्पक्ष मुंसिफ वा मजिस्ट्रेट लाख गुना श्रेष्ठ हैं जो न्याय के मामले में किसी का पक्ष कभी नहीं करते हैं। समझदार लोग इसीलिये मुस्लिम खुदा व उसके दीन इस्लाम से दूर रहते हैं जो कि उचित नहीं है। कुरानी खुदा निष्पक्ष नहीं हैं।

१३. खुदा का भोजनालय बहिश्त में

(खुदा ने कहा) मैंने तुम पर बादल की छाया की और तुम पर मन और सलवा भी उतारा और हमने जो तुमको पवित्र भोजन दिये हैं खाओ……।"५७।

कु० पा० १ सू० बकर रु० ६।

"हमने याकूब के बेटों पर बादल की छाया की और उन पर मन और सलवा उतारा कि यह सुथरी रोजी है जो हमने तुमको दी है खाओ…… ।१६०।

कु० पा० ६ सू० आराफ रु० २०।

(बहिश्त में) जिस किस्म के पक्षी का माँस उनको अच्छा लगे (खुदा देगा) ।२२। उनके पास लड़के हैं जो हमेशा (लड़के ही) बने रहेंगे ।१८। उनके पास आबखोरे और लोटे और साफ शराब के प्याले

लाते और ले जाते होंगे ।१८। और बड़ी-बड़ी आँखो वाली हूरे जैसे छिपे हुए मोती।२३। हमने हूरों की एक खास सृष्टि बनाई है।३५। फिर इनको क्वारी बनाया है ।३६। प्यारी-प्यारी समान अवस्था वाली ।३७। यह स दाहिनी तरफ वालों (मुसलमानों) के लिए हैं (जन्नत में मिलेंगी) ।"

कु० पा० २७ सू० वाकिआ

नोट — मन = मीठी चीज जो रात को पत्तों पर जम जाती है । सलवा = बटेर जैसे पक्षी का मांस ।

वक्तव्य—कुरान का बहिश्त एक तरह का होटल जैसा हैं जिसमें पका हुआ मांस, शराबें, खूबसूरत गोरे चट्टे लौंडे और प्यारी-प्यारी खूबसूरत कम उम्र की अछूती हूरें खुदा वहां जाने व रहने वाले मुसलमानों को (Supply) दिया करेगा । इस जमीन पर भी ऐश के शौकीन लोगों को अनेक होटलों में इन बातों का ठीक जैसा प्रबन्ध अनेक देशों में मिलता हैं खुदा ने भी अपने बहिश्त में वह सब तैयार कर रखा है जिसका विज्ञापन स्वयम् खुदावन्द करीम साहब ने कुराने-मजीद में बार बार बड़ी शान के साथ किया है । किन्तु यह सब नसीब केवल मुसलमानों को ही होगा क्योंकि यह अरबी खुदा का इस्लामी बहिश्त होगी हिन्दू व यहूदी, ईसाई लोग इसकी उम्मेद न करें । क्या यह सच भी है ?

१४. बहिश्त में सोने के कंगन मिलेंगे

(खुदा ने कहा)"यही लोग हैं जिनके रहने के लिए (जन्नत में) बाग हैं । इन लोगों के (मकानों के) नीचे नहरें बह रहीं होंगी । वहां सोने के कंगन पहिनाये जायेंगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहिने

(और) वहाँ तख्तों पर तकिया लगाये बैठेंगे। (क्या ही) अच्छा बदला है और क्या खूब आराम है।"३१।

कु० पा० १५ सू० कहफ रु० ४।

वक्तव्य—ये कंगन १४ कैरट सोने के होंगे या खालिस सोने के होंगे तथा वे किस देश के कारीगरों द्वारा बनाये गये होंगे अथवा खुदा स्वयम् उनको बनावेगा। यदि खालिस सोने के होंवे तो बहिश्त के मैनेजर को सूचित कर दिया जावे कि उन्हें भारत में न बनवावें वरना भारत सरकार खुदाई सोना भी जब्त करके केस चला देगी। बहिश्ती मर्दों को हाथों में कंगन के साथ पैरों में भी क्या कोई जेवर पहिनने को मिलेगा यह नहीं बताया गया है।

१५. अल्लाह इन्सान को मदद मांगता है

कुरान में लिखा है 'ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे पाँव जमाये रखेगा।"७।

कु० पा० २६ सू० मुहम्मद रु० १।

वक्तव्य—इस आयत में मनुष्यों से खुदा की मदद करने की प्रार्थना की गई है और यह भी बताया गया है कि खुदा भी अपनी मदद करने वालों का बदला चुकावेगा।

मनुष्यों से मदद मांगने वाला खुदा मनुष्यों से कमजोर सिद्ध है इसलिए वह इन्सान की मदद का मौहताज है। इस आयत से खुदा कमजोर व मदद का मौहताज सिद्ध होता है। क्या वास्तव में खुदा ऐसा ही है जैसा कि कुरान शरीफ उसे बताता है? तब

वह सर्व शक्तिमान (कादिरे मुतलक) कैसे माना जा सकता है? इस पर उलमाये इस्लाम विचार करें।

१६. खुदा रजिस्टर (रोजनामचा) रखता है

"और यह (लोग) कह देते हैं कि हम मानते है लेकिन जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इनमें से कुछ लोग रातों को कहे के खिलाफ सलाह करते हैं और जैसी जैसी सलाहें रात को करते हैं अल्लाह लिखता जाता है ...।"८१।

कु० पा० ५ सू० निसा० रु० ११।

"और लोगों की कारगुजारियों का रजिस्टर रखा जायगा तो (ऐ पैगम्बर) तुम गुनहगारों को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में हैं उससे डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य यह कैसा रजिस्टर है और जो कुछ इन लोगों ने किया था कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखी हो, मौजूद पावेंगे और तुम्हारा परवर्दिगार किसी पर बेइन्साफी नहीं करेगा।"४६।

कु० पा० १५ सू० कहफ रु० ६।

"सो जो आदमी नेक काम करें और वह ईमान भी रखता हो तो उसकी कोशिश व्यर्थ होने वाली नहीं और हम उसको लिखते जाते हैं।"६४।

कु० पा० १७ सू० अम्बिया रु० ७।

"और हम किसी आदमी का ताकत से बढ़ कर बोझ नहीं डालते और हमारे यहाँ (लोगों के काम का) रजिस्टर है जो ठीक हाल बताता है। और उन पर अन्याय नहीं होगा।"६२।

कु० पा० १८ सू० मोमिन रुकू ४।

"हम मुर्दों को जिलाते हैं और जो आगे भेज चुके हैं उनकी निशानी

हम लिख रहे हैं और हमने हर चीज खुली असल किताब में लिख ली है।"१२।
कु० पा० २२ सू० यासीन रु० १।

"या ख्याल करते हैं कि हम इनके भेद और मशविरे जानते हैं और हमारे फरिश्ते इनके पास लिखते हैं।"८०।

कु० पा० २५ सू० जुखरुफ रु० ७।

"यह हमारा दफ्तर है तुम्हारे काम ठीक बतलाता है। जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे।"२६।

कु० पा० २५ सू० जासियह रु० ४।

"कुकर्मी लोगों के कर्म रोजनामचा और कैदियों के रजिस्टर में है।७। और (ऐ पैगम्बर) तू क्या समझे कि कैदियों का रजिस्टर क्या चीज है।८। वह एक किताब है जिसकी खाना पूरी होती रहती है।९। अच्छे लोगों का कर्म लेखा बड़े रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में है ।१८। और (ऐ पैगम्बर) तुम क्या समझो कि बड़े रुतबे वालों का रजिस्टर क्या चीज है।१९। एक किताब है (जिसकी खाना पूरी होती रहती है।)२०। फरिश्ते जो नजदीक हैं उन पर तैनात हैं।२१।

कु० पा० ३० सू० ततफीफ रु० १।

"कोई मनुष्य नहीं जिस पर चौकीदार न हों।"४।

कु० पा० ३० सू० तारिक।

"जब दो लेने वाले उसके दांये और बांये बैठे हुए लेते जाते हैं।१६। जो बात आदमी बोलता है उसके पास निगहबान मौजूद हैं।१७।

कु० पा० २६ सू० काफ रु० २।

वक्तव्य—कुरान यह बताता है कि हर मनुष्य के साथ हर समय दो फरिश्ते लगे रहते हैं और वे उसके हर भले व बुरे काम की बात भले व बुरे लोगों के पृथक-पृथक रजिस्टरों में लिखते रहते हैं। यह रजिस्टर खुदा अपने यहां रखता है। खुदा

के यहां इस काम के रजिस्टर रखने का एक दफ्तर है और वहां रजिस्टरों की रक्षा के लिये फरिश्ते तैनात रहते हैं।

ऐसा मालूम होता है कि खुदा भी कोई कोतवाल या तहसीलदार साहब जैसा प्रबन्धक होगा और उसके यहां भी महाफिजखाने का दफ्तर होगा जिसमें यह सारा रिकार्ड सुरक्षित रहता होगा। यदि कोई शैतान जो कि खुदा का दुश्मन है वहां घुस कर दफ्तर में आग लगादे या चोरी कर ले तो कयामत के फैसले का सारा इन्तजाम खुदा का बिगड़ जावेगा। खुदा की याद्दाश्त तो कुरान ने इतनी कमजोर मानी है कि उसे हर बात डायरी में यादगार के लिए लिख लेनी पड़ती है। खुदा की एक डायरी तो लोहे महफूज नाम की है जिसमें खुदा ने सभी कुछ लिखकर याद्दाश्त के लिए रख लिया है। इन रजिस्टरों के सफे कागज के हैं या धातु के पत्र हैं यह जिल्द बंधे हैं या खुले हुए पत्रे रखे जाते हैं यह भेद कुरान में नहीं खोला गया है। इनका स्टाक इस जमीन पर है या आकाश में कहीं पर है यह भी नहीं बताया गया है।

कुछ भी हो खुदा के यहां रोजनामचा का भरा जाना, रजिस्टरों को रखने को दफ्तर होना, पहरेदारों को उनकी रक्षा को खुदा का तैनात करना आदि बातें मनोरंजक होने के साथ विचारणीय भी हैं कि क्या सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ परमात्मा की इन बातों से मजाक नहीं उड़ती है। समझदार मुसलमानों को इन बातों पर गौर करना चाहिये। हमको तो इन बातों की सच्चाई पर पूरा-पूरा शक है। कुरानेपाक ने खुदा को मामूली इन्सान जैसा कम अक्ल बताकर उसकी शान को गिराया ही है, कुछ बढ़ाया नहीं है।

१७. खुदा से पैगम्बर वकील लड़ेंगे

"सुनो तुमने दुनियां की जिन्दगी में उनकी तरफ होकर झगड़ा कर लिया तो कयामत के दिन उनकी तरफ से अल्लाह के साथ कौन झगड़ा करेगा और कौन उनका वकील होगा।

कु० पा० ५ सूरे निमा आ० १०९ रुकू १५।

"हर गिरोह का एक पैगम्बर है तो जब वह (उनका पैगम्बर) अपने गिरोह में आता है तो उसके गिरोह में न्याय के साथ फैसला होता है और लोगों पर जुल्म नहीं होता।"

कु० पा० ११ सूरे यूनिस आ० ४७ रु० ५।

"और (ऐ पैगम्बर !) हमने तुमसे पहिले भी बस्तियों ही के रहने वाले आदमी ही (पैगम्बर बनाकर) भेजे थे और हमने उन पर खुदाई पैगाम भेजा था ......।"

कु० पा० १३ सूरे यूसुफ आ० १०९ रुकू १२।

"जब कभी हमने कोई पैगम्बर भेजा तो उन्हीं की जबान में (बातचीत करता हुआ) भेजा ताकि वह उनको समझा सके...।४।

"काफिरों ने अपने पैगम्बरों ने कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे या फिर तुम हमारे मजहब में आ जाओ...।

कु० पा० १३ सूरे इब्राहीम आ० १३ रुकू० २

"हमने हर एक गिरोह में एक पैगम्बर भेजा है...।"

कु० पा० १४ सूरे नहल रुकू० ५ आ० ३६।

"और हमने तुमसे पहिले भी अगले लोगों के गिरोहों में पैगम्बर भेजे थे।" कु० पा० १४ सू० हिज्र आ० १०।

"(कयामत के दिन) जब हम हर गिरोह में उन्हीं में का एक गवाह (पैगम्बर) उनके सामने खड़ा करेंगे। और (ऐ पैगम्बर) तुमको इनके सामने गवाह बनाकर लावेंगे....।"

कु० पा० १४ सूरे नहल आ० १६ रुकू १२।

"बड़ी बढ़ती तो उस दिन की है जब हम हर एक गिरोह को उनके पेशवाओं समेत बुलावेंगे।"

कु० पा० १५ सू० इसराइल आ० ७१

"हर एक गिरोह में हम एक गवाह (पैगम्बर) अलग करेंगे फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो तब जानेंगे कि अल्लाह की बात सच्ची है..।"

कु० पा० २० सूरे कसस आ० ७५ रु० ७।

वक्तव्य—कुरान के अनुसार कयामत के दिन खुदा की कचहरी लगेगी, उस दिन खुदा एक बड़े तख्त पर बैठेगा और उस तख्त को कुरान पा० २६ सूरे हाक्का आ० १७ के अनुसार आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे। यह कचहरी जमीन पर लगेगी या आसमान में और कहां पर लगेगी, यह बात नहीं खोली गई है। हम मान लेते हैं कि जमीन पर कहीं लगेगी, क्योंकि कुरान के अनुसार मुर्दे कबरों से निकलकर खुदा की अदालत की तरफ भाग कर जावेंगे और भाग करजाना सिर्फ जमीन पर ही सम्भव हो सकता है।

कुरान बताता है कि दुनियां के हर गिरोह में खुदा ने समय समय पर पैगम्बर भेजे थे। तो हर गिरोह अपने २ पैगम्बरों के साथ अल्लाह मियां की अदालत में हाजिर होगा। अल्लाह मियां साहब एक बड़े भारी तख्त पर बैठेंगे। और हर गिरोह के पैगम्बरों को अपने अपने गिरोहों की ओर से विकालत करने को

बुलावेंगे। वे पैगम्बर अपने अपने मुवक्किलों की पैरवी बड़े जोर शोर से करेंगे और खुदा से झगड़ा करेंगे कि उनके पक्ष के लोगों को वहिश्त में जगह दो जावे और जिन्होंने उनका कहना नहीं माना उनको दोजख की भट्टी में झोंक दिया जावे। खुदा हर पैगम्बर वकील से उसकी दलीलें पूछेगा और फिर लोगों को दोजख या वहिश्त में भेज देगा।

हमारा इस विषय में यह पूछना उपयुक्त होगा कि खुदा ने जो अलग अलग गिरोह में समय समय पर पैगम्बर भेजे थे वे सब पैगम्बर केवल अरब और इस्राइल में ही आये थे या जमीन के और देशों में भी भेजे गये थे ? क्योंकि इस जमीन की उम्र अब तक विज्ञान के अनुसार लगभग दो अरब (दो सौ करोड़) वर्षों की हो चुकी है और सारी जमीन पर करोड़ों वर्षों से मनुष्यों की आवादी चली आ रही है। उसमें भी भारतवर्ष में तो सृष्टि के आदि काल से प्रजा वसती है। तो भारतवर्ष में खुदा बन्द करीम ने कौन कौन से पैगम्बर भेजें थे और उनके द्वारा कौन कौन सी खुदाई कितावें भेजी थीं ? उनमें से एक भी किताब का व एक भी पैगम्वर का जिक्र कुरान में क्यों नहीं किया गया है ? और यदि कोई पैगम्बर यहां नहीं भेजा, सभी पैगम्बर अरब व इस्राएल में ही उतरे या आये तो कुरानी खुदा को दुनियां के लोगों का इन्साफ करने का कोई हक हासिल नहीं होगा। क्योंकि कुरान में श्रीमान् अल्लाह मियां साहब फरमाते हैं—

"और जब तक तेरा परवर्दिगार किसी वस्ती में पैगम्बर न भेज ले और वह उनको हमारी आयतें पढ़ कर न सुनादें तब तक वह बस्तियों

को मार नहीं सकता और हम बस्तियों को तभी मार डालते हैं जबकि वहां के लोग पापी हो जाते हैं।"

कु० पा० २० सूरे कसस आ० ५९।

"और जब तक हम पैगम्बर को भेज न लें (किसी को उसके अपराध की) सजा नहीं दिया करते।"

कु० पा० १५ सूरे इस्राइल आ० १५ रुकू २।

कुरानी खुदा के इस वायदे के अनुसार यह बात स्पष्ट है कि भारत जैसे जिन देशों में खुदा का कोई पैगम्बर कभी नहीं आया निवासियों को किसी भी दण्ड या उन पर कोई भी व्यवस्था लागू करने का खुदा को कोई अधिकार नहीं है तथा आगे भी नहीं होगा। यदि भारत में कभी कोई महापुरुष (पैगम्बर) आये तो वे उपनिषदों तथा दर्शनों के उपदेष्टा महान ऋषि थे वेदों के ज्ञान के प्रकाशक महर्षि थे जिनके ज्ञान की एक कणिका भी कुरानी खुदा व उसके नाम से प्रसिद्ध की गई किताब तौरात जबूर इंजील व कुरान में देखने को नहीं मिलती है। बुद्धि तथा विज्ञान की कसौटी पर कसने पर यहूदी, ईसाई तथा मुसलमानों की उक्त मान्य किताबें व उनके सिद्धान्त सर्वथा बुद्धि-विरुद्ध सिद्ध होते हैं। तथा उन किताबों में जो भी विशेषतायें खुदा में बताई हैं उनके अनुसार खुदा वास्तव में एक साधारण व्यक्ति जैसा सिद्ध होता है, खुदा की पवित्र सत्ता कलंकित होती है।

अस्तु कुरान के अनुसार यदि कोई कयामत कभी आई तो उसमें मजिस्ट्रेट खुदा केवल अरब वालों का ही फैसला कर सकेगा जैसा कि हाकिम परगना (डिवीजनल मजिस्ट्रेट) या हल्के के तहसीलदार साहिबान अपने अपने हल्कों के मुकद्दमे ले

सकते हैं और लेते हैं। कुरानी खुदा भी अरबी हल्के का खुदा था, क्योंकि उसके पैगम्बर वहीं पैदा होते रहे थे और उसका सारा कानून भी वहीं लागू था।

एक बात और भी मजेदार है कि पैगम्बर वकील बन कर मजिस्ट्रेट खुदा से लड़ेंगे व बहस करेंगे। यदि किसी तगड़े वकील ने खुदा को हरा दिया तो खुदा की क्या इज्जत रहेगी। उन वकीलों को महनताना कौन देगा? यदि रिश्वत वहां भी चालू हो गई और अरबी काफिरों या यहूदियों ने इस्लामी वकीलों को पैसा देकर तोड़ कर अपनी भी सिफारिश करा ली और वे बहिश्त में घुस बैठे तो खुदा का इन्साफ कहां रहेगा?

कुरान के अनुसार तो वकीलों की जरूरत व बहस वाली ऊपर की बातें भी सर्वथा बेकार की गल्पें सिद्ध हो जाती हैं। क्योंकि क़ुरान में साफ लिखा है कि कयामत के दिन—"आज हम इनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और जैसे काम यह लोग कर रहे थे इनके हाथ हमको बता देंगे और इनके पाँव गवाही देंगे।"

कु० पा० २३ सूरे यासीन आ० ६५ रुकू ४।

"यहाँ तक कि (जब सब) दोजख के पास जमा होंगे तो जैसे जैसे काम यह लोग करते थे उनके कान और उनकी आखें और उनके चमडे उनके मुकाबिले में गवाही देंगे।"

कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह आ० २० रुकू० ३।

इससे प्रगट है कि काफिरों के हाथ, पांव, आंख, नाक लिंग, भग, गुदा, चमड़ा आदि सभी वहां अपने द्वारा किये गये हर बुरे भले कामों की गवाही स्वयं देंगे। तो जबकि अपना कसूर मुल्जिम को कबूल होगा तो फिर पैगम्बरों की बहस क्यों कराई

जावेगी ? बहस तो वहां होती है जहां मुल्जिम कसूर से इन्कार करता है।

इसके अलावा खूदा ने दो-दो फरिश्ते हर आदमी पर लगा रखे हैं जो उसके कर्मों को लिखते जाते हैं जैसा कि कुरान में लिखा है कि—

"या ख्याल करते हैं कि हम इनके भेद और मशविरे नहीं जानते और हमारे फरिश्ते इनके पास लिखते जाते हैं।"

कु० पा० २५ सूरे जुखरुफ आ० ८० रुकू ७।

"हमारा दफ्तर तुम्हारे काम ठीक-ठीक बतलाता है। जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे।"

कु० पा० २५ सूरे जासियह आ० २६ रुकू० ४।

जब कि हर आदमी का रोजनामचा खुदा भरवाता रहता है और पूरा-पूरा हिसाब उसके दफ्तर में रहता है तो फिर वकीलों की आवश्यकता कयामत को क्यों होगी यह बात समझ में आने वाली नहीं है। इसके अतिरिक्त एक स्थान पर खुदा कहता है—

"यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवर्दिगार की आयतों को और उसके सामने हाजिर होने को न माना तो इनके काम अकारथ गये तो कयामत के दिन हम इनकी तौल न खड़ी करेंगे।"

कु० पा० १६ सू० कहफ आ० १०५ रुकू० १२।

जबकि काफिरों के कर्मों की तौल भी कयामत को न की जावेगी तो फिर उनके लिए वकीलों की क्या जरूरत होगी। वकील पैगम्बर तो सिर्फ मुसलमानों की पैरवी करने को खड़े होंगे वैसे तो उनकी वहां भी जरूरत न होगी क्योंकि खुदा का

रोजनामचा हर आदमी के कर्मों का हिसाव बताने को काफी होगा और किसी की यह हिम्मत न होगी कि खुदा के फैसले की मुखालिफत (विरोध) कर सके या किसी बड़े खुदा के यहां अपील खड़ी करा सके।

कुरान शरीफ में यह भी लिखा है कि 'कयामत के दिनफैसले के समय कितावें रख दी जावेंगी और पैगम्बर गवाह हाजिर किये जावेंगे' देखो पा०२४ सूरे जुमर आ० ६६। यहां पर यह नहीं बताया गया कि वे किताबें कानूनी जाब्ता दीवानी की होंगी या जाब्ता फौजदारी की होंगी। क्योंकि तौरात, जबूर, इञ्जील तथा कुरान इनमें से किसी में भी यह नहीं बताया गया है कि किस-किस कर्म की क्या-क्या सजा होती है।

एक बात और भी समझ में नहीं बैठती है कि आज दुनियां की आबादी साढ़े तीन अरब की है। यदि सभी लोग किसी एक जगह जमा हो जावें तो उस देश में खड़े होने को भी जगह नहीं मिलेगी। तो दो अरब वर्षों में अब तक मरे सारे मुर्दे कहां पर फैसले के जाकर खड़े होंगे? और अभी तो संसार लगभग २ अरब ३५ करोड़ वर्षों तक और चलेगा तो इतने लम्बे काल में पैदा होकर मरने वाले असंख्य मर्द व औरतें इकट्ठे होकर कयामत के दिन किस देश में कहा व कैसे समा सकेंगे जब कि सब एक साथ एक स्थान पर जा पहुंचेंगे। और भी एक बात अक्ल में नहीं आती है कि जब दोजखी लोगों को दोजख में बन्द कर दिया जावेगा जैसा कि लिखा है —

"इन (काफिरों) को आग में डालकर (दोजख के) किवाड़ भेड़ दिये जायेंगे।"

कु० पा० ३० सू० वलद आ० २०।

और फिर कभी वे उसमें से निकल भी न सकेंगे तो उनको उस आग की भट्टी दोजख में जंजीरों से बांधने की क्यो जरूरत पड़ेगी जैसा कि कुरान में लिखा है—

"इसको पकड़ो और इसके गले में तौक डालो।३०। फिर इसको नरक में धकेल दो।३१। और इस सत्तर हाथ लम्बी जंजीर से बाँध दो।३२। कु० पा० २९ सू० हाक्का रुकू १।

इतनी लम्बी जंजीर किस धातु की व किस कारखाने की बनी होगी। एक एक काफिर को बांधने को इतनी ही बड़ी जंजीर की क्यों जरूरत पड़ेगी? और यह सत्तर हाथ की लम्बाई खुदा के हाथ से नापी जायगी या आदमी के हाथ से नापी जावेगी, वह गजों में होगी या मीटर से नापी जायगी खुदा का एक इन्साफ हम और भी नहीं समझ सके हैं। कुरान में लिखा है कि—

"(दोखज) सरकशों काफिरों का ठिकाना है।२२। उसी में बरसों पड़े रहेंगे।२३। वहाँ न ठंडक और न पीने (का मजा) चखेंगे।२४। मगर गर्म पानी और पीव के सिवाय इनको कुछ पीने को भी न मिलेगा।" कु० पा० ३० सू० नबा रुकू० १।

"इनको एक खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायगा।"
कु० पा० ३० सूरे गाशियह आ० ५ रुकू १।

"सेहुड़ का पेड़ पापियों का खाना होगा।"४४।
कु० पा० २५ सू० दुखान रुकू ३।

जबकि काफिरों को दोजख की भट्टी में जंजीरों से मजबूती से कसकर झोंक दिया जावेगा तो कैदी को खौलता पानी व

पीव ही क्यों पिलाया जावेगा, उनको ताजी पानी क्यों नहीं दिया जावेगा? क्या खुदा के यहां चपातियों व दाल शाकों का या अन्डे व मछलियों का अकाल पड़ जावेगा जो कैदियो को खुदा के भोजनालय से रोटी भी नहीं मिल सकेगी? सैहुड़ का कांटेदार जहरीले दूध का पेड़ तो कोई इन्सान तो क्या खुदा का फरिश्ता और स्वयम् खुदा भी नहीं चबा सकता है। यदि उसका दूध किसी खाने वाले या खुदा के मुँह में लग जावेगा तो सारा जिस्म जलन व सूजन से खराव हो जावेगा और इन्जैक्शनों से भी ठीक न हो सकेगा। तो दोजख की भट्टी में जंजीरों से कसे हुए बेवस कैदियों के साथ इतनी बेरहमी खुदा क्यों बरतेगा। और यदि खुदा का यही इन्साफ होगा तो ऐसे खुदा को हम रहनुलूहीम न मान कर बेरहम व जालिम मानने पर विवश होंगे। सैहुड़ का पेड़ दोजख की आग में कैसे कायम रह सकेगा यह भी सोचने की बात है!

कुरान के अनुसार "जब दोजख की किसी तंग जगहमें मुश्कें बाँध कर डाल दिये जावेंगे तो वहाँ मौतको पुकारेंगे।" कु०पा० १८ सूरेफुर्कान आ० १३। तो ऐसी हालत में काफिर दोजख में खा या पी कैसे सकेंगे। तथा जव "उनके सिरों पर खौलता पानी डाला जायगा।१६। जिससे जो कुछ उनके पेट में है और खालें गल जायें।" कु० पा० १७ सूरे हज्ज आ० २० रुकू २। यह दशा दोजख में काफिर (गैर मुस्लिमों) की होगी और गर्म पानी पीने से उनके पेट के अन्दर की आंतें, मैदा, जिगर, गुर्दे आदि सभी अङ्ग गल कर नष्ट हो जावेगे तो फिर उनका खाना पीना बन ही नहीं सकेगा, और न वे जिन्दा ही रह सकेंगे। तब दोजख में सजा कौन भुगतेगा और

"हमेशा दोजख में ही रहेंगे।" (कु० पा० १४ सू० नहल आ० २६) यह आयत गलत हो जावेगी—

व्यभिचारी मर्द औरतों के गुप्तांग किस भाषा में अपने कुकर्मों की बातें खुदा को बतावेंगे ? और वे सलवार या बुर्के या पाजामों के अन्दर परदे में से खुदा से बात करेंगे या बेशरमी से नंगे होकर सबके सामने अपने ब्यान देंगे। रंडियों के कौन-कौन से अङ्ग अपना ब्यान हल्फी देंगे और वे ब्यान टेप रिकार्ड किये जावेंगे या लिखे भी जावेंगे क्या ? कुरान में खुदा ने कहा है कि—
"हम उनको (दोजख की) आग में झोकेंगे। जब उनकी खालें जल जावेंगी उनकी दूसरी खाल बदल देंगे ताकि दण्ड भोगें।"

कु० पा० ५ सूरं निसा आ० ५६ रुकू० ७।

"इनके ऊपर आग का ओढ़ना और नीचे आग ही का बिछौना होगा...। कु० पा० २३ सू० जुमर आ० १६।

इतनी जबर्दस्त तेज आग में पड़ने वाले खाने पीने व दुःख भोगने को जिन्दा रह सकेंगे यह बात संसार के किसी अक्लमन्द की समझ में आने वाली नहीं है। खुदा बिचारा पल-पल में जली खालों को बदलते-बदलते थक जावेगा। यह बात भी सोचने की है कि जब लोगों की ऊपर की खाल के अन्दर के सब अङ्ग गल जावेंगे तो मांस के खाली खोल में रूहें कैसे कायम रहेंगी और उन्हें भूख प्यास कैसे लगेगी ?

१८. कुरान और आसमान

आकाश पोल स्थान को कहते हैं। सम्पूर्ण विश्व जो दिखाई देता है शून्याकाश से चारों ओर से घिरा हुआ है तथा आकाश

प्रत्येक पदार्थ के अन्दर व्याप्त है। ऊपर जो नीलापन आकाश में दिखाई देता है उसे देखकर अनेक लोग भ्रम में पड़ जाते हैं और उसे कोई ठोस पदार्थ समझ बैठते हैं। वस्तुतः आकाश में पोल स्थान की गहराई तथा उसमें जलीय कणों का होना ही आकाश के नीला दीखने का कारण है। वह कोई ठोस पदार्थ नहीं है।

आकाश के विषय में कुरान में जो वर्णन आता है वह बड़ा मनोरंजक है ? हम उसे यहां उपस्थित करते हैं—

"वही है जिसने तुम्हारे लिये धरती की चीजें पैदा कीं फिर आकाश की तरफ ध्यान दिया, तो सात आकाश हमवार बना दिये और वह हर चीज से जानकार है।"

कु० पा० १ सू० बकर रुकू ३ आ० २६।

"क्या जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन्होंने नहीं देखा कि आसमान और जमीन दोनों का एक पिण्ड सा था। सो हमने (उसको तोड़कर) जमीन और आसमान को अलग अलग किया।"

कु० पा० १७ सू० अम्बिया रुकू ३ आ० ३०।

"जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं....।"

कु० पा० १७ सूरे अम्बिया रुकू ७ आ० १०४।

"और आसमान जमीन पर गिरने से थमा है मगर उसके हुक्म से।

कु० पा० १७ सू० हज्ज रुकू ९ आ० ६५

"और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाये ....।"

कु० पा० १८ सू० मोमिनून रु० १ आ० १७।

"उसी ने आसमानों को जिसको तुम देखते हो वगैर खम्भों के खड़ा किया है ...।"

कु० पा० २१ सूरे लुकमान रुकू १ आ० १।

"और अल्लाह वह है जिसने आसमानों को विना किसी सहारे के ऊँचा खड़ा किया है। जैसा कि तुम देख रहे हो।"

कु० पा० १३ सूरे राद रु० १ आ० २।

"आसमान और (सब) लोग एक खुदा जवर्दस्त के सामने निकलकर खड़े होंगे।"

कु० पा० १३ सू० इब्राहीम रुकू ७ आ० ४८

"अगर हम इन लोगों के लिये आसमान का एक दरवाजा खोल दें और यह लोग सब दिन चढ़ते रहें" ।१४।

"हमने आसमान में बुर्ज वनाये और देखने वालों के लिये उसे तारों से सजाया।" कु० पा० १४ सू० हिज्र रुकू १ आ० १५।

"अल्लाह ने आसमानों और जमीन को थाम रखा है कि टल न जायें...।" कु० पा० २२ सूरे फातिर रुकू ५ आ० ४१।

"(कयामत के दिन) सब आसमान लिपटे हुए उसके दाहिने हाथ में होंगे ...।" कु० पा० २४ सू० जुमर रुकू ७ आ० ६७

"(खुदा ने) जमीन और आसमान दोनों से कहा कि तुम खुशी से आये या लाचारी से। दोनों ने कहा खुशी से आये। इसके वाद दो दिन में उस (धुँऐ) से सात आसमान वनाये।"

कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह आ० ११-१२।

"आसमान में कहीं दराज नहीं है।"

कु० पा० २६ सू० काफ आ० ५।

"और हमने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ वाले हैं।"

कु० पा० २७ सू० जारियात रुकू ३ आ० ४७

"जिस दिन आसमान लहरें मारने लगे।"

कु० पा० २७ सू० तूर रुकू १ आ० ९।

"हमने पहिले आसमान को दीपकों (तारों) से सजा रखा हैं और हमने तारों (दीपकों) को शैतानों के मार की चीज बनाई है।"

कु० पा० २९ सू० मुल्क रुकू १ आ० ५।

"हमने आसमान को टटोला तो उसको सख्त चौकीदारों और अङ्गारों से भरा पाया।"

कु० पा० २९ सू० जिन्न रुकू १ आ० ८।

"और आसमान फट कर दरवाजे दरवाजे हो जायेंगे।"

कु० पा० ३० सू० नबा रुकू १ आ० १९।

"जिस वक्त आसमान की खाल खींची जाय।"

कु० पा० ३० सू० तकवीर रुकू १ आ० ११।

"उसी ने आसमान को ऊँचा किया है।"

कु० पा० २७ सू० रहमान रुकू १ आ० ७।

वक्तव्य–इस सारे विवरण को देखने से यह स्पष्ट हो जाता हैं कि कुरान के बनाने वाले खुदा को आकाश के नीलेपन को देखकर धोखा हो गया था। और उसने लोगों को समझाने के लिये सात पृथक-पृथक आसमानों की कल्पना कर ली थी आकाश में होने वाले (रात को दीखने वाले) उल्कापात को वह तारे टूटना और उनसे शैतानों को मारना समझा था। पहिले

कल्पित आसमान को तारों से जड़ा हुआ तो बता दिया किन्तु शेष ६ आसमानों के बारे में कुछ भी नहीं लिख सका। आसमान की खाल खींचने की बात भी मजेदार है। शायद वह आसमान को कोई दुम्बा जैसा जानवर या ऊँट समझ बैठा होगा, क्योंकि खाल तो जानदार की ही खींची जा सकती है। आसमान (पोल स्थान) को कागज की तरह हाथ में लपेटने की बात भी अल्लाहमियां की कम लम्बी समझ का सबूत नहीं है तो क्या है? सात आसमान और उनको बिना खम्बों के ऊपर को खड़ा करने की शेखी मारने वाला अरबी खुदा भी क्या विद्वान माना जा सकता है?

आसमान व जमीन से खुदा का सवाल करना कि तुम दोनों खुशी से आये या लाचारी से? और उन दोनों का जबाव देना कि खुशी से हम दोनों आये, यह बताता है कि प्रश्न करने वाला नींद में होगा जो यह भी नहीं समझ सका कि बेजान पदार्थों से सवाल जबाव नहीं किये जाते हैं और न बेजान पदार्थ जवाब दिया करते हैं। इसी प्रकार से तो बुत परस्त भी यदि मूर्तियों से प्रार्थना करने और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने की अपनी बात को सही बताने लगेंगे तो वह भी सच माननी पड़ेगी? यह बात यहां यदि और खोल दी जाती कि खुदा व जमीन आसमान के सवाल जवाब अरबी-अंग्रेजी हिब्रू या संस्कृत में हुए या इशारे से गूंगे लोगों की तरह बातें हुई थीं, तो और भी ठीक रहता। इससे खुदा की भाषा का भी पता लग जाता।

बिना हाथ से टटोले खुदा यह भी नहीं जान पाया कि आसमान में चौकीदार और सख्त अङ्गारे भरे पड़े हैं। खुदा की अज्ञानता की इससे बढ़िया मिसाल और क्या होगी?

आसमान में दरवाजे हैं, उसमें बुर्ज लगे हैं, उसमें दराज नहीं है, उसको फाड़ा जावेगा, वह लहरें मारने लगेगा, वह जमीन पर गिर पड़ेगा आदि सारी बातें बच्चों को बहलाने जैसी निरर्थक कल्पनायें हैं। आसमान व जमीन का पिण्ड था खुदा ने उसे तोड़कर अलग-अलग कर दिया, क्या कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति इस बात पर विश्वास कर सकता है? पिण्ड दो या ज्यादा ठोस पदार्थों का होता है। शून्य आकाश (पोल) का पिण्ड कैसे बना लिया गया है? अरबी खुदा भी किसी स्कूल में जाकर कुछ विद्या पढ़ लेता तो उचित होता वरना वह दुनिया को मजहब के नाम पर गुम राह करता रहेगा जैसा कि उसने किया भी है। हमारा विश्वास है कि जो भी व्यक्ति अक्ल पर जोर देकर कुरान शरीफ को पढ़ेगा उसे उससे निराशा ही होगी, कोई भी बात ज्ञान-विज्ञान के अनुकूल उसमें नहीं मिलेगी जैसा कि हमको अनुभव हुआ है।

१९. पवित्र होने का विचित्र प्रकार

"... तुम में से कोई पाखाने से आवे या स्त्रियों से प्रसंग करके आया हो और तुमको पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लेकर मुँह और हाथ पर मल लो। अल्लाह माफ करने वाला बखशने वाला है।"

कु० पा० ५ सू० निसा आ० ४३ रुकू ७।

"मुसलमानों! जब नमाज के लिए तैयार हो तो...तुममें से कोई पाखाने से आया हो या तुमने स्त्रियों से सुहबत किया हो और तुमको पानी न मिल सके तो साफ मिट्टी लेकर उससे तयम्मुम यानी अपने मुँह

और हाथों को मल लिया करो। अल्लाह तुम पर किसी तरह की कड़ाई करना नहीं चाहता बल्कि तुमको साफ सुथरा रखना चाहता है।"

कु० पा० ६ सू० मायदा आ० ६ रुकू २।

वक्तव्य—ऊपर की दोनों आयतों को देखकर हम यह नहीं समझ सके हैं कि पाखाने के गन्दे हाथों के साथ मुँह से मट्टी मलने की क्या आवश्यकता होगी। मुँह से मट्टी भी उन्हीं हाथों से मली जावेगी जो कि खुद भी विना मट्टी व पानी के वदवू से साफ नहीं हुए होंगे उन गन्दे हाथों से छूने से मुँह भी बदबूदार व गन्दा हो जावेगा। एक बात और भी नहीं हम समझ सके हैं कि औरत के विषयभोग करने से जो गन्दगी उपस्थेन्द्रिय में होगी वह मुँह व हाथों पर मट्टी मलने से कैसे साफ हो सकेगी। उसके लिये तो मट्टी या पानी से वही अङ्ग साफ करना चाहिए था जो कि विषयभोग से गन्दा होता है।

क्या यह ऐसी ही बात नहीं है जैसे कोई कहे कि मुँह गन्दा हो तो पाखाने का मुकाम साफ करो और पाखाने का मुकाम गन्दा हो तो सिर्फ मुँह साफ कर लो। क्या यह कम समझी की बात नहीं है?

२०. कयामत के दिन एक विचित्र जानवर निकलेगा

"और जब वादा (कयामत) इन लोगों पर पूरा होगा तो हम जमीन से इनके लिए एक जानवर निकालेंगे वह इनसे बातें करेगा कि लोग हमारी बातों पर विश्वास नहीं रखते थे।"

कु० पा० २० सूरे नम्ल रुकू ६ आ० ८२।

वक्तव्य—इस आयत पर यह जानना है कि वह जानवर किस शक्ल का होगा ? उसकी और आदमी की शक्ल एक जैसी होगी या कुछ फर्क होगा और यदि फर्क होगा तो किस बात में होगा ? वह जानवर कौन-कौन सी भाषा जानता होगा, वह संस्कृत अंग्रेजी भी जानता होगा या सिर्फ अरबी का मौलवी होगा ? वह जानवर कोरी बातें ही करेगा या बाद को सारी जमीन के मुसलमानों व काफिरों को दूध भी पिलायेगा ? यदि पिलावेगा तो उसके पास इतना दूध कहां से आवेगा ? और वह जानवर नर होगा या मादा होगा उसके सींग होंगे या नहीं वह काफिरों से क्या बात पूछेगा और क्यों ? क्योंकि हर आदमी के हर काम का रोजनामचा तो खुदा के पास तैयार होगा ? उसका कर्मपत्र उसे खुदा देगा ही और हर आदमी के खिस्म के सभी अङ्ग अपने-अपने कर्मों का खुद बयान करेंगे । तब यह मरदूद जानवर किस लिये जमीन में से निकाला जावेगा और क्यों काफिरों के साथ बहस करेगा ।

२१. खुदा ने पहाड़ जमीन में गाढ़े

कुरान में लिखा है—

"पहाड़ जमीन पर गाढ़े ताकि जमीन तुम्हें लेकर किसी ओर तरफ न झुकने पावे ..।"

कु० पा० १४ सू० नहल रुकू २ आ० १५।

वक्तव्य—पहाड़ों की उत्पत्ति जमीन के अन्दर से होती है और गाढ़ी जाने वाली वस्तु जिसमें वह गाढ़ी जाती है उससे प्रथक अस्तित्व रखने वाली होती है जिसे कोई तीसरा गाढ़ने

वाला उसे उसमें बाहर से गाढ़ देता है। पहाड़ों का निर्माण यदि जमीन से प्रथक कहीं खुदा ने किया होता और फिर उनको लाकर जमीन में गाढ़ा होता तब तो उनका गाढ़ना बन सकता था। स्पष्ट है कि यह आयत बुद्धि पूर्वक नहीं लिखी गई है और गलत है। जमीन का पहाड़ों की वजह से न झुक पड़ना कहना भी अजीब सी बात है जमीन की विशालता के सामने पहाड़ों की क्या स्थिति है? शिक्षित मुसलमान इस पर गौर करें।

२२. कबरों से मुर्दे निकलेंगे

"और नरसिंहा फूंका जायगा तो एक दम से कबरों से (निकल कर) अपने परवर्दिगार की तरफ चल खड़े होंगे।"

कु० पा० २३ सूरे यासीन रुकू० ४ आ० ५१।

वक्तव्य–कयामत के दिन तक जो भी कबरें नई होंगी, साबुत होंगी। जिनमें लाशें सड़ गल कर नष्ट नहीं हुई होंगी खुदा उनमें से जादूगरी से मुर्दों को निकाल के खड़ा कर लेगा, किन्तु जो कबरें हजारों लाखों साल पहिले बनी होंगी और जिनका अस्तित्व भी नहीं रहेगा, उनमें से मुर्दे कैसे निकलेंगे यह साफ नहीं किया गया है।

कल्पना करो एक गांव के एक सौ मुसलमान कबरों में दफन हुए। सौ साल के अन्दर व कच्ची कबरें मिट गयीं और वहां लोगों ने खेती करनी प्रारम्भ कर दी। मुर्दों का गोश्त खाल हड्डियां जो कि इतने दिनों में मिट्टी बन गई थीं उस मिट्टी की खाद को फसल ने खा लिया। फसल की पैदावार को लाखों

आदमी खा गये तो अब मुर्दे कहां से व कैसे निकलेंगे जबकि सैकड़ों साल पहिले मरे लोगों के जिस्म का खाद सैकड़ों शक्लों में बदलकर नई शक्लें धारण कर चुका होता है।

हिन्दू लोग मुर्दों को जलाकर समाप्त कर देते हैं उनके मुर्दे कहां से निकलेंगे और जब मुर्दे ही नहीं होंगे तो खुदा के सामने वे न पहुंचेगे न उनको कर्म लेखा पत्र दिये जा सकेंगे न उन्हें दोजख में खुदा धकेल सकेगा। दोजख में तो गाढ़े जाने वाले मुसलमान ही कबरों में से खींचकर भेजे जा सकेंगे। इसलिए यदि मुसलमान लौग भी मुर्दे गाड़ने के बजाय उन्हें जलाने लगे तो उनकी भी कयामत के फैसले से छुट्टी हो जावेगी तथा खुदा को अस और वस उन्हें जन्नती हूरें और गिलमें व शरावें देने पड़ेंगे।

२३. मुर्दे व सोने वालों की रूहें खुदा बुला लेता है

कुरान की हर बात विलक्षण एवं सत्य के विपरीत होती है। निम्न सिद्धान्त भी उसका हास्यास्पद है।

"लोगों के मरते समय अल्लाह उनकी जानों को बुला लेता है और जो लोग मरे नहीं उनकी जानें सोते समय (नींद में बुला लेता है) फिर जिनकी निस्वत मौत का हुक्म दे चुका है उनको (सोने वालों को) एक मुकर्रर वक्त तक फिर दुनियाँ में भेज देता है। जो लोग ध्यान दें उनके लिये इसमें निशानी है।"४२।

कु० पा० २४ सू० जुमर रुकू ५।

वक्तव्य—जब प्राणी दिमागी काम करते-करते थक जाता है तो उसके सर में एक गैस बनती है जिससे उसके दिमाग में

सुस्ती व नींद की खुमारी आती है जब शरीर व दिमाग को परिश्रम से आराम मिलता है तो खून का दौरा ठीक होने से दिमाग व शरीर की थकावट मिट जाती है और नींद की खुमारी समाप्त हो जाती है। नींद लाने की दवायें भी दिमाग की नसों को प्रभावित करके प्राणी को अचेत कर देती हैं किन्तु किसी भी प्राणी की रूह शरीर में से बाहर निकलकर नहीं चली जाती है ।

एक सरल परीक्षण और भी किया जा सकता है। जब किसी बालक को नींद आने लगे और वह झपकी ले रहा हो तो कुछ लाल मिर्चे व भूसी हाथ में लेकर बालक के मुँह के ऊपर १५-२० बार निकट से घुमा कर आग में डाल देने से मिर्चों की गन्ध आग में नहीं आती है। यह क्रिया कई बार करने के बाद जब अग्नि में मिरचें डालने से भस आने लगे तो बालक की तन्द्रा समाप्त होकर वह चैतन्य हो जाता है। यह क्रिया प्रायः सभी घरों में नजर बालक को लगने पर मातायें करती हैं। इसमें रहस्य केवल यही होता है कि मिर्च बालक के मस्तिष्क में से निकलने वाली गैस को जज्व कर लेती है। और उसकी तेजी उससे मारी जाती है। जब मस्तिष्क उस गैस के प्रभाव से मुक्त हो जाता है तो मिर्च अग्नि में डालने से भस देने लगती है।

इससे दिमाग के गैस से आक्रान्त होने से अथवा नसों की शिथिलता के कारण नींद का आना सिद्ध हो जाता है। किसी भी दशा में शरीर स्वप्न में जीवात्मा से रहित नहीं होता है।

एक तर्क और भी है मृत्यु के बाद कुछ ही देर में शरीर में से दुर्गन्ध छूटने लगती है क्योंकि उसमें जीवात्मा (रूह) निकल जाती

है। यदि स्वप्न में भी रूह निकल जाती होती तो ८ घन्टे सोने वाले का शरीर सड़ जाना चाहिये था, किन्तु वैसा नहीं होता है। नींद वा बेहोशी में कई-कई दिन रोगी पड़े रहते हैं परन्तु वे मरते नहीं हैं।

इस प्रकार कुरान की इस आयत का यह कहना कि रूहें नीद में निकल जाती हैं और फिर ख़ुदा उनको रोजाना भेज देता है, सरासर गलत है। इसी प्रकार यह भी गलत है कि मृतकों की रूहें खुदा के स्टोर रूम (भण्डार खाने) में जमा रहती हैं। पुनर्जन्म के सिद्धान्त को न समझने के कारण कुरान बनाने वाले को इस प्रकार की बातें गढ़नी पड़ी हैं जो कि सत्य के विपरीत हैं।

२४. बहिश्त में दो समय खाना शराब हूरें तथा गिलमें मिलेंगे

कुरान में लिखा है कि—

"वहाँ (बहिश्त में) कोई बेहूदा बात उनके कान में न पड़ेगी सिवाय सलाम के, और वहाँ उनको खाना सुबह शाम मिला करेगा।"

कु० पा० १६ सू० मरियम रु० ४ आ० ६२।

"इनमें साफ शराब का प्याला घुमाया जायेगा।४५। सफेद रंग पीने वालों को मजा देगी।४६। और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी।४८। गोया वह अण्डे छिपे रखे हैं।"४९।

कु० पा० २३ सू० साफ्फात रु० २।

"उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जायगी।"२५।

कु० पा० ३० सू० ततफीफ

वक्तव्य—यदि किसी वहिश्ती जवान को बीच में दोपहर को भूख लगे तो क्या वह शाम तक भूखा ही मरता रहेगा ? खुदा के घर में भी दोपहर को भूख लगने पर खाना न मिले तो ताज्जुब की बात होगी ? शराब की कितनी बोतलें पीने को रोज मिलेंगी तथा यह भी नहीं बताया गया है कि कितनी बार रोज मिलेगी और वह भी तबियत भर के पीने को मिलेगी या नपी तुली मिलेगी ? हूरें हम उम्र और बेहद खूब सूरत मिलेंगी ही, अगर उन शराबी लोगों से वहां उनके हमल (गर्भ) रह गये तो उनके बच्चों का प्रसव वहीं खुदा के घर (वहिश्त) में होगा या कोई और इन्तजाम उनका किया जावेगा।

यह बात कुरान शरीफ में भी नहीं खोली गई है। इसका समाधान आलिमाने कुरान पेश करें।

यदि यह कहा जाये कि वहिश्ती जवान हूरों से विषयभोग न करेंगे तो यह बात भी सही नहीं होगी। क्योंकि कुरान पारा २७ सूरे रहमान रुकू ३ आ० ५६ में साफ लिखा है कि—

"उनमें (पाक हूरें) होंगी जो आंख उठाकर भी नहीं देखेंगी और वैकुण्ठ वासियों से पहले न तो किसी मनुष्य ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने।"

इसमें साफ लिखा है कि जन्नती जवान शराबें पीवेंगे और शौक पूरा करने को अछूती हम उम्र हूरें उन्हें मिलेंगी। जब ऐसा होगा तो बच्चे जरूर बनेंगे ? यह बात दूसरी है कि वहां भी परिवार नियोजन का रिवाज चालू हो जावे। मगर उसका कोई जिक्र कुराने पाक में नहीं है।

"जन्नती जवानों के लिए खुदा ने एक और भी इन्तजाम वहां कर रखा है वहाँ जन्नत में उनके पास लौंडे (गिलमें) होंगे जो हमेशा लड़के ही बने रहेंगे ।"

कु० पा० २७ सूरे वाकिया रुकू १ आ० १८।

इस तरह कुरान के बहिश्त में शराब पीकर मस्त होने पर औरतें और लौंडे दोनों ही खुदा की तरफ से पेश किये जावेंगे। मुसलमानों के लिए मुस्लिम खुदा ने हर तरह का आराम वहां पैदा कर रखा है। उन हूरों से खुदा उनके ब्याह भी कर देगा यह कु०पा० २५ सू० दुखान रु० ३ आ० ५४ में लिखा है कि—

"ऐसा ही होगा और बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे ।"

इसमें हूरों से ब्याह होने की बात स्पष्ट है। अतः बहिश्त में विषयभोग व उससे सन्तानें होने की बात भी सत्य है। हूरें व गिलमें बहिश्त में मिलने की बात तौरात जबूर और इन्जील इनमें से किसी भी किताब में नहीं दी है। यह कुरान की निराधार कल्पना है। यह बात खुदा ने कभी भी मुहम्मद से पहिले पैगम्बरों से नहीं कही थी और न वह हजरत मुहम्मद साहब से ही कह सकता था। क्योंकि कुरान का दावा है कि तुझसे (मुहम्मद से) केवल वही बातें खुदा ने कही हैं जो पहिले लोगों से कह चुका था कोई नई बात नहीं कही गई है। क्या खुदा की यहूदियों व ईसाईयों से दुश्मनी थी जो यह तौहफे उनको न देता यदि ये सत्य होते ?

हमारी निगाह में शराब हूरों गिलमों का लालच लोगों की आदत बिगाड़ने को जिस किताब में दिया गया हो वह खुदाई किताब हरगिज नहीं हो सकती है ? अय्यासी का लालच देने

वाले खुदा को भी यदि अय्यासी का शौकीन माना जावे तो गलत न होगा। क्योंकि गन्दी बातें कहने वाला स्वयं भी गन्दा होता है तथा अच्छी बातें कहने वाला खुद भी अच्छा होता है। शराब जुए की तारीफ करने वाला ख़ुद भी शराबी और जुआरी होता है। जो जैसा होता है वह वैसी बातें कहता है।

२५. शैतान की गलत पैदायश

'क़ुरान पा० २३ सू० साद रुकू ५ आयत ७६ में लिखा है कि शैतान ने ख़ुदा से कहा—"बोला कि मैं उस (आदम) से कहीं बेहतर हूँ मुझको तूने आग से बनाया और उसको तूने मट्टी से बनाया है।"

वक्तव्य—आग से धुआं, रोशनी तथा गर्मी पैदा होती है। वह भी तब जब कि आग से कोई पदार्थ जले। आग का गुण अन्य पदार्थों को जलाकर छिन्न-भिन्न करना, हर जर्रे को अलग अलग करना रोशनी गर्मी देना पानी को सुखा देना आदि हैं। कोई भी पदार्थ जिसमें जल का संयोग होगा आग में स्थिर नहीं रह सकता है। पहिले आग उसके पानी को पृथक करेगी, बाद को पदार्थ को नष्ट कर देगी। तथा जिस पदार्थ में जल का संयोग नहीं होगा उसमें जीवन अथवा जीव नहीं रह सकता है।

शैतान फरिश्ते को क़ुरान जानदार बताता है तो शैतान की उत्पत्ति आग से नहीं हो सकती है। क्योंकि शैतान रोशनी या गर्मी नहीं है वह एक चैतन्य प्राणी है। आग एक बेजान चीज है और केवल आग के परमाणुओं से कोई शरीर नहीं बन सकता है। अतः कुरान की उपरोक्त कल्पना सही नहीं है। कएसुल

अम्बिया में किस्सा अजाजील में शैतान की पैदायश गुर्ग और शेर से मानी गई है।

२६. खुदा फरिश्तों के घेरे में होगा

कुरान पा० २४ सूरे मोमिन रुकू ८ आ० ७५ में लिखा है कि—

"ऐ पैगम्बर ! उस (कयामत के) दिन तू देखेगा कि फरिश्ते अपने परवर्दिगार की खूबी बयान करते तख्त को आस-पास घेरे हैं और इनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जायगा और कहा जायगा कि संसार के परवर्दिगार अल्लाह की तारीफ हो।"

वक्तव्य—कयामत के दिन पृथ्वी भर के असंख्य औरतें व मर्द कुरान के अनुसार खुदा के सामने जमा होंगे और खुदा काफिरों को दोजख में झोंक देने का हुक्म देगा। 'तो मरता क्या न करता' की कहावत के अनुसार कहीं वे असंख्य काफिर खुदा पर ही हमला न कर बैठें इसलिए उनसे खुदा की रक्षा की दृष्टि से फरिश्ते खुदा को चारों ओर से घेर कर खड़े हो जावेंगे। इञ्जील को भी कुरान ने खुदाई किताब माना है। उसमें प्रकाशित वाक्य ९/१६ में लिखा है कि खुदा (अपनी रक्षा के लिए) वीस करोड़ घुड़सवार फौज बहिश्त में रखता है। हो सकता है यह फौज कयामत के दिन काफिरों के हमले से अपने को बचाने के लिए खुदा रखता हो।

उस दिन खुदा अकेला होगा और काफिर दुश्मन बेशुमार होंगे। खुदा इतना छोटा हैं कि उसे घेरा भी जा सकता हैं।

अरबी खुदा लामहदूद (अनन्त) भी नहीं है। आसमान भी खुदा से वड़ा है। यह जमीन भी खुदा से वड़ी है।

२७. शैतान एक हैं या अनेक

कुरान शरीफ पा० १ सूरे बकर रुकू ४ में खुदा ताला फर्माता है कि—

"और जव मैंने फरिश्तों से कहा कि आदम के आगे झुको तो शैतान को छोड़कर (सारे फरिश्ते) झुक पड़े। उसने न माना और शेखी में आ गया और हुक्म उदूली कर वैठा।"३४।

इस आयत में स्पष्टतया खुदा ने केवल एक ही व्यक्ति का शैतान होना स्वीकार किया है। इसका पहिला नाम अजाजील फरिश्ता था। बाद को जब उसने खुदा का हुक्म न माना तो उसका नाम इब्लीस अर्थात हुक्म न मानने वाला हो गया। उसे ही शैतान कहा गया है।

कुरान में बाइबिल के तौरात भाग को भी ईश्वरीय पुस्तक माना गया है उसमें भी उत्पत्ति नाम के प्रथम अध्याय में शैतान नाम की एक ही सत्ता 'सर्प' को माना गया है जिसने आदम को फुसला कर खुदा का हुक्म न मानने वाला बना दिया था। किन्तु कुरान में अन्यत्र अनेक शैतानों का उल्लेख मिलता है। यथा–

"हमने आसमान और जमीन के पैदा करते समय वल्कि खुद शैतान के पैदा करते समय भी शैतानों को नहीं वुलाया और हम ऐसे न थे कि राह भुलाने वालों को (अपना) मददगार वनाते।"

कु० पा० १५ सू० कहफ रुकू ७ आ० ५१।

"क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफिरों पर छोड़ रखा है कि वह उनको उकसाते रहें।"

कु० पा० १६ सू० मरियम रुकू ५ आ० ८३।

इन दोनों आयतों में खुदा ने अनेक शैतानों का होना स्वीकार किया है जो कि कुरान के ही पहिले लेखों के विरुद्ध है। खुदा की बातों में भारी गोलमाल है। केवल एक ही फरिश्ता शैतान कहलाया था, उसी ने लोगों को गुमराह करने की खम ठोंक कर खुदा के सामने प्रतिज्ञा की थी. उसे ही खुदा ने जन्नत (स्वर्ग) से निकाल बाहर किया था। वह केवल एक ही था। खुदा का बेशुमार शैतान रूपी फरिश्तों की बात कहना कुरान को गलत किताब घोषित करता है। खुदा का यह कहना है कि हमने भुलाने के डर से दुनिया पैदा करते समय शैतानों को नहीं बुलाया, यह बताता है कि लाखों शैतान खुदा के साथ हमेशा से रहते थ जिन्हें खुदा ने नहीं बुलाया था। इससे यह भी जाहिर होता है कि कभी भी खुदा अकेला नहीं था। उसके साथ और भी प्राणी शैतान आदि दुनियां बनने से पहिले भी रहते थे।

शैतान नाम की किसी कौम (जाति) का जिक्र कुरान में नहीं आता है। जिस शैतान (इब्लीस) का उल्लेख कुरान में है वह भी जिन्नों की जाति में से एक जिन्न ही था और उस जिन्न जाति को खुदा ने लू की आग से पैदा किया था। कुरान के अनुसार जिन्न खुदा के आज्ञाकारी फरिश्ते हैं और शैतान उन्हीं में से एक व्यक्ति था। जिन्नों की पैदायश के बारे में कुरान में लिखा है—

"और हम जिन्नों को पहिले लू की आग से पैदा कर चुके थे।"२७।
कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० ३।

कुरान का वर्णन शैतान के विषय में परस्पर विरुद्ध हैं तथा इनसे खुदा का अत्याचार स्पष्ट है क्योंकि वह भूले-भटकों को रास्ता दिखाने के बजाय उन्हें गुमराह कराने को उन पर शैतान लगा देता है ताकि वे लोगों को गलत रास्ते पर डालते रहें। जब खुदा ही लोगों को गुमराह करावे तो फिर उनको सन्मार्ग कौन दिखावेगा और कौन उनका न्याय करेगा ? मुस्लिम विद्वान इस पर स्वयं विचार करें।

२८. फरिश्ते खुदा के तख्त को उठाये हुए हैं

"खुदा के तख्त को आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाये होगें।"१७।
कु० पा० २९ सू० हाक्का।

"जो फरिश्ते खुदा के तख्त को उठाये हुए हैं और जो तख्त के आसपास हैं, अपने परवर्दिगार की तारीफ और पाकी के साथ याद करते रहते हैं...।"७।
कु० पा० २४ सू० मौमिनून रु० १।

वक्तव्य—प्रश्न होगा कि तख्त उठाने वाले फरिश्ते किस चीज पर खड़े हैं। यदि इतने भारी तख्त और खुदा के बोझ से वे थक जावें तो क्या उनकी जगह दूसरे फरिश्ते बदल जाते हैं ? जब फरिश्ते निराधार आकाश में खड़े रह सकते हैं तो खुदा और उसका तख्त भी आकाश में वैसे ही क्यों नहीं रुका रहता

है ताकि फरिश्ते छुट्टी पाकर दूसरा काम खुदा का संभाल सकें।

२६. बहिश्त में नहरें हैं

"जिस बहिश्त का वायदा परहेजगारों से किया जाता है। उसकी कैफियत यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें हैं जिसमें बू नहीं, और दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं वदला और शराव की नहरें हैं जो पीने वालों को वहुत मजेदार मालूम होंगी ..।"

कु० पा० २६ सू० मौहम्मद रु० २ आ० १५।

वक्तव्य—नहरें हमेशा खोद कर बनाई जाती हैं जब कि नदियां कुदरती तौर पर खुद अपना रास्ता बना लेती हैं। कुरान में नदियों का नहीं वरन् नहरों का उल्लेख है। अर्थात् खुदा ने चाहे स्वयं खोद कर या फरिश्तों से खुदवा कर नहरें बहिश्त की जमीन पर तैयार कराई हैं जिनमें पानी किसी में दूध और किसी में शहद किसी में वढ़िया शरावें जिनमें सोंठ और कपूर मिला होता है भरा रहता है। यह नहीं वताया कि यह दूध, पानी, शहद व शराबें उन्हीं में भरी रहती हैं या वह कर किसी तालाव झील या समुद्र में जाकर गिरती हैं। यह नहरें कितनी लम्बी होती हैं? दूध तो उनमें गर्मी के मौसम में सड़ जाता होगा, शहद मट्टी मिल जाने से गन्दा हो जाता होगा। शराब का शायद सड़ने से जायका भी खराव हो जाता होगा। कुछ भी हो मुसलमानों को शरावी बनाने का लालच कुरान ने बहुत जोर दार दिया है। यहां भी वे शराबी वने रहें और वहिश्त में भी शराब की भरमार रहेगी। ऐसी बातों को पढ़ने से मुसलमानों

में कैसी खराब आदतें पैदा होंगी यह सब कोई समझ सकते हैं। यह है कुरान की तालीम का नमूना जिस पर भारतीय मुसलमान फिदा हैं और मौलाना लोग उसकी तारीफ करते नहीं थकते हैं।

३०. खुदा से जमीन का बातें करना

कुरान शरीफ को खुदाई किताब माना जाता है। उसमें स्वयं खुदा की ओर से कसमें खाकर कुरान को खुदाई किताब बताया गया है। इस खुदाई किताब में खुदा ने फरमाया है कि—

"और जब जमीन तान दी जावेगी।३। और जो उसमें है उसे बाहर डाल देगी और खाली हो जायेगी।४। और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगी और यह तो उसका फर्ज ही है।"५।

कु० पा० ३० सू० इन्शिकाक रु० १।

"जब जमीन अपने भूचाल से हिलाई जावेगी।१। और जमीन अपना बोझ निकाल डाले।२। उसी दिन वह अपनी खबरें सुनायेगी।"४।

कु० पा० ३० सू० जिलजाल रु० १।

वक्तव्य—यह आयतें खुदा को अक्ल का देवालिया घोषित कर देती हैं। कयामत के दिन जब जमीन की हर चीज पृथक-पृथक होकर नष्ट हो जावेगी, लोहा, तांबा, पत्थर, मिट्टी, पानी, बालू आदि सभी पदार्थ परमाणु रूप होकर आकाश में बिखर जावेंगे तो जमीन नाम की कोई चीज ही खुदा से बातें करने को या खुदा की बात सुनने को बाकी नहीं रहेगी। क्या जमीन कोई

जानदार जानवर है जो खुदा से बातें करेगी ? खुदा का इल्म कैसा कमजोर था कि वह इतनी तुच्छ सी बात भी नहीं समझ पाता था ? यदि बेजान जमीन, ईंट पत्थर खुदा से बातें कर सकते हैं तो पत्थरों की मूर्तियों से यदि उनके पुजारी बातें करने का दावा करते हैं तो वे गलत क्यों कर माने जावेंगे ? क्या जमीन कोई चादरा है जो तान दी जावेगी ।

३१. इस्लाम में बीबी बदल लेने की रिवाज को खुदा का समर्थन

"अगर तुम्हारा इरादा एक बीबी को बदल कर उसकी जगह दूसरी बीबी करने का हो तो तुमने पहिली बीबी को बहुत सा माल दे दिया हो तो भी उसमें से कुछ भी मत लेना...।"२०।

कु० पा० ४ सू० निसा रु० ३।

वक्तव्य—बीबियों की अदला बदली भी पशुओं की अदला बदली के समान कर लेने की प्रथा शायद इस्लाम में इसीलिये चालू होगी क्योंकि खुदा का समर्थन उसे प्राप्त है। किन्तु इस प्रथा का उल्लेख या उसको समर्थन खुदा वन्द करीम ने तौरात जबूर और इञ्जील में क्यों नहीं दिया। जिससे यहूदी और ईसाई भी इससे फायदा उठा लेते। आश्चर्य है ऐसी-ऐसी बातें भी खुदाई आसमानी किताब में दी गई हैं जिनसे नारी जाति पर अत्याचार करने में मुसलमानों को सदैव ही मदद मिली है। पता नहीं मुस्लिम देवियां कुरान में इन आयतों को पढ़कर क्या सोचती होंगी ? इस्लाम में स्त्रियों की स्थिति का स्पष्टीकरण इससे ह

जाता है कि उसमें औरतें भी बदली जा सकती हैं। यह प्रथा संसार में अन्यत्र कहीं न मिलेगी।

३२. कुरान केवल मक्का वालों के लिये था

कुरान को जो लोग संसार भर के लिए बताते हैं व उसका सभी जगह प्रचार करते हैं वे गलती पर हैं, क्योंकि कुरान सिर्फ मक्का वालों के लिए ही बना था। इस विषय में निम्न प्रमाण देखने योग्य हैं—

"(और ऐ मुशरिकीन अरब ! हमने यह इसलिये उतारी) कि कहीं यह न कह बैठो कि हमसे पहिले बस दो ही गिरोहों पर किताब उतरी थी और हम तो उसके पढ़ने पढ़ाने से बिलकुल बेखबर थे।१५६। या यह उज्र करने लगो कि अगर हम पर यह किताब उतरी होती तो हम जरूर उसको पढ़कर सच्ची राह पर होते। तो अब तुम्हारे पालन कर्ता की तरफ से तुम्हारे पास दलील और उपदेश और दया (कुरान) आ गई है।"

कु० पा० ८ सू० अनआम रु० २० आ० १५७।

"और इसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस पास रहते हैं उनको कयामत के दिन की मुसीबत से डरावे।"

कु० पा० २५ सू० शूरा रु० १ आ० ७।

"(ऐ मोहम्मद यह कुरान) शक्तिवान और मेहरबान ने उतारा है।५। ताकि तुम ऐसे लोगों को डराओ जिनके बाप दादे डराये नहीं गए और वह बेखबर हैं।"६।

कु० पा० २७ सू० यासीन रु० १।

"इसको जिब्राईल अमीन ने उतारा है।१६३। तेर दिल पर ताकि तू डराने वालों में हो जाय।१६४। साफ अरबी जबान में।१६५। और अगर हम कुरान को किसी दूसरी जबान वाले पर उसकी जबान में उतारते।१६८। और वह उसे इन (अरब वालों) को पढ़कर सुनाते तो वह उस पर ईमान न लाते।१६६।"

कु० पा० १६ सू० शुअरा रु० ११।

"और ऐ पैगम्बर ! हमने इस (कुरान) को इस वजह से उतारा है कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आस पास रहते हैं उनको डराओ...।"

कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ११ आ० ६।

वक्तव्य—इन प्रमाणों में कुरान उतारने वा लिखने का उद्देश्य स्पष्टतया यह बताया गया है कि कुरान अरब के जिन लोगों ने इस्लाम को स्वीकार नहीं किया था उन लोगों को खुदाई सन्देश (कुरान) के नाम पर डरा धमका कर मुहम्मद साहब के नये मजहब इस्लाम में लाना मात्र था। अतः कुरान बताता है कि कुरान मक्का और उसके आस-पास के लोगों को डराने धमकाने के ही लिये बना था। वह संसार भर के लिए न तो बना था और न सभी को उसे मानना चाहिये। भारत के मुसलमानों को कुरान मानने से साफ इन्कार कर देना चाहिये। वह उनके लिये नहीं था।

३३. मनुष्यों का शत्रु, अन्यायी व फिसादी अरबी खुदा

कुरान का अरबी खुदा कहता है—

"और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े बड़े अपराधी पैदा किये

ताकि वहाँ फिसाद करते रहें। और जो फिसाद वह करते हैं अपने ही जानों के लिये करते हैं और नहीं समझते।"

कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १५ आ० १२३।

"उसी (खुदा) ने एक गिरोह को हिदायत दी और एक गिरोह को भटका दिया। इन लोगों ने खुदा को छोड़कर शैतान को पकड़ा और समझते हैं कि वह सीधी राह पर है।"

कु० पा० ८ सू० आराफ रुकू ३ आ० ३०।

"हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते, मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सबसे हम नरक भर देंगे।"

कु० पा० २१ सू० सज्दह रुकू २ आ० १३।

वक्तव्य— इसी प्रकार की कुरान में अनेक आयतें दी गई हैं। इनमें खुदा पर जबर्दस्त लान्छन आता है कि स्वयं खुदा ही लोगों को गुमराह करता है, उनको सही रास्ते पर चलने से रोकता है ताकि वे बुरे रास्ते पर चलते रहें और लड़ाई झगड़ा फसाद जनता में पैदा करते रहा करें। इससे गुण्डों पर दोष नहीं आता है क्योंकि वे खुदा द्वारा बदमाशी करने के ही लिये पैदा किये गये हैं। यदि वे शरारत न भी करना चाहें तो खुदा उन्हें मार लगायेगा और अपनी हुक्म उदूली की सजा देगा। इससे प्रगट है कि असली दोषी खुदा ही है इन्सान नहीं।

३४. पैगम्बर नूह के साथी नीच लोग बने थे

हजरत नूह ने जब अपने को खुदा का पैगम्बर घोषित करके अपना नया मजहब फैलाना प्रारम्भ कर दिया तो समझदार

अच्छे आदमी उनके गिरोह में नहीं फंसे थे। इस विषय में कुरान शरीफ का निम्न स्थल देखने योग्य है—

"इस पर उनको जाति के सरदार जो नहीं मानते थे कहने लगे कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे आदमी दिखाई देते हो, और हमारे नजदीक सिर्फ वही लोग तुम्हारे सहायक हो गये हैं जो हममें नीच हैं, और हमतो तुम लोगों में अपने से कोई विशेषता नहीं पाते बल्कि हम तुमको झूठा समझते हैं।"

कु० पा० १२ सू० हूद रु० ३ आ० २७ तथा
पा० १९ सू० शुअरा रु० ६ आ० १११

वक्तव्य—यहूदी नूह इस्लाम को मान्य पैगम्बर थे। कुरान के अनुसार उनके चक्कर में ना समझ गरीब नीच लोग ही फंसे थे। सम्भवतः ऐसा ही ह० मुहम्मद साहब के भी साथ हुआ था। चतुर लोग सीधे ना समझ लोगों को बहकाकर अपना प्रभाव डाल कर इसी प्रकार नये-नये सम्प्रदाय चालू कर लेते हैं। कुरान ने भी बहिश्त में खूबसूरत औरतें-लोंडे-गोश्त-शराब जेवर आदि के लालच देकर अरब के ना समझ ऐश पसन्द लोगों को इस्लाम की ओर आकर्षित किया था। जन्नत में औरतों का लालच देकर मजहब में लोगों को खींचना, यही इस्लाम की विशेषता नजर आती है जो अन्य मजहबों में नहीं देखी गई है।

३५. गैर मुस्लिमों से लड़ने, उन्हें लूटने व कत्ल करने का आदेश

"काफिरों से लड़ते रहो यहाँ तक कि फिसाद न रहे और सब खुदा ही का दीन हो जाय।३९। और जान रखो कि जो चीज तुम लूट

कर लाओ उसका पांचवाँ भाग खुदा और पैगम्बर का और पैगम्बर के सम्बन्धियों का रहेगा।"४१।

कु० पा० १० सूरे अनफाल रुकू ४।

वक्तव्य—इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि गैर मुस्लिमों से लड़ कर उनको लूट कर तबाह कर देने तथा उनको तलवार के ज़ोर पर मार-मार कर मुसलमान बनाने का आदेश कुरान ने दिया था और उसी जुल्मों सितम के तरीके से इस्लाम दुनियां में फैलाया गया। लोगों को इस्लाम में कोई खूबी की बात नहीं मिली थी और समझदार लोगों ने उसे इसीलिये स्वीकार नहीं किया था, इसीलिए जोर जुल्म मार-काट व लूट मार के आदेश कुरान में देकर इस्लाम को फैलाने का यह तरीका अपनाया गया था। लूट के माल में पैगम्बर व उसके घर वाले को घर बैठे मुफ्त को माल मिलता रहे इसलिये पांचवां हिस्सा उनका लूट में बांध लिया गया इतिहास साक्षी है कि लूट मार कत्लेआम द्वारा इस्लाम के प्रसार का जो तरीका कुरान ने बताया था उस पर चल के कुरान के भक्तों ने संसार में जो अत्याचार किये वे लोमहर्षक थे। बंगला देश में हाल में किये गये पाकिस्तानी जुल्मों ने पिछले युग के अत्याचारों की याद ताजा करा दी जिसे कुछ सरफिरे लोग गलत बताते थे।

३६. हजरत मौहम्मद के बारे में तत्कालीन अरब लोगों की सम्मतियां

(अरब के रहने वाले) 'बल्कि कहने लगे कि यह तो विचारों की सिरखप्पन है बल्कि इसने यह झूठी बातें अपने दिल से गढ़ ली हैं, बल्कि

यह (तो) कवि है नहीं तो कोई चमत्कार दिखावे जैसे अगले पैगम्बरों ने दिखलाये हैं।५। कु० पा० १ सू० अम्बिया रु० १।

"मक्के के (काफिर कहते हैं) कि ऐ शख्स ! तुझ पर कुरान उतरा है, तू पागल है।६। अगर तू सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता।"७। कु० पा० १४ सूरे हिज्र रु० १।

"और काफिर (कुरान की निस्बत) कहते हैं कि यह तो निरा झूठ है जिसको इस (मुहम्मद) ने गढ़ लिया है और दूसरे लोगों ने उसकी मदद की है। यही लोग झूठ और जुल्म पर हैं।"४।

कु० पा० १८ सू० फुर्कान रु० १।

"और कुरान से पहिले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते थे और न अपने हाथ से लिखना ही आता था। अगर तुम ऐसा करते होते तो बेशक यह झूठा ठहराने वाले लोग शक कर सकते थे।"

कु० पा० २१ सू० अन्कबूत रु० ५ आ० ४८।

"और कहते थे कि भला हम अपने पूजितों को एक पागल शायर के लिये छोड़ दें।"

कु० पा० २३ सू० साफ्फात रु० २ आ० ३६।

"हमने इनको (मुहम्मद को) शायरी नहीं सिखाई और शायरी इनके योग्य भी नहीं।"

कु० पा० २३ सूरे यासीन रु० ५ आ० ६९॥

वक्तव्य—इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि अरब के लोग मुहम्मद साहब की पैगम्बरी पर कतई विश्वास नहीं करते थे। वे उनको शायर मानते थे क्योंकि वे उन ही के साथ व उन ही के स्थान के रहने वाले थे। मुहम्मद साहब पर तो उनकी दलीलों

का कोई उत्तर बनता नहीं था। खुदा मुहम्मद साहब की ओर से जवाब देही करने आ जाता था। खुदा ने मुहम्मद को बिल्कुल बे पढ़ा लिखा बता दिया और कह दिया कि मुहम्मद को शायरी भी करना नहीं आता था, वे लिखना पढ़ना तक नहीं जानते थे। इससे पता चलता है कि मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त था।

एक स्थान पर कुरान में लोगों के आक्षेपों का कोई भी उत्तर न बन सकने पर घबड़ा कर खुदा को ह० मुहम्मद साहब से कहलाना पड़ा कि —

"क्या तुमको झुठलाते हैं और तुम पर ऐतराज करते हैं और कहते हैं कि कुरान को इसने खुद बना लिया है (तुम उनको जवाब दो) कि अगर कुरान मैंने खुद बना लिया है तो मेरा गुनाह मुझ पर है और जो तुम करते हो मेरा कुछ जिम्मा नहीं है।"

कु० पा० १२ सूरे हूद रुकू ३ आ० ३५

इससे यह पता चल जाता है कि ह० मुहम्मद साहब को अरब के लोग पैगम्बर नहीं मानते थे और न उनकी रचना 'कुरान' को ही खुदाई पुस्तक मानते थे। उनकी निगाह में मुहम्मद कवि (शायर) थे और कुरान उन्हीं की शायरी की किताब थी। फरिश्ते, बहिश्त, दोजख व कयामत की कहानियां उन्हीं की कल्पना मात्र थीं। जिस प्रकार का वर्णन इनके बारे में कुरान में लिखा गया है वैसी कोई भी बात तौरात, जबूर और इन्जील में भी नहीं दी गई है जिनको कुरान ने अपने से पहले उतरी खुदाई किताब माना है। हूरों व गिलमों का भी कोई जिक्र उनमें नहीं है।

३७. खुदा ने लोगों को काफिर बनाके कत्ल कराया

कुरान में खुदा के विलक्षण बयान व आदेश देखकर बुद्धिमानों को खुदा की समझ पर आश्चर्य होता है। अरबी खुदा एक स्थान पर आदेश देता है कि—

"फिर जब अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहाँ पाओ कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो। उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो।"

कु० पा० १० सूरे तौबा रुक १ आ० ५॥

इस आयत में खुदा ने उन लोगों को कत्ल करने का आदेश दिया है जो कि खुदा के साथ किसी अन्य की भी पूजा करते थे। मुशरिक का अर्थ है कि वे लोग जो खुदा के साथ दूसरों को शामिल करते हैं। खुदा उनसे सख्त नाराज था और उनको प्रत्यक्ष अथवा धोखे से जैसे भी हो सके कत्लेआम करने का अपने अरबी मुसलमान भक्तों को हुक्म देता था। किन्तु हम दूसरे स्थान पर कुरान में लिखा देखते हैं कि खुदा स्वयं यह कहता है कि—

"अगर खुदा चाहता तो वे (मुशरिकीन लोग किसी को) शरीक न ठहराते"। कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १३।१०७

इससे स्पष्ट है कि खुदा की स्वीकृति से ही लोगों ने खुदा का शरीक ठहराया था, यदि खुदा यह नहीं चाहता कि लोग मुशरिक बनें तो कोई भी मुशरिक बनने की गलती न करता। जब पहिले खुदा की इच्छा से ही लोगों ने गलती की तो फिर खुदा को उन्हें कत्ल करने का आदेश देना सरासर उनके साथ ज्यादती थी।

अन्यत्र भी कुरान कहता है कि—

"जिसको खुदा सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल इस्लाम के लिये खोल देता है और जिस शख्स को भटकाना चाहता है उसके दिल को तंग कर देता है ।"

कु० पा० ८ सूरे अनआम रु० १५ आ० १२५॥

जब यह बात है तो लोगों को मुशरिक या काफिर बनाने की सारी जिम्मेदारी कुरानी अरबी खुदा की हैं जो खुद ही लोगों को गलत रास्तों पर डालता है फिर उनको कत्ल कराता है और उन्हें दोजख में डालता है। जो व्यक्ति खुद ही जानबूझ कर अपने बुरे इरादे की बजह से लोगों को नेक रास्ते पर जाने से रोक कर गलत रास्ते पर डालता हो क्या ऐसा शख्स भी खुदा माना जा सकता है ? ऐसे खुदा से इन्साफ की क्या उम्मेद की जा सकती है ।

३८. क्या इञ्जील खुदा ने उतारी थी ?

कुरान के खुदा की हर बात विलक्षण होती है । उसे गलत बातें कुरान में कहने में कोई संकोच नहीं होता था। हम एक ऐसी ही खुदा की गलत बात द्रष्टान्त के तौर पर उपस्थित करते हैं। कुरान में लिखा हैं—

"और खुदा ईसा को आसमान की किताब और अक्ल की बातें और तौरात और इन्जील सिखा देगा ।"

कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० ५ आ० ४८ ॥

वक्तव्य—इसमें विचार की वात यह है कि इञ्जील नाम की पुस्तक ईसा की वनाई हुई नहीं है। ईसा मसीह के मरने के वाद उनके शिष्यों ने जो छोटी-छोटी २७ पुस्तकें व पत्र लिखे थे उनको मसीह के मरने के ३२५ वर्षों के वाद संग्रह करके छपवाया गया था, जिसका नाम इञ्जील रखा गया था। अनेक ऐसी पुस्तकें और भी थीं जो ईसाई लोगों में प्रचलित थीं, किन्तु उनको संग्रह के लिए ना पसन्द किया गया था, और वे रद्दी कर दी गई थीं। इस प्रकार ईसा मसीह के द्वारा लिखित अथवा उन पर उतारी गई या ख़ुदा द्वारा उनको सिखाई गई कोई भी किताव इञ्जील नाम की कभी नहीं थी जिसको ख़ुदा ने ईसा को सिखाने का गलत दावा कुरान में किया है। ऐसी वात कहने से ख़ुदा व कुरान दोनों की शान में बट्टा लगता है और लोगों को कुरान पर अविश्वास पैदा होता है।

३९. हम उम्र औरतें (हूरें) जन्नत में मिलेंगी

क़ुरान कहता है—

"परहेजगार वेशक कामयाव होंगे।३१। (यानी रहने को) वाग और (खाने को) अंगूर।३२। और नौजवान औरतें हम उम्र।३३। और छलकते हुए (शराव के) प्याले।"

कु० पा० ३० सू० नवा रु० २।

वक्तव्य—यहां एक वात विवादास्पद है कि जवान मुसलमान मरेगा तो जवानी के जिस्म में वहिश्त में जावेगा और बूढ़ा मौलवी मरेगा तो बुढ़ापे की सफेद दाढ़ी, विना दांतों का पोपला मुंह, झुर्रीदार चेहरा, सूखा शरीर लिये जन्नत में पहुंचेगा और

वहां दोनों को ही हम उम्र खूबसूरत अछूती औरतें मिलेंगी और वह भी एक दो नहीं वरन ७०-७० हूरें तथा ७२-७२ गिलमें खुदा उन सबको देगा व हूरों से व्याह भी करा देगा।

यहां प्रश्न यह है कि बूढ़ा मुसलमान इतने सारे गिलमों (लोडों) को कैसे इस्तेमाल करेगा। यदि औरतें जवान होंगी तो वे बूढ़े आदमी को क्यों कर पसन्द करेंगी। यदि बूढ़े को हम उम्र बूढ़ी हूरें मिलेंगी तो उस बूढ़े आदमी को उनमें क्या आनन्द आवेगा? यदि आदमी जवान हुआ और औरतें बूढ़ी हुई तो बिचारे को जिन्दगी खवार हो जावेगी। कुरान का 'हम उम्र औरतों' से क्या मतलब है यह गुप्त भेद जमैयत उल उल्माये हिन्द के विद्वानों को खुलासा कर देना चाहिए ताकि बूढ़े मुसलमान भाइयों की दिमागी परेशानी कुछ दूर हो सके। वैसे कुरान ने जन्नत में हूरों, गिलमों, शराबों, मेवों का लालच लोगों को इस्लाम में फांसने के लिये बढ़िया दिया है। अय्याशी पसन्द लोगों पर यह जादू काम कर सकता है। जन्नती मुसलमानों मौलवियों को खुदा द्वारा पेश की जाने वाली इन हूरों गिलमों व शराबों की दावत के लिये हमारी पेशगी बधाई है। क्योंकि वे लोग इसके लिए कु० पा० ३० सूरे ततफीफ आ० २६ के अनुसार बेचैन रहते हैं।

४०. पहाड़ हवा में उड़ेंगे

"और तू पहाड़ों को देखकर ख्याल करता है कि ये जमे हुए हैं। मगर ये कयामत के दिन बादल की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे…।" ८८।

कु० पा० २० सू० नम्ल रु० ७।

"और पहाड़ चलने लगेंगे।"

कु० पा० २७ सू० तूर रु० १ आ० १०।

वक्तव्य—कयामत के दिन पहाड़ चलने लगेंगे तो चल कर कहाँ जावेंगे ? यदि उड़ेंगे तो क्या उड़ते ही रहा करेंगे या यदि कभी कावे की मस्जिद पर गिर पड़ें तो क्या होगा ! कितनी तवाही मचेगी यदि वे किसी अरब के शहर पर गिर पड़ेंगे ? जब इतने वजनी पहाड़ उड़ने लगेंगे तो मुसलमान मर्द औरतें बच्चे उनके मकान मस्जिदें भी क्यों न उड़ेंगे ? यदि सभी हवा में आंधी की पतंग की तरह उड़ गए तो जन्नत में फिर मुसलमान मर्द औरतें कैसे जा सकेंगे और खुदा की फैसले की कचहरी कैसे व कहां पर लग सकेगी, यह शंकायें स्वभावतः यहां पैदा होंगी जिनका समाधान किया जाना जरूरी है।

४१. सम्पूर्ण कुरान इलहाम नहीं है

कुरान शरीफ में फरिश्तों के द्वारा कही हुई आयतें हैं, अरब के लोगों की कही हुई आयतें हैं, दोजख के अन्दर काफिरों के द्वारा कही हुई आयतें हैं, मूसा, ईसा, मरियम, नूह, यूसुफ, याकूब सुलैमान हुदहुद और रानी का किस्सा कहानी इब्राहीम आदि के द्वारा कही हुई आयतें हैं। कुछ आयतें मुहम्मद साहब के द्वारा भी कही हुई हैं तथा कुछ आयतें खुदा की ओर से कही हुई भी लिखी हैं। इस प्रकार सारा कुरान अनेक लोगों के द्वारा कहे गये वाक्यों का संग्रह ग्रन्थ है। इस पर किसी मुसलमान का या कुरान का यह दावा करना कि सारा कुरान खुदा की कही हुई आयतों का संग्रह है सर्वथा मिथ्या होगा। यदि कुरान को खुदाई

कलाम रखना है तो उसमें से वे सैकड़ों आयतें किस्से कहानियां बिलकुल निकाल डालने चाहिये जिनमें दूसरों के कहे वाक्य व कथायें दी हुई हैं। कुरान पारा १२ में यूसुफ की कुल १११ आयतें सारी की सारी ऐतिहासिक अथवा कल्पित कहानी से भरी पड़ी हैं जिसमें उपदेश या शिक्षा अथवा इलहाम की रत्ती भर भी कोई बात नहीं है। खुदा और शैतान के आपसी लड़ाई झगड़े से भरी हुई पचासों आयतें कुरान में कई-कई बार लिखी गई हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मौजूदा पूरा कुरान इलहाम (खुदा की ओर से कही गई बातों) की पुस्तक नहीं है।

४२. खुदा ने भाई बहिन के ब्याह का क्रम चलाया था

कुरान में लिखा है —

"अपने परवर्दिगार से डरो जिसने तुमको एक शख्स से पैदा किया और उससे उसकी बीवी को पैदा किया और उन दो से बहुत मर्द और औरत फैला दिये ।"

कु० पा० ४ सू० निसा रु० १ आयत १।

कुरान में इस आयत पर भाष्यकार ने निम्न फुट नोट दिया है—

"यानी सबसे पहिले हजरत आदम को पैदा किया फिर उसकी बीवी (हव्वा) को बनाया और फिर उन्हीं से आदमी की नस्ल चली। जितने हैं सब आदम की सन्तान हैं।"

"वही है जिसने तुमको एक शरीर से पैदा किया और उससे उसकी स्त्री को निकाला ताकि पुरुष स्त्री की तरफ ध्यान दे ...।"

कु० पा० ६ सूरे आराफ रु० २४ आ० १८९।

"उसी ने मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मट्टी से पैदा किया।" कु० पा० २७ सूरे रहमान रु० १ आ० १४।

वक्तव्य—इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि खुदा ने सर्वप्रथम 'आदम' नाम के मनुष्य का सूख कर खन खन बोलने वाली मट्टी के गारे से एक पुतला बनाया, उसमें रूह फूंक कर उसे जिन्दा किया फिर तौरात के अनुसार उस आदम की एक पसली निकाल कर उससे उसकी बीवी हव्वा को पैदा किया। इस प्रकार एक पुरुष स्त्री का पहला जोड़ा बनाया गया। कुरान के अनुसार उन्हीं दो की सन्तानों ने जो कि सगे भाई बहिन थे आपस में विवाह करना प्रारम्भ कर दिया और सारी मनुष्य जाति इस्लामी मत के अनुसार भाई बहिनों के आपस के व्यभिचार की ही सन्तान हैं।

कुरान के अनुसार खुदा को यह सगे भाई बहिनों के व्यभिचार (शादी) की बात पहिले मंजूर थी। पर कुरान में सगे भाई बहिनों की शादी पर प्रतिबन्ध लगा दिया जैसा कि कुरान में लिखा है कि—

"जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो तुम उनके साथ निकाह न करना, मगर जो हो चुका सो हो चुका। यह बड़ी शर्म और गजब की बात थी और बहुत ही बुरा दस्तूर था।२२। रुकू ३॥ "तुम्हारी मातायें, बेटियां और तुम्हारी बहिनें और तुम्हारी बुआयें और तुम्हारी मौसियाँ और भान्जियाँ, भतीजियां और तुम्हारी मातायें जिन्होंने

तुम्हें दूध पिलाया और दूध शरीकी बहिनें और तुम्हारी सासें तुम पर हराम हैं। जिन औरतों के साथ तुम सुहबत कर चुके हो उनकी पूर्व पति से पैदा हुई लड़कियां जो तुम्हारी गोदों में परवरिश पाती हैं लेकिन अगर तुमने इन बीवियों के साथ संगत न की हो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और तुम्हारे बेटों की स्त्रियाँ और दो बहनों का एक साथ रखना भी तुम पर हराम है। मगर जो हो चुका सो हो चुका बेशक अल्लाह माफ करने वाला मेहरबान है।"

कु० पा० ५ सूरे आल इमरान रुकू ४ आ० २३।

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि खुदा को कुरान लिखते समय ध्यान आया था कि सगे भाई बहिनों की शादी (व्यभिचार) को बन्द करा दिया जाय। इससे पहले तक भाई बहिन, मां बेटे में व्यभिचार में खुदा को कभी बुराई समझ में नहीं आई। तभी तो कुरान में खुदा ने पिछले दस्तूर को बुरा कहा है। अरबी खुदा दरअसल इतना कम समझ था कि वह भाई बहिन की शादी से होने वाली हानियों को पहिले से समझ ही नहीं पाया था। यदि पहले से वह यह जानता होता कि करीबी रिश्तों से होने वाली सन्तानों में कोढ़, कम अक्ल, शरीर की बढ़वार का रुकना आदि पचासों बीमारियां पैदा होती हैं तो वह प्रारम्भ में ही अनेक स्त्री पुरुषों के जोड़े पैदा करता और तब सन्तानों की शादियां दूर के खानदानों में होते रहने से यह भाई बहिन की शादी से वंश चलने का दोष मनुष्य जाति पर नहीं आता और न ईसाई तथा इस्लामी मजहब तथा खुदा पर कलंक लगता और न उसे पछताना पड़ता जैसा कि वह कुरान में पछताया है। कुत्ते व घोड़े पालने वाले भी उत्तम नस्ल बनाने को दूसरी नस्ल के घोड़े व कुत्तों से गर्भाधान कराते हैं। उनको पालने वाले भी इस तथ्य को जानते हैं

कि नस्ल सुधारने के लिए सम्बन्ध दूर के रिश्ते अथवा परिवार में करना चाहिये, इससे रक्तदोष भी पैदा नहीं हो पाता है।

वैदिक धर्म इसीलिए यह घोषणा करता है कि सर्वप्रथम ईश्वर ने सैकड़ों स्त्री पुरुषों को पैदा किया था जिनके सम्बन्धों से सृष्टि में मनुष्य जाति का विस्तार हुआ। वेदों की यह मान्यता सत्य व निर्दोष है।

अकेले आदम से मानव जाति के प्रारम्भ की कल्पनापूर्ण मान्यता तौरात इन्जील व कुरान की इसलिए भी दोषपूर्ण है कि उनको हुए लगभग ५ हजार साल होते हैं जबकि पृथ्वी पर मानव जाति का इतिहास वैज्ञानिक खोजों के आधार पर करोड़ों वर्ष पुराना सिद्ध किया जा चुका है। लाखों करोड़ों साल पुराने मानव व अन्य जीवों के अस्थि पन्जर पृथ्वी के अन्दर से प्राप्त हो चुके हैं। अतः आदम से पांच सहस्त्र वर्ष पूर्व मानवीय उत्पत्ति की कल्पना गलत साबित हो चुकी है।

४३. खुदा का लिखा ही मिलेगा

"पैगम्बर ! कहो कि जो कुछ खुदा ने हमारे लिये लिख दिया है वही हमारे लिए पहुंचेगा ...।" ५१।

कु० पा० १० सू० तौबा रु० ७।

वक्तव्य—बिना मनुष्यों द्वारा पूर्व कर्म किये हुए उनके विभिन्न प्रकार के भाग्य बनाने का खुदा को कोई अधिकार नहीं था। फिर जो कुछ भी खुदा ने कुरान के अनुसार लिख रखा है वह तो उसे हर सूरत में देना ही पड़ेगा चाहे कोई काम करे या

न करे। परिश्रम करने पर भी भाग्य से ज्यादा उसे मिलना नहीं है और न उसका लिखा हुआ ही बिना मिले रहेगा। इसी प्रकार के लेखों से मनुष्य कर्मवादी वनने के स्थान पर भाग्यवादी बन कर आलसी, निकम्मा वन गया है। क़ुरान की यह आयत पुरुषार्थ को नष्ट करने वाली है।

४४. कुरान का अरबी खुदा बेरहम बे इन्साफ है

"अगर खुदा चाहे तो सब लोगों को राह पर ले आवे।३१। और जिसको खुदा गुमराह करे उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं।"

कु० पा० १३ सू० राद रु० ४।

"ऐ पैगम्वर ! तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो जितने आदमी जमीन की सितह में हैं सब के सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों को मजबूर कर सकते हो कि वह ईमान ले आवें।" ९९।

कु० पा० ११ सू० हूद रु० १०।

"अल्लाह जिसे चाहे बे हिसाव रोजी दे।"२१२।

कु० पा० २ सू० वकर रु० २६।

"जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुम में और उन लोगों में जिनको कयामत का विश्वास नहीं है, एक परदा कर देते हैं।४५। उनके दिलों पर आड़ रखते हैं ताकि कुरान को न समझ सकें और उनके कानों में बोझ डालते हैं ताकि सुन न सकें।४६।

कु० पा० १५ सू० बनी इसराइल रु० ५।

"ऐ पैगम्वर ! भला देखो तो जिसने अपनी ख्वाहिशों का अपना

पूजित ठहराया और इल्म होते हुये भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया और उसके कानों पर और उसके दिल पर मुहर लगादी और उसकी आंखों पर परदा डाल दिया तो खुदा के (गुमराह किये) पीछे उसको कौन हिदायत दे।" २३।

कु० पा० २५ सू० जासियह रु० ३।

"और आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह की है, जिसको चाहे माफ करे और जिसको चाहे सजा दे....।" १४।

कु० पा० २६ सू० फतह रु० ३।

"किसी शख्स के हक में नहीं है कि बिना हुक्म खुदा के ईमान ले आवे।" १००। कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० १०।

वक्तव्य—इन आयतों से स्पष्ट है कि बिना खुदा की आज्ञा वा इच्छा के कोई भी आदमी मुसलमान नहीं बन सकता है और न कुरान कयामत और पैगम्बर पर ईमान ला सकता है। ऐसी दशा में इस्लाम का प्रचार करना भी गलत काम है क्यों कि खुदा यदि चाहता तो संसार के सारे मनुष्य मुसलमानी मत को स्वयं स्वीकार कर लेते पर खुदा को यह मन्जूर नहीं है।

अब इसके विपरीत इसी कुरानी खुदा का भयंकर जुल्म ढाने के आदेश

"किताब वालो (मुसलमानो)! जो न खुदा को मानते हैं और न कयामत को और न अल्लाह को और उसके पैगम्बर को, न हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन को मानते हैं, इन से लड़ो (कत्ल करो) यहां तक कि जलील होकर (अपने) हाथों से जजियां

दें"। (जजिया टैक्स मुसलमान शासक अपने से गैर मजहब वालों से लेते हैं।) कु० पा० १० सू० तौबा रु० ४ आ० २६।

"काफिरों से लड़ते रहो यहां तक कि फसाद न रहे और सब खुदा का ही दीन हो जाय।३६।"

कु० पा० १० सू० अन्फाल रु० ५।३६

वक्तव्य—जब खुदा स्वीकार कर चुका है कि बिना मेरी मर्जी के कोई भी मुसलमान नहीं बन सकता है तो फिर गैर मुसलमानों (हिन्दुओं) के कत्लेआम का आदेश देना उसका कहां का न्याय है? क्या ऐसा गैर जिम्मेवार व्यक्ति भी खुदा माना जा सकता है जो अपनी ही शान्तिप्रिय प्रजा में मारकाट मचवाता रहता हो?

जो खुदा केवल मुसलमानों का पक्षपाती हो वह खुदा ही नहीं माना जा सकेगा। जो किताब कुरान ऐसी बातें कहती है वह धर्म पुस्तक कैसे मानी जा सकती है क्योंकि वह विभिन्न जातियों में वैमनस्य फैलाती है। भारत में हिन्दू मुस्लिम झगड़े, मार काट, लूटमार कुरान की इन्हीं गलत शिक्षाओं का कुपढ़ मुसलमानों के दिमागों पर गलत असर होने से उन्हीं की ओर से इसीलिए होते रहते हैं। मुस्लिम उल्माओं को चाहिए कि कुरान में मे ऐसी फिसाद फैलाने वाली आयतों का संशोधन करादें ताकि किसी भी देश की शान्ति में कुरान बाधक न बन सके। अन्ध विश्वासी मुसलमानों के दिमाग कुरान को पढ़कर खराब हो जाते हैं जब वे कुरान में पढ़ते हैं कि—

"मुसलमानों! अपने आस पास के काफिरों (हिन्दुओं) से लड़ो और चाहिये कि वे तुमसे सख्ती मालूम करें।"

कु० पा० ११ सू० तौबा रु० १६ आ० १२३

मुस्लिम विद्वान क्या इस आयत को कुरान में दुरुस्त कराने का साहस दिखा सकेंगे ताकि जहरीली बातों का प्रचार रुक सके।

खुदा खुद ही लोगों को कुरान सुनने से रोक देता है उनके कानों, दिलों व दिमागों पर परदे डाल देता है कि वे सही रास्ते (या इस्लाम) को न समझ सकें और फिर उनको काफिर बताता है व सजा देने की धमकी देता है।

खुदा बिना बजह के किसी की रोजी बढ़ा देता है और दूसरों की कम कर देता है तो खुदा बे इन्साफ है। खुदा का काम तो न्यायपूर्ण होना चाहिये। जो अच्छे काम करें उनकी उन्नति करे जो बुरे काम करें उनकी अवनति करे तब तो खुदा का न्याय होगा। पर बिना वजह किसी को इनाम व किसी को दुःख देने वाला कुरानी खुदा अन्यायी माना जावेगा। कुरान के विद्वान खुदा को न्यायी सिद्ध करें।

४५. बीबियां खेतियां हैं

"फिर जब नहा धो लें तो जिधर से जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है उनके पास जाओ।२२२। तुम्हारी बीवियां तुम्हारी खेतियां हैं। अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ।२२३।

कु० पा० २ सू० बकर रु० २८।

वक्तव्य—इनमें पहिले तो खुदा ने मासिक स्नान के बाद औरतों के पास विषय भोगों के लिये जाने पर शर्त लगादी कि जैसे जिधर से खुदा ने बताया है उधर से वैसे ही उनके पास जाओ

(प्रसंग करो)। किन्तु दूसरी आयत में पहिले आदेश के वन्धन को समाप्त कर दिया गया और कहा गया कि जैसे किसान अपने खेत में चाहे जब चाहे जिधर से चाहे जैसे प्रविष्ट हो जाता है, मुसलमानों को भी छूट है कि वे भी जिधर से चाहें जैसे चाहें जब उनके पास उस कार्य के लिए जा सकते हैं। हमारी समझ में खुदा का यह दूसरा आदेश एक भयंकर बुराई के प्रचार का कारण बनेगा। जो अरब के लोगों में पहिले से मौजूद थी। खुदा को उसके लिए रास्ता साफ करने वाला हुक्म नहीं देना चाहिए था।

४६. खुदा के केवल दो हाथ हैं

कुरान में लिखा है—

"वल्कि खुदा के दोनों हाथ फैले हुए हैं; जिस तरह चाहता है खर्च करता है....।" कु० पा० ६ सूरे मायदा रु० ९ आ० ६४।

वक्तव्य—इस आयत में कुरानी खुदा के दो हाथों का उल्लेख है। हमारे ख्याल से हिन्दू लोग इस कल्पना में अरबी खुदा से बाजी मार ले गये हैं। उनकी दुर्गा के ८ हाथ हैं विष्णु के चार मुँह व चार हाथ हैं। रावण के दस सिर व अनेक हाथ थे। सहस्त्रबाहु के हजार हाथ थे। शक्ति के चार हैं। हिन्दू इस कल्पना में भी आगे ही रहे हैं। निराकार ईश्वर के सत्य स्वरूप को न समझने से इन सम्प्रदायवादी लोगों ने ईश्वर की मनमानी शक्लों की कल्पनायें करके उसे वदनाम कर डाला है।

४७. खुदा गवाहों को बुलावेगा

"क्या हाल होगा जब हम हर गिरोह से गवाह को बुलावेंगे और हम तुझे (ऐ मुहम्मद) इन पर गवाह तलब करेंगे।"

कु० पा० ५ सू० निसा रु० ६ आ० ४१।

कुरान के अनुसार खुदा हर आदमी पर गवाह बुलाकर उसके भले बुरे कर्मों पर गवाहियां लेगा। गवाही वही मुंसिफ लेता है जो मुकद्दमे की वास्तविकता स्वयं नहीं जान पाता है। गवाहियों से सच्चाई मालूम करनी पड़ती है। कुरान के अनुसार खुदा भी बिना गवाह के हर बात नहीं जान पाता है। वह इसीलिए गवाह बुलावेगा। खुदा भी गवाहियां लेकर फैसला करता है यह भी दिलचस्प बात है।

कुरान में लिखा है—

"जब इनकी जबानें और इनके हाथ और इनके पांव इनके कर्मों की जो कुछ वे करते थे गवाही देंगे।२४। उस दिन अल्लाह इनको पूरा-पूरा बदला देगा और जान लेंगे कि अल्लाह ही सच्चा दिखाने वाला है।"२५।

कु० पा० १८ सू० नूर रु० ३।

कयामत के दिन हर आदमी के हाथ पांव, जबान, खाल आदि अपने कर्मों की खुद गवाही देंगे तो पैगम्बर रूपी गवाहों की खुदा को क्यों जरूरत पड़ेगी यह बात समझ में आने वाली नहीं है क्योंकि जब मुल्जिम खुद ही इकबाली है तो फिर शहादत की जरूरत नहीं पड़ती है। इसके अतिरिक्त कुरान और भी लिखता है—

"और (लोगों की कारगुजारियों) का रजिस्टर रखा जावेगा तो (ऐ पैगम्बर) तुम गुनहगारों को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में है उससे

डर रहे हैं और कहे जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य यह कैसा रजिस्टर हैं और जो कुछ इन लोगों ने किया था कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखी हो (वह सब उसमें लिखा) मौजूद पावेंगे····।"

कु० पा० १५ सू० कहफ रुकू ६ आ० ४६।

"और हर एक छोटा और बड़ा काम सब लिखा हुआ है।५२।

"और हर काम जो उन्होंने किये हैं किताब में लिखे है।"

कु० पा० २७ सू० कमर रुकू ३ आ० ५३।

"जब दो लेने वाले दाहिने और बांये बैठे हुए लेते जाते हैं।"

कु० पा० २६ सू० काफ रु० २ आ० १६।

इस आयत पर फुट नोट में लिखा है--

"हर आदमी के साथ दो फरिश्ते रहते हैं आदमी जो काम करता है या जो बात कहता है ये दोनों उसको लिखते जाते हैं।"

इन आयतों के अनुसार खुदा के पास पक्के जिल्द बंधे रजिस्टरों में हर आदमी के कर्मों का हाल रोजाना लिखा जाता है तथा दो-दो फरिश्ते हर व्यक्ति के कर्मों को रोजनामचे में लिखते रहते हैं जो कि कयामत के दिन दिखाये जावेंगे। तो जब खुदा के पास इतने सबूत मौजूद होंगे, हर आदमी खुद भी अपने कर्मों को स्वीकार करेगा, खुदा का रोजनामचा पेश होगा तब फिर खुदा के सामने पैगम्बरों की फौज गवाही देने क्यों जावेगी और उसकी खुदा को क्यों जरूरत होगी, यह बात अक्ल में आने वाली नहीं है। उलमाये कुरान इसे स्पष्ट करें।

४८. कर्मों के अनुसार दर्जे होने की बात गलत है

कुरान में खुदा कहता है--

"और जैसे जैसे कर्म किये हैं उन्हीं के बमूजिब सबके दर्जे होंगे और जो कुछ कर रहे हैं तुम्हारा परवर्दिगार उससे बेखबर नहीं है।"

कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १६ आ० १३२।

वक्तव्य—क़यामत के दिन फैसले के बाद लोग बहिश्त व दोजख में भेज दिये जावेंगे और वहां बहिश्त में सभी के साथ एक-सा व्यवहार होगा, सबको बराबर हूरें व गिलमें मिलेंगे, तख्त, रेशमी पोशाक, शराबें, गोश्त, मकान, मेवा, पानी आदि सभी को एक जैसी मिलेंगी। सौने के कड़े भी सभी को मिलेंगे। कुरान में बहिश्तियों के साथ किसी भी प्रकार के भेद भाव का कोई उल्लेख कहीं भी नहीं है। इसी प्रकार दोजख में जाने वालों में सभी को गन्धक के कपड़े ७०-७० हाथ लम्बी जंजीरों से बांधने की बात सभी की खालें, आतें जलना सेंहुड़ का पेड़ खाना, खौलता गर्म पानी पीना, बराबर मार पड़ना सभी का हमेशा दोजख की आग में जलना आदि प्रकार की सभी को समान सजा मिलने का उल्लेख कुरान में अनेक स्थानों पर दिया है। कहीं भी यह नहीं बताया कि कर्मों के अनुसार कुछ लोग दोजख से जल्दी निकल आवेंगे या उनको कम ज्यादा सजा मिलेगी।

ऐसी दशा में कुरान का कर्मों के अनुसार दुःख-सुख आदि मिलने के दर्जे होने की बात सर्वथा मिथ्या हो जावेगी।

४६. खुदा इस्लाम का पक्षपाती है

अरबी खुदा कहता है—

"और हमने तुम्हारे लिए दीन इस्लाम को पसन्द किया। दीन तो खुदा के नजदीक यही इस्लाम है।"१६।

कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० २।

वक्तव्य—कुरानी खुदा की बात का कोई विश्वास नहीं करना चाहिये। खुदा ने पहिले तौरात के अनुसार यहूदी मजहब को पसन्द किया था। उस के बाद यहूदी मजहब के संशोधित संस्करण इञ्जील के ईसाई मजहब को पसन्द किया और अपने इकलौते बेटे ईसा को जगत में (बकौल इञ्जील के) भेजा था। अब खुदा इन दोनों से हटकर कुरान के मुहम्मदी मजहब (इस्लाम) के गीत कुरान में गाता है और ईसाई लोगों को काफिर बताता है, जैसा कि कुरान में उसने कहा है कि—

"और जो लोग मरियम के बेटे मसीह को खुदा कहते हैं, वह काफिर हैं।"१७। कु० पा० ६ सू० निसा रु० ३।

"मुसलमानो ! यहूद और ईसाइयों को अपना मित्र न बनाओ।"५१।

कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ८।

जब कि मसीह को खुदा का बेटा इञ्जील ने माना है और खुदा ने भी उसे उनमें अपना खास बेटा बताया है और इञ्जील को कुरान ने खुदाई किताब माना है तो खुदा को अपनी ही किताब के मानने वाले ईसाइयों को काफिर बताना कहां तक उचित होगा यह विचारणीय है। अरबी मुस्लिम खुदा की यह भी एक विशेषता है कि वह अपनी जबान व लेख का भी पायबन्द

नहीं है। मुस्लिम विद्वान खुदा की स्थिति पर ध्यान देवें। ऐसे खुदा पर कोई कैसे विश्वास करेगा ?

अर्बी खुदा ईसाईयों का दुश्मन था

"तो जो लोग अपने को ईसाई कहते हैं हमने उनसे वचन लिया था तो जो कुछ शिक्षा उनको दी गई थी, उससे फायदा उठाना भूल गये। फिर हमने उनमें दुश्मनी और ईर्षा कयामत के दिन तक के लिये लगा दी....।"१४।

"जो लोग मरियम के बेटे मसीह को खुदा का बेटा कहते हैं। वही काफिर हैं।"१७।

कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ३।

वक्तव्य—खुदा का काम भटके लोगों को सीधे रास्ते पर डालना था न कि उनमें ईर्षा द्वेष के दुर्गुण पैदा करके उन्हें बुरे रास्ते पर चलाना। यदि ईसाईयों ने खुदा की इन्जोल की शिक्षा से लाभ नहीं उठाया तो वे स्वयं घाटे में रहते। खुदा को उन में ईर्षा डालने की क्या जरूरत थी और ईर्षा भी ऐसी डाली कि कयामत तक न मिटसके। यह काम खुदा का शैतानी काम रहा है। इन्जील में खुदा ने ईसा को अपना खास बेटा बताया है तब यदि ईसाई मसीह को खुदा का इकलौता बेटा मानते हैं। तो वे काफिर क्यों हुए ? वे तो खुदा की ही बात पर विश्वास करते हैं।

५१. अल्लाह लूटमार कराता

"बहुत सी लूटें उनके हाथ लगीं और अल्लाह बड़ी हिकमत वाला

है।१६। अल्लाह ने तुमको बहुत सी लूटों के देने का वायदा किया था कि तुम उसे लोगे फिर यह (खैबर की लूट) तुमको जल्दी दी।"२०।

"और दूसरा वायदा (खुदा का) लूट का है जो तुम्हारे काबू में नहीं आया। वह खुदा के हाथ है। और अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है।"२१। कु० पा० २६ सू० फतह रु० ३।

नोट—लूट का समर्थन कु० पा० २८ सू० हशर रु० २ में आ० ७ से १० तक में भी किया गया है। ऐसी औरतें जिनका खाविन्द जिन्दा है। उनको लेना भी हराम है मगर जो (लूट में) कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हैं। उनके लिये तुमको खुदा का हुक्म है···।"२४।

कु० पा० ५ सू० निसा रु० ४।

वक्तव्य—लूटमार कराना मारकाट कराना आग लगाकर जनता को बरबाद कराना बदमाश गुण्डे डकैत व जाहिल लोगों के काम होते हैं। आश्चर्य है कि अरबी खुदा भी इन गुण्डापन के कामों को अपने चेलों से कराता था। उन बदमाशों को लूट मार के वायदे करता था। उनसे निर्दोष प्रजा की औरतों की इज्जत उनका धन और उनकी सम्पत्ति लुटवाता था। यदि ऐसा खुदा कहीं भारत सरकार के हाथ में आजावे तो वह अवश्य उसे I.P.C. के अनुसार जेल भेज देगी। कुरान की इसी शिक्षा का प्रभाव था कि पाकिस्तानी गुन्डों ने बंगला देश को लूटा आगें लगाईं और लाखों बहू बेटियों की इज्जत के साथ खिलवाड़ की जो आज भी उनके अत्याचारों के लिए रोरही हैं। कुरानी शिक्षा बंगाली मुस्लिम व हिन्दूओं को कितनी मंहगी पड़ी है वे ही जानते हैं।

५२. चोरों के हाथ काट डालो

"अगर मर्द चोरी करे तो या औरत चोरी करे तो उनकी करतूत के वदले में दोनों के हाथ काट डालो।"

कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ६ आ० ३८।

वक्तव्य—इस सख्त सजा के डर से लोग चोरी करने से बच सकेंगे, यहां तक तो ठीक हैं। किन्तु जो आदमी या खुदा प्रजा को लूटने का आदेश व आर्शीर्वाद देवे तथा लूट कराने का गुन्डों को वायदा करे उस सरगना को भी यदि सजा देने की व्यवस्था कर दी गई होती तो उचित रहता ताकि फिर कोई खुदा के इस्लाम के साथ पक्षताप करने का दोष न लगा सकता।

५३. सबकी उम्र निश्चित है

कुरान में लिखा है—"और कोई शख्स वेहुक्म खुद मर नहीं सकता, जिन्दगी लिखी हुई है।"

कु० पा० ४ सूरे आल इमरान रुकू १५ आ० १४६।

"हर कौम की एक म्याद है। फिर जब उनकी मौत आवेगी तो न एक घड़ी घटेगी और न एक घड़ी बढ़ेगी।"

कु० पा० ८ सूरे आराफ रुकू ४ आ० ३४।

वक्तव्य—यदि कुरान की यह बात सत्य है कि हर एक की जिन्दगी खुदा की ओर से निश्चित है, न एक पल पहले कोई मर सकता है न उसके बाद कोई जिन्दा रह सकता है तो फिर खुदा ने मुसलमानों को पा० १० सूरे तौबा रुकू ४ आ० २९ में काफिरों

को कत्ल करने का क्यों हुक्म दिया है ? काफिरों को कोई भी मुसलमान नहीं मार सकता है क्योंकि उसकी जिन्दगी की म्याद पर उसको स्वयं खुदा मार देगा। उससे पहले कोई उसे मार न सकेगा। और उम्र की म्याद कब पूरी होती है यह सिवाय खुदा के कोई जान नहीं सकता है। तो खुदा ने मुसलमानों को काफिरों का कातिल बनने का हुक्म देकर बदनाम क्यों कराया है ? उल्मायें कुरान विचार करें।

५४. कर्मफल यहाँ या कयामत को इच्छानुसार मिलेगा

"और जो शख्स दुनियाँ में बदला चाहता है हम उसका बदला यहीं दे देते हैं और जो कयामत में बदला चाहता है उसको वहीं दूंगा और जो लोग शुक्र करते हैं मैं उनको जल्दी बदला दूंगा।

कु० पा० ४ सू० आल इमरान रु० १५ आ० १४६।

समीक्षा—इसमें बताया गया है कि जो लोग बदला यहां चाहते हैं उन्हें यहां ही खुदा दे देता है और जो नहीं चाहते हैं बहिश्त में चाहते हैं या कयामत के दिन चाहते हैं उन्हें बदला वहां या उसी दिन मिलता है। यह खुदा की घोषणा है। किन्तु हम देखते हैं कि खुदा की यह घोषणा मिथ्या है क्योंकि कुरान में ऐसी मिसालें हैं कि लोगों के बिना चाहते हुए भी खुदा ने उनको यहां पर ही बदले चुका दिये हैं जैसा कि लिखा है कि—

"फिर जिस काम से उनको मना किया जाता था जब उसमें हद से बढ़ गये तो हमने उनको हुक्म दिया कि फटकारे हुए बन्दर बन जाओ।"

कु० पा० ६ सू० आराफ रु० २१ आ० १६६।

"जिन पर खुदा ने लानत की और उन पर अपना कोप उतारा और किसी को बन्दर और सूअर बना दिया था।"

कु० पा० ६ सू० मायदा रुकू ९ आ० ६०।

इस आयत से खुदा के पहिले दावे का खण्डन हो जाता है। हुक्म न मानने वाले लोगों ने कभी खुदा से उनके कर्मों का नतीजा यहां पर ही देने को नहीं कहा था मगर खुदा के दिमाग में गर्मी आ गई और तत्काल उसने विना उनकी प्रार्थना के इसी जिन्दगी में सजा (कर्मफल) दे डाला। साथ ही इस्लाम के इस उसूल पर भी हड़ताल फेर दी कि मरने के बाद रूहों को खुदा अपने पास बुला कर रखता है और कयामत के दिन इन्सान को उसी की शक्ल में वहिश्त व दोजख में भेजता है। यहां तो उसने मनुष्यों को कर्मफल भोगने को बन्दर की योनि में भेज दिया ऐसा लिखा है, जो कि हिन्दुओं के मान्य सिद्धान्त पुनर्जन्म का समर्थन तथा विजय है। क्योंकि कर्मफल भोगने के लिए जीवों का विभिन्न योनियों में जाने का सिद्धान्त वैदिक धर्म की मान्यता है। सूरते आल इमरान की आयत से यह भी साबित है कि बदला इन्सान की मर्जी के अनुसार खुदा देता है अपनी उसकी कोई व्यवस्था (या कानून) नहीं है। कयामत के दिन ही फैसला होगा पैगम्बर वकील मुकदमा खुदा से लड़ेंगे, किताबें रखली जावेंगी, खुदा की कचहरी लगेगी और उसी में फैसला होगा यह कुरान का दावा इसलिये गलत है कि कयामत के दिन ही फैसला होने की बात इस आयत से जरूरी नहीं रह गई है।

५५. खुदा ही सबके पीछे शैतान लगाता है

कुरान में शैतान और खुदा के झगड़े का किस्सा कई जगह

दिया है। पा० २३ सूरे साद रुकू ५ में लिखा है कि शैतान ने खुदा से कहा कि—

"फिर (शैतान) बोला तेरी इज्जत की कसम, मैं इन सबको गुमराह करूँगा।८२। (खुदा ने कहा कि) मैं तुझसे और जो कोई उनमें से तेरी पैरवी करेगा उनसे नरक को भर दूँगा।८५।

वक्तव्य—इन आयतों में यह बताया गया है कि शैतान ने खुदा से कहा कि मैं दुनियां को बहकाऊँगा। खुदा का कोई वस शैतान पर नहीं चल सका न उसमें इतनी ताकत निकली कि अपनी प्रजा की उस बदमाश शैतान से रक्षा कर पाता। बल्कि यह और कह दिया कि जिनको शैतान बहकायेगा उन्हीं को खुदा भी सजा देगा। जिस खुदा का शैतान बहादुर पर कोई बस न चल सका हो उससे बचना इन्सान बिचारे की ताकत से तो बाहर है।

अब एक अन्य आयत हम पेश करते हैं जिसमें यह बताया गया है कि खुदा साहब खुद ही लोगों पर शैतान मुकर्रर करते हैं, बेचारे शैतान का तो खामखां (व्यर्थ में) नाम बदनाम कुरान ने कर रखा है। वह आयत यह है—

"और जो शख्स (खुदा) कृपालु की याद से बराता है हम (खुदावन्द) उस पर एक शैतान मुकर्रर कर दिया करते हैं और वह उसके साथ रहता है।३६। और शैतान पापियों को राह से रोकता है और यह समझते हैं कि हम राह पर हैं।३७।"

"इसी तरह हमने हर पैगम्बर के लिए आदमी और जिन्नों में से शैतान पैदा किये जो एक दूसरे को मुलम्मा जैसी झूठी बात धोखा देने को सिखाते हैं।" कु० पा० ७ सू० अनआम रु० १४ आ० ११२।

इन आयतों से सिद्ध होता है कि कुरानी खुदा ही वास्तव में

लोगों को सही रास्ते पर नहीं चलने देता है। वह बदमाश शैतानों को पैदा करके लोगों पर लगा देता है जो उनको गलत रास्ते पर डालते रहते हैं। मनुष्य जाति का असली दुश्मन कुरानी खुदा है। उल्माये कुरान बतावें कि क्या खुदा ऐसा ही है जैसा कि कुरान ने उसे साबित किया है ?

५६. मनुष्य जाति का शत्रु खुदा है

परमात्मा ने संसार बनाया है, वह सभी का पिता, सखा, हितैषी है। वह सब जीवों का कल्याण व उन्नति चाहता है और सभी को उन्नति का सुअवसर प्रदान करता है। किसी की हानि चाहना, उनमें फूट डालना, उन्नति देखकर जलना, उनमें मार-काट कराना, विद्वेष पैदा कराने वाले उपदेश देना यह परमेश्वर का कार्य नहीं है। किन्तु कुरान में खुदा के बारे में लिखा है–

"मुसलमानो ! काफिरों को दोस्त मत बनाओ।"

कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ६ आ० ५७।

"यह बात जान लो कि खुदा को काफिरों की तदवीरों को नाफिस कर देना मंजूर है।"

कु० पा० ९ सू० अन्फाल रुकू २ आ० १८।

"काफिरों और मुनाफिकों से जहाद करो और उन पर सख्ती करो ..."

कु० पा० १० सूरे तौबा रु० १० आ० ७३।

"मुसलमानो अपने आसपास के काफिरों से लड़ो और चाहिये कि वे तुमसे सख्ती मालूम करें।"

कु० पा० ११ सू० तौबा रु० १६ आ० १२३।

"मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं। मगर किसी तरह उनसे बचना चाहो (मसलहतन) तो जायज है।२८।

कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० ३।

"ईमान वालो ! ईमान वालों (मुसलमानों) को छोड़कर काफिरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम खुदा का जाहिर अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो।"

कु० पा० ६ सूरे निसा रुकू २१ आ० १४४।

वक्तव्य—जो कुरानी अरबी खुदा अपनी ही प्रजा से द्वेष रखता है और उनको परस्पर लड़ाने की शिक्षा देता है। मार काट कराना व उस के लिए उकसाता है जो प्रजा में शान्ति व सुख को देखकर जलता है। मुसलमानों के साथ पक्षपात करता है। उनको दूसरे धर्म वालों के साथ मेल मिलाप से रहने से रोकता है और धोखा देने के लिए जरूरत पर मेल करने की शरारत की नसीहत देता है वह व्यक्ति खुदा नहीं हो सकता है और न जिस किताब में ऐसी बातें लिखी हों वह खुदा या किसी शान्ति प्रिय आदमी की लिखी किताब मानी जा सकती है ? क्या यह सम्भव है कि खुदा स्वयम् को बदनाम करने वाली बातें अपनी ही किताब में लिखें ?

५७. खुदा द्वारा फरिश्तों की फौजी मदद

इञ्जील के प्रकाशित वाक्य ९-१६ में लिखा है कि खुदा के पास बीस करोड़ घुड़ सवार फौज रहती है। पता नही पैदल

सैना, हवाई सैना, मोटर सैना, ऊंट सैना, टैन्क सेंना आदि की संख्या कितनी होगी और इतनी विशाल सैना खुदा की रक्षा भी कर सकेगी या नहीं। खुदा किस से इस सैना को ले कर लड़ने जावेगा ?

क्योंकि कुरान भी तौरात, जबूर और इन्जील की ही नकल करके लिखा गया था, अतः वही बातें उसमें भी लिख दी गई हैं। कुरान में लिखा है कि जब एक लड़ाई में काफिरों से मुसलमान हारने लगे तो खुदा ने मदद भेजी थी—

"जबकि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना काफी नहीं कि तुम्हारा परवर्दिगार तीन हजार फरिश्ते भेज कर तुम्हारी मदद करे।१२५। बल्कि अगर तुम मजबूत बने रहो और बचो और (दुश्मन) अभी इसी दम तुम पर चढ़ आवें तो तुम्हारा परवर्दिगार पांच हजार फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा।१२६। (यह मदद) इसलिये थी कि काफिरों को कम करे या जलील करे ताकि वे ना कामयाब होकर वापिस चले आयें।१२८।

कु० पा० ४ सू० आल इमरान रु० १३।

"फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर पर और मुसलमानों पर अपना सब्र उतारा और ऐसी फौजें भेजीं जो तुमको दिखलाई नहीं पड़ती थीं और काफिरों को बड़ी सख्त मार दी और काफिरों की यही सजा है।

कु० पा० १० सू० तौबा रु० ४ आ० २६।

कु० पा० सूरे अहजाब रु० २ आ० ६ में भी फरिश्तों की फौज लड़ाई में भेजने का उल्लेख किया गया है—

"और हमने उसके पीछे उसकी कौम पर आसमान से (फरिश्तों

को) कोई लश्कर न उतारा और हम (फौजें) नहीं उतारा करते।२८।

कु० पा० २३ सू० यासीन रु० २।

वक्तव्य—इञ्जील व तौरात को भी कुरान ने खुदाई किताब माना है। अतः कुरान व इञ्जील से साबित है कि खुदा के पास बेशुमार फौजें अपनी रक्षा को रहती हैं। वरना कभी यदि मनुष्य विगड़ जावें तो खुदा को भी लूटमार करके बराबर कर सकते हैं। यदि खुदा को कोई डर नहीं है तो फौजें क्यों रखता है। खुदा की क्या शान रही जो उसे नाचीज काफिरों से लड़ने को फोजें भेजनी पड़ीं ? कभी-कभी खुदा खुद भी लड़ने आया करता था। ऐसे को खुदा कहा जावे या मामूली इन्सान या कोई छोटा सा राजा या कमजोर जमींदार माना जावे। पहिले फौजें भेजने की बात कुरान में लिखी है और बाद को कहता है कि हम फौजें नहीं भेजा करते है ? यह परस्पर विरोधी बातें नहीं तो क्या हैं। दोनों में से एक या दोनों ही बातें झूठी माननी पड़ेंगी। सारी जमीन के देशों की मिला कर भी तीन करोड़ फौज नहीं है जब कि अकेली खुदा के पास २० करोड़ सिर्फ घुड़ सवार फौज है। खुदा भी शायद फौजी कमाण्डर होगा।

अरब की खुदाई किताबों में ऐसी बातें नहीं मिलेंगी तो और कहाँ मिलेंगी ?

५८. खुदा ने लोगों को गुमराह किया

इस सम्बन्ध में कुरान के निम्न स्थल देखने योग्य हैं—

"इनमें ऐसे भी (लोग) हैं कि तुम्हारी तरफ कान लगाते है और उनके दिलों पर हमने परदे डाल दिये, इनके कानों में वोझ हैं ताकि तुम्हारी बात न समझ सकें ।"

कु० पा० ७ सू० अनआम रु० २१ आ० २५।

"उसी ने एक गिरोह को हिदायत दी और एक गिरोह को भटका दिया ।" कु० पा० ८ सू० आराफ रु० ३ आ० ३०।

"हमने वहुतेरे जिन्न और मनुष्य दोजख ही के लिए पैदा किये हैं ।" कु० पा० ९ सू० आराफ रु० २२ आ० १७९।

"अगर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो लोगों का एक ही मत कर देता ।" कु० पा० १२ सू० हूद रु० १० आ० ११८।

"खुदा चाहता तो तुम (सव) को एक ही गिरोह बना देता, मगर वह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सुझाता है ।"

कु० पा० १४ सू० नहल रु० १३ आ० ९३।

वक्तव्य—जब खुद हीं खुदा नही चाहता कि लोग कुरान को सुनें और यदि कोई सुनता है तो उसके दिल दिमाग व कानों पर परदे डाल देता है। ताकि लोग इस्लाम को या अरबी खुदा की हिदायतों को न समझ सकें। खुदा स्वयं ही लोगों को गुमराह भी बिना वजह बिना किसी गुनाह के करता रहता है। खुदा चाहता तो सभी लोग इस जमीन के नेक व धर्मात्मा बन जाते, सभी एक मत के होते और आपस में मेल मिलाप व प्रेम से रहते, खुदा सभी को एक मत का बना सकता था। मगर अरबी कुरानी खुदा इतना विचित्र है कि उसे यह सब कुछ

वर्दाश्त नहीं था। उसने जान-बूझ कर लोगों में फूट डाल दी, लोगों को कुमार्गगामी बना दियां, इनके चाहने पर भी उन्हें नेक रास्ते पर नहीं जाने दिया। वह कहता है कि हमने बहुत से मनुष्य और जिन्न दोजख ही के लिये पैदा किए थे और उनको दोजख में झोंकना ही है तो इसका अर्थ यह हुआ कि जिनको दोजखी पैदा किया है उनको फिर गुनाहों के लिये दोष देना खुदा का वेकार है। वे नेक तो वन ही नहीं सकते हैं क्योंकि खुदा ने उनको जिस लिये जिस मार्ग पर डाला है उससे कोई भी उन्हें हटा नहीं सकता है।

प्रश्न यह है कि विना कारण उनको दोजखी व दूसरों को जन्नती ख़ुदा ने क्यों पैदा किया है ? यदि पूर्व जन्म में उनके कर्म खराव होते तो उनका दोष उन्हें दिया जा सकता था। पर वैसा कुछ कुरान मानता नहीं है। तो विना वजह किसी को अच्छा और किसी को बुरा दुःखी बना देना खुदा के जुल्म व बे-इन्साफी का ही सवूत है। खुदा की किताव में खुदा को जालिम वताया जावे यह एक विचित्र वात है। मुस्लिम विद्वानों को इस पर विचार करना चाहिये और ऐसी किताव को धर्म ग्रन्थ नहीं मानना चाहिए जो खुदा की पाक जात को कलंकित करने वाली हो।

५९. पाप नाश का सरल नुस्खा

कुरान में लिखा है—

"और जो कोई बुरा काम करे या आप अपनी जान पर जुल्म करे

फिर अल्लाह से माफी माँगे तो अल्लाह को बख्शने वाला मेहरबान पावेगा।"

कु० पा० ५ सू० निसा रु० १६ आ० ११०।

वक्तव्य—बुराई की सजा अवश्य मिलेगी, कोई भी कैसे भी नहीं बच सकेगा। यह विश्वास जब किसी को होता है तो वह बुरे काम करने से डरता रहता है। किन्तु यदि उसे यह विश्वास हो कि कोई भी बुरा काम करलो खुदा से एक बार माफी मांग लेने पर पाप नाश हो जावेंगे तो बुराई से भय निकल जाता हैं तथा बुराई के प्रचार को प्रोत्साहन मिलता है। अरबी खुदा ने कुरान में इस पाप नाश के आसान किन्तु गलत नुस्खे को लिख कर मुसलमानों को गुनाह करने के लिए प्रोत्साहन दिया हैं इसी लिए वे लोग कोई गुनाह करने में डरते नहीं हैं।

६०. खुदा कर्ज मांगता है

(क) "खुश दिली से खुदा को कर्ज देते रहो तो हम जरूर तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर कर देंगे और जरूर तुमको ऐसे बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी ।"१२।

कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ३।

इसमें कर्ज देने वाले को पाप क्षमा करने और सीधा उसे बहिश्त देने की गारन्टी दी गई है।

(ख) "ऐसा कौन है जो खुदा को खुशदिली से कर्ज दे वह उसके लिये दूना करदे और उसके लिये इज्जत का फल है।"

कु० पा० २७ सू० हदीद रु० २ आ० ११।

इसमें कर्ज को मय सूद के दूना वापिस देने का खुदा ने वायदा किया है।

(ग) "अगर तुम अल्लाह को खुश दिली से उधार दो तो वह तुमको उसका दूना करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और अल्लाह कदर जानने वाला दयालु है।"

कु० पा० २८ सू० तगाबुन रु० २ आ० १७।

इसमें पाप क्षमा व मय सूद को दूना वापिस करने का वायदा खुदा ने किया है।

(घ) "कोई है जो खुदा को खुश दिली से कर्ज दे कि उसके कर्ज को उसके लिये कईगुना वढ़ा देगा।"

कु० पा० २ सू० बकर रु० ३२ आ० २४५।

वक्तव्य—इस में कर्ज को मयसूद को कई गुना देने का प्रस्ताव है जो कि दुगने तिगुने से भी बहुत ज्यादा होगा। इस प्रकार खुदा ने न तो कोई सूद के वारे में पक्की एक बात रखी है न पाप क्षमा व बहिश्त देने की सभी जगह एक सी बात रखी है। कहीं कुछ, कहीं कुछ वायदे किये हैं। इस से कर्ज मांगने वाले की नियत पर शक हो जाता है कि तरह-तरह के वायदे करने वाला कर्जदार कहीं बाद को देवालिया बन बैठा तो साहूकारों का पैसा मारा जावेगा। यह भी खोल देना चाहिए था कि कर्ज कितने दिनों के लिये खुदा को चाहिए?

कुछ भी हो पाप क्षमा कराने व बहिश्त जाने का रास्ता पैसे वालों को मालूम हो गया कि खुदा को पैसा कर्ज दे देने से दोनों काम आसानी से हो जावेंगे। सभी जगह रिश्वत व पैसे की ही माया है। गरीबों की सभी जगह मौत है। न वे खुदा को कर्ज रिश्वत दे सकेंगे और न बहिश्त के हूरों गिलमें और वहां की

कस्तूरी व सोंठ मिली शराबों का आनन्द उठा सकेंगे। शायद कर्ज तो सभी से लेना खुदा को मंजूर होगा चाहे कर्ज देने वाले यहूदी, मुसलमान, ईसाई या हिन्दू कोई भी क्यों न होवें। हमको भय है कि यदि सभी काफिर मिल कर लम्बी रकम खुदा को रिश्वत या कर्ज में देकर पाप माफ कराकर बहिश्त में जाकर कब्जा करलें तो फिर दोजख में कौन जावेगा, वह तो खाली ही रह जावेगी।

६१. कुरान में तलाक की विचित्र विधि

कुरान में औरत को तलाक तीन वार में दी जाती है। दो बार तलाक देने वाद तीसरी वार की अन्तिम तलाक के बारे में लिखा है—

"अब अगर औरत को (तीसरी बार) तलाक दे दी तो इसके वाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न कर ले उसके लिये हलाल नहीं (हो सकती) हाँ अगर (दूसरा पति उससे विषय भोग करके) उसको तलाक दे दे तो दोनों मियाँ बीबी पर कुछ पाप नहीं कि फिर दूसरे से (परस्पर) प्रेम करलें ..।"

कु० पा० २ सूरे बकर रु० २९ आ० २३०।

इस पर भाष्यकार का फुट नोट है कि—"तलाक का यह दस्तूर है कि जब कोई मुसलमान मर्द अपनी औरत को तलाक देता है तो कम से कम दो आदमियों के सामने तलाक देता है। और एक महीने बाद दूसरी तलाक भी इसी प्रकार देता है। यहां तक तो मियां बीबी में सुलहनामा हो सकता है। इसके एक

महीने बाद तीसरी तलाक दी जाती हैं। इस तलाक के बाद फिर मर्द उस औरत के पास नहीं जा सकता। यह औरत ३ माह १० दिन बाद निकाह कर सकती है। दूसरे पति के साथ निकाह हो जाने पर अगर दूसरा पति तलाक दे दे तो सिर्फ इस हालत में कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग करा चुकी हो (हम बिस्तर हो चुकी हो) अपने पूर्व पति के साथ फिर निकाह कर सकती हैं। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ निकाह करके विषय भोग न करा ले कदापि पूर्व पति के साथ निकाह नहीं कर सकती।"

वक्तव्य—तलाक की प्रथा जारी होने से कोई भी मुस्लिम स्त्री दावे के साथ नहीं सोच सकती है कि उसका पति उसका जीवन भर साथ दे सकेगा। जब कि हिन्दू पति पत्नी जीवन भर एक दूसरे के साथी रहने को दृढ़ प्रतिज्ञ होते हैं।

तलाक के तरीके के बारे में हमें केवल इतना ही कहना है कि तीसरी तलाक के बाद क्यों पूर्व पति अपनी पत्नी को तब तक नहीं ले सकेगा जब तक कि वह किसी गैर आदमी से निकाह करके विषय भोग न करा आवे। क्या गैर आदमी से विषय भोग कराके आने पर स्त्री में कोई विशेष गुण या आनन्द पैदा हो जाता है ? उत्तम तो यही होता कि बिना अन्य मर्द से मिले वह वापिस आ जाती और पहला पति उसे स्वीकार कर लेता। इस्लाम में यह दूसरे पति से संभोग कराने वाली शर्त क्यों लगाई गई है यह मुस्लिम विद्वान कृपया स्पष्ट करें।

६२. कुरान पुरानी किताबों की तफसील है

"यह किताब (कुरान) उस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे। बल्कि जो (किताबें) इसके पहले की (तौरात, जबूर, इञ्जील) हैं इनकी तस्दीक है और इन्हीं की तफसील हैं...।" कु० पा० ११ सूरे यूनिस रुकू ४ आ० ३७।

वक्तव्य—यह बात सत्य है कि कुरान में अपना बहुत थोड़ा भाग है ज्यादा मसाला पहिली किताबों से लिया गया है। इससे स्पष्ट है कि महत्व पहिले की पुस्तकों का है और कुरान के उनकी व्याख्या मात्र होने से उसका कोई महत्व धर्म पुस्तक के रूप में नहीं रह जाता है। इस आयत ने कुरान की सारी प्रतिष्ठा ही नष्ट करके रख दी है। यदि यह आयत कुरान में न होती तो स्वतन्त्र पुस्तक के रूप में कुरान का महत्व बना रह सकता था। मुस्लिम विद्वान इस पर विचार करें।

६३. बहिश्त में हूरें व गिलमें मिलेंगे

कुरान के बहिश्त में मुसलमान मर्द व उनकी बीवियां दोनों ही जावेंगे ऐसा कुरान में वर्णन आता है। यथा—

"तुम और तुम्हारी बीवियाँ जन्नत में जा दाखिल हों ताकि तुम्हारी इज्जत की जावे।"

कु० पा० २५ सू० जुखरूफ रु० ७ आ० ७०।

बहिश्त में जाने पर शराबें, गोश्त, मेवे, तकिये, सोने के कंकन

मसन्द, आबखोरे, तख्त, हरे रेशमी कपड़े आदि सभी को मिलेंगे। साथ ही ७०-७० हूरें व ७२-७२ गिलमें भी अय्याशी को खुदा हर एक को देगा। सम्भवतः यही औरतों को भी मिलेंगे। हूरों की प्रशंसा में कुरान में लिखा है—

"उस (वहिश्त) में पाक हूरें होंगी, जो आंख उठाकर भी नहीं देखेंगी और वहिश्त वासियों से पहिले न तो किसी मनुष्य ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने।५६। हूरें जो खीमे में बन्द हैं।" ७२।

कु० पा० २७ सू० रहमान रु० ३।

"उनके पास लोंडे हैं (गिलमें हैं) जो हमेशा लोंडे ही बने रहेंगे।१८। हमने हूरों की खास सृष्टि बनाई है।३५। फिर इनको क्वारी बनाया। प्यारी समान अवस्था वाली।३६ व ३७।

कु० पा० २७ सू० वाक़िया रु० १।

"और हमने बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें उनको ब्याह दी हैं।२०। और लड़के (गिलमें) उनके पास आयेंगे जायेंगे गोया यत्न से रखे हुए मोती हैं।" २४। कु० पा० २७ सूरे नूर रु० १।

वक्तव्य—हमको शंका यह है कि मर्द तो मर्द होने से हूरों और गिलमों (लौंडे) दोनों को ही भोग सकेंगे परन्तु औरतें वहां जावेंगी वे समलैङ्गिक होने से न तो हूरों को ही भोग सकेंगी और न लड़कों (गिलमों) के ही आनन्द लूट सकेंगी। हां यदि कहीं वे लोंडे बिगड़ कर बदमाशी पर उतर आये तो हर एक औरत के लिए बड़ी भारी मुसीबत पैदा कर देंगे। वहिश्त में पुलिस भी नहीं होगी जो उन बेचारियों की उन शरारती लौडों से रक्षा कर सके। फिर यह भी कुरान में नहीं बताया है कि वहां मर्दों को उन ७०-७० हूरों और ७२-७२ गिलमों को इस्तेमाल करने

के लिए कोई वन्द मकान भी खुदा देगा। खुले मैदान में शरावें पीकर यदि वहां शरारत की गई तो बहिश्ती मुसलमानों की बीवियां इतनी औरतों व लोंडों से अपने शौहरों को तफरीहें करते देखकर क्या सौतिया डाह से जल-जल कर न मरेंगी ? हमारा प्रस्ताव हैं कि ऐसे इस्लामी बहिश्त में मियां लोग अपनी औरतों व औलाद को अपने साथ न ले जावें तो अच्छा होगा वरना उन सभी की आदतें खराव हो जावेंगी। क्योंकि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है।

६४. खुदा बा-अदब आदमियों को सलाम पेश करता है

कुरान में खुदा ने सलाम किया है। नमूना देखें—

"सारे जहान में नूह पर सलाम ।७९। इब्राहीम पर सलाम ।१०९। मूसा और हारून पर सलाम है।१२०। इल्यास पर सलाम है।१३०। पैगम्बरों पर सलाम है।१८१।

कु० पा० २३ सू० साफ्फात रु० ३-४-५।

वक्तव्य —यह नियम है कि हमेशा छोटा ही वड़े को सलाम करता है। कुरान बताता है कि खुदा ने लोगों को अदब के साथ सलाम किये हैं। सलाम हमेशा झुक कर सीधा हाथ माथे से लगा कर किया जाता है। खुदा का भी सलाम उसी तरह करना खुदा का दर्जे में छोटा होना साबित करता है।

६५. खुदा जालिमों को रास्ता नहीं दिखाता

"खुदा जालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता है ।५१। कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ८।

"हम बे-हुक्म लोगों के दिलों पर मुहर कर दिया करते हैं।"
कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० ८ आ० ७४।

वक्तव्य—दवा बीमार को दी जाती है, उपदेश भूले भटकों को दिये जाते हैं। जो लोग स्वस्थ होते हैं उनको दवा तथा ठीक रास्ते पर चलने वालों को रास्ता नहीं बताया जाता है। और जो वैसा करता है उसे गलत माना जाता है। जो लोग गलत रास्ते पर चले गये होते हैं उन्हीं के लिए धर्म व उपदेश तथा गलत रास्ते पर जाने से रोकने को डर दिखाये जाते हैं। पर क़ुरानी ख़ुदा स्वयं ही लोगों के दिलों पर मौहर लगा देता है ताकि वे ठीक रास्ते पर न आ सकें और फिर उनको उपदेश न देने की शेखी मारता है। पता नहीं कैसा खुदा है और लोग ऐसे बे-इन्साफ को ख़ुदा कैसे मान लेते हैं।

६६. खुदा के जुल्म का नमूना

कुरान शरीफ में खुदा कहता है—

"हमको जब किसी गांव को मार डालना मंजूर होता है (तब) हम उसके खुशहाल लोगों को आज्ञा देते हैं। फिर वह उसमें बेहुक्मी करते हैं तब उन पर यह सज़ा साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को मार कर तबाह कर देते हैं।" १६।
कु० पा० १५ सू० बनी इसराइल रु० २।

वक्तव्य—यह आयत खुदा के लोगों को तबाह करने के हथकन्डों का भण्डाफोड़ कर देती है। खुदा ऐसे हुक्म खुशहाल लोगों

को देता हैं जिन्हें वे न मान सकें तो फिर उसी जुर्म पर उन्हें मार डालता है। उसे लोगों को खुशहाल (फलते फूलते) देखकर जलन होती है और तब उनको बरबाद करने को बुरे हथकन्डे खुदा काम में लाता है। खुदा का काम तो लोगों को खुशहाल बनाना होना चाहिये मगर वह तो उससे होता नहीं है, उल्टा उनको तबाह करता फिरता है। ऐसे भयानक ईर्षालु खुदा से जहां तक बचा जावे उतना ही अच्छा है।

६७. खुदा के साथ दूसरे की इबादत न करो

"खुदा के साथ किसी दूसरे की इबादत नहीं करना। नहीं तो तुम दुर्दशा पाकर बैठ जाओगे।"

कु० पा० १५ सू० बनी इस्राइल रु० २ आ० २२।

वक्तव्य—इस आयत से स्पष्ट है कि मुसलमानों के कल्मे में "मौहम्मद रसूलिल्लाह" जोड़कर इबादत के समय उसे बोलना कुरान के विपरीत होने से कुफ्र (पाप) है। कल्मे का संशोधन किया जाना उचित होगा।

६८. तीन-तीन व चार-चार औरतों से ब्याह करो

"तीन-तीन चार-चार औरतों से निकाह कर लो लेकिन अगर तुमको इस बात का शक हो कि (विषय भोग में) बराबरी न कर सकोगे तो एक ही बीबी करना। या जो तुम्हारे कब्जे में हो उस पर सन्तोष करना। यह तदबीर मुनासिब है।"

कु० पा० ४ सूरत निसा रु० १ आ० ३।

वक्तव्य—इस आयत में मुसलमानों को ३-३, ४-४ औरतों से शादी करने की इजाजत है साथ ही उन पर इससे भी ज्यादा औरतों से शादी करने की कोई रुकावट भी नहीं लगाई गई है। तात्पर्य यह है जितनी चाहो शादियाँ करते जाओ, केवल यह देख लो कि उनका बराबरी के साथ इन्साफ से निर्वाह होना चाहिए। यदि खाने पीने की या पैसे की कमी हो अथवा शारीरिक शक्ति कम हो तो फिर एक पर ही सन्तोष हर आदमी स्वयं करता है और वही बात कुरान ने भी लिख दी है इन विवाहितों के अलावा रखैल व बांदियों से ताल्लुक रखने की पूरी छूट रहती है। यह है वह ब्रह्मचर्य जिसका इस्लाम में व कुरान में उपदेश दिया जाता है। यथा—

"व्यभिचार के पास न फटकना क्योंकि वह बेशरमी है और बुरा चलन है।" कु० पा० १५ सूरे बनी इसराइल रु० ४ आ० ३२।

अधिक औरतों से तथा अत्यधिक विषय भोग को ही व्यभिचार कहते हैं। बकौल कुरान के मौहम्मद के पास भी अनेक औरतें रहती थीं। उन्होंने अपनी ४० साल की उम्र में केवल सात साल की बच्ची आयशा से शादी की थी जो यह बताता है कि वह किस मिजाज के स्वयं थे। अधिक उचित रहता कि ह० मौहम्मद साहब स्वयं भी उस मर्यादा का पालन करते और दूसरों के सामने संयत जीवन का आदर्श उपस्थित करते। किन्तु हम कुरान में पढ़ते हैं कि—

"ऐ पैगम्बर! हमने तेरी वह बीबियां तुझ पर हलाल कीं जिनको मिहर तू दे चुका है और लौडियां जिन्हें अल्लाह तेरी तरफ लाया और तेरे चाचा की बेटियां और तेरी बुआ की बेटियां और तेरे मामा की

बेटियाँ और तेरे मौसियों की बेटियाँ जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं और वह मुसलमान औरतें जिन्होंने अपने को पैगम्बर को दे दिया। बशर्ते कि पैगम्बर भी उनके साथ निकाह करना चाहे। यह हुक्म खास तेरे ही लिए है सब मुसलमानों के लिए नहीं''''५०।''

कु० पा० २२ सू० अहजाब रु० ७।

वक्तव्य---खुदा मुहम्मद साहब को अनेक लोंडियां भी पेश करता था बहिनें तथा अनगिनत औरतें भी पहुंचाता था. कुरान की इस साक्षी से स्पष्ट है कि ह० मौहम्मद साहब की निकाही और बे-निकाही औरतों की सही संख्या कोई नहीं बता सकता है, वे अनेकों थीं। इस्लाम में इसीलिए क्या बहुविवाह व बांदियां विषय भोगों को रखने की छूट है ? अन्ध विश्वासी लोग अपने महापुरुषों का अनुकरण करते हो हैं और समाज पर उसका प्रभाव पड़ता है।

६६. हजरत मौहम्मद साहब की ११ पत्नियों की नामावली

(संस्कृत की 'जिज्ञासूनां कृते पुस्तक से')

१ बेगम खदीजा पुत्री खवील्द
२ ,, सूदा पुत्री जमअ
३ ,, आयशा पुत्री अबूबकर
४ ,, हफ्सा पुत्री खलीफा उमर
५ ,, जनीब पुत्री इबजीरा
६ ,, उम्मसलमा (मौहम्मद साहब की चचेरी बहिन विधवा)

७ ,, जैनब (मौहम्मद साहब के मुतवन्ना पुत्र जैनब की पत्नी)
८ ,, जौयरिया पुत्री उलहारिस
९ ,, उम्म हवीबा (पत्नी अब्दुल्ला विन जहश की विधवा पत्नी)
१० ,, सफिया पुत्री अखतब याहूदी
११ ,, मैमूना पुत्री उलहरास (मसऊद की तलाकशुदा पत्नी)

उपरोक्त ११ स्त्रियां इस्लाम के मान्य पैगम्बर व संस्थापक ह० मौहम्मद साहव की थीं । इनके अतिरिक्त अन्य दासियों वांदियों की संख्या हमें ज्ञात नहीं है कि कितनी थीं । ब्रह्मचर्य पालने की दूसरों को तो उन्होने शिक्षा दी थी किन्तु कुरान शरीफ में दिये गये इस उपदेश पर उन्होंने खुद अमल नहीं किया जिसमें बताया है—

"विषय इन्द्रिय को थामने वाले मर्द और विषय इन्द्रिय को थामने वाली औरतें और अक्सर याद करने वाली औरतें इन सबके लिये अल्लाह ने पाप क्षमा करने और बड़े फल तैयार कर रखे हैं।

कु० पा० २२ सू० अहजाव रु० ५ आ० ३५।

७०. क्या कुरान समझदार लोगों के लिए है ?

कुरान में लिखा है—

"यह (कुरान) किताव है जिसकी आयतें अरवी बोली में समझदार लोगों के लिये व्यौरे बार ब्यान कर दी गई है।"

कु० पा० २४ सूरे हामीम सज्दह रु० १ आ० ३।

वक्तव्य—हमारा विचार है कि कुरान पूरी तरह से नासमझ अरब के लोगों के लिए ही बनाया गया था और खास कर मक्का के निवासियों के लिए बना था। वह समझदार लोगों के लिये नहीं बना था क्योंकि सारे कुरान में विद्या की अथवा न्याय की तथा विज्ञान की एक भी बात हमको ऐसी नहीं मिली जिससे हमें उसके खुदाई किताब होने का विश्वास हो सकता या हम उससे कुछ सीख सकते। जो चन्द अच्छी बातें उसमें दी गई हैं वह तो तौरात जबूर और इञ्जील में सैकड़ों वर्ष पहिले से मौजूद थीं और सभी लोग उनको पढ़ते तथा उन पर अमल करते थे। कुरान ने कोई भी उनसे ज्यादा बढ़िया बात लोगों के सामने पेश नहीं की थी जो समझदार लोगों पर प्रभाव डालती।

७१. कुरान की दोजख और बहिश्त की कल्पना मिथ्या है

कुरान में लिखा है कि—

"जन्नत और दोजख के बीच में एक आड़ होगी यानी आराफ (दीवाल)।४६। कु० पा० ८ सू० आराफ रु० ५।

"और दोजखी पुकार कर जन्नत वालों से कहेंगे कि हम पर थोड़ा सा पानी डाल दो या खुदा ने जो तुमको रोजी दी है उसमें से कुछ हमको डाल दो। वह कहेंगे कि खुदा ने यह दोनों चीजें काफिरों पर हराम करदी हैं।" ५०। कु० पा० ८ सू० आराफ रु० ६।

"इसके बाद इन (दोनों फरीकों) के बीच में (दोजख व बहिश्त के

बीच में) एक दीवार खड़ी करदी जायगी उसमें एक दरवाजा होगा उसमें भीतरी तरफ कृपा (वहिश्त) होगी और बाहरी तरफ सजा होगी।"

कु० पा० २७ सू० हदीद रु० २ आ० १३।

इससे स्पष्ट है कि दोजख और बहिश्त एक ही हैं। दौनों के बीच में एक दीवाल है और उसमें दौनों के बीच में एक दरवाजा है जिसमें से दौनों के आदमी बातें भी कर सकेंगे। यह एक बड़े मकान जैसा है जिसमें से एक में बहिश्त होगी व दूसरे में दोजख रहेगी।

अब थोड़ा दौनों का पृथक-पृथक हाल भी देख लेवें।

"(जन्नत के) हर दरवाजे से फरिश्ते उनके पास आते हैं। सलामालेकुम करेंगे।"

कु० पा० १३ सू० राद रु० ३ आ० २३।२४

"जन्नत के बागों में चश्मे होंगे।"

कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० ४ आ० ४५।

"जन्नत वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना होगा और दोपहर को सोने की जगह भी अच्छी मिलेगी।"

कु० पा० १६ सू० फुर्कान रु० ३ आ० २४।

"जिस बैकुण्ठ का वायदा परहेजगारां से किया जाता है उसकी कैफियत यह है कि उसमें सफेद पानी की नहरें हैं जिसमें बू नहीं आती, दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला, शराब की नहरें हैं जो पीने वालों को मजेदार मालूम होगीं, शहद की नहरें हैं (इत्यादि)।"

कु० पा० २६ सू० मुहम्मद रु० २ आ० १५।

"जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने सुकर्म किये उन्हें हम जन्नत की

खिड़कियों में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी.....।"

कु० पा० २१ सू० अन्कबूत रु० ६ आ० ५८।

"मगर जो अपने परवर्दिगार से डरते हैं उनके लिये जन्नत में खिड़कियों पर खिड़कियाँ बनी हैं जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी। खुदा वायदा खिलाफी नहीं करता।"२०।

कु० पा० २३ सू० जुमर रु० २।

"वह तुमको तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी। हमेशगी के बागों में अच्छे मकान हैं, यह बड़ी कामयाबी है।१२।"

कु० पा० २८ सू० सफ्फ रु० २।

इससे यह स्पष्ट हो गया कि बहिश्त में पक्के मकान हैं, खिड़कियां हैं, नहरें हैं, बाग हैं और बहिश्त के मकानों में दरवाजे हैं उन पर फरिश्ते हैं जो आते जाते हैं लोगों को सलाम करते हैं। नहरें भी शहद, दूध व शराब की हैं जैसा कि कुरान में लिखा है।

अब थोड़ी दोजख की स्थिति देखें। कुरान में लिखा है।

"उसके (दोजख के) सात दरवाजे हैं.....।"

कु० पा० १४ सूरे हिज्र रु० ३ आ० ४४।

"जो लोग नरक में हैं वे नरक के दरोगाओं से कहेंगे कि अपने परवर्दिगार से कहो कि एक ही दिन की सजा हम पर से हल्की की जावे।"

कु० पा० २४ सूरे मोमिन रु० ५ आ० ४६।

"जब ये लोग उस (दोजख) में डाले जावेंगे तो यह उसका दहाड़ना

(चिल्लाना) सुनेंगे और वह भड़क रही होंगी।"

कु० पा० २९ सूरे मुल्क रु० १ आ० ७।

"उस (दोजख) पर १९ चौकीदार हैं।३०। और हमने फरिश्तों ही को आग का चौकीदार बनाया।"

कु० पा० २९ सूरे मुद्दस्सिर रु० १ आ० ३०।३१।

वक्तव्य—इससे स्पष्ट है कि दोजख में आग भरी है, उस पर १९ चौकीदार व दरोगा लोग हैं, उसकी आग भड़क रही होगी। हदीसों में लिखा है कि दोजख के सत्तर हजार बागें हैं। यहां यह बात समझ में नहीं आई कि वहिश्त में जो नहरें वहती रहती हैं वह दस वीस गज ही लम्बी हैं या हजार पांच सौ मील लम्बी हैं। यदि सैंकड़ों मील लम्बी हैं तो इतना बड़ा मकान जिसमें दो हिस्से हों बीच में सैकड़ों मील की दीवाल और उसमें केवल एक ही दरवाजा एक ओर आग की लपटें, दूसरी ओर नहरें, चश्मे, चार बाग, पक्के मकान उनमें खिड़कियां यह सब कुछ होगा और दूसरी ओर उसी से मिली हुई दोजख की हजारों मील लम्बी भट्टी रूपी बन्द मकान जिसमें सात दरवाजे, उन पर १९ चौकीदार व थानेदार यह सब वर्णन काल्पनिक नहीं तो क्या है? जिस वहिश्त व दोजख में करोड़ों ही नहीं अरबों-खरबों काफिर व मुसलमान ठूंस दिये जावेंगे वह कितनी बड़ी २ होंगी और वे कहां पर बनी हैं यह भी कुरान को बता देना चाहिये था ताकि जो लोग चांद की सैर कर आये हैं वे उनकी भी सैर कर आवें और कुरान की बात का समर्थन कर सकें। शहद, दूध, शराब नहरों में कैसे बहता रहता है, यह तो पशुओं वा स्त्रियो के थनों में व मधु-मक्खियों के छत्तों में बनता है। क्या खुदा ने मधु-

मक्खियां व भैंसे भी पाल रखी हैं ? शराबें भी खुदा खींच-खींच कर नहरों में बहाता रहता होगा और ये सब नहरें किसी समुद्र में गिरती हैं या अरबी रेगिस्तान में। दोजख की आग में जलने वाले बहिश्ती जवानों से खाना पानी कैसे मांगेंगे ? वे तो आग में मिनिटों में जल जावेंगे ? क्या उनको जलते समय भूख प्यास भी लग रही होगी ? ऐसी विलक्षण बातें कुरान में लिखी हैं जिससे उसकी असलियत स्वयं खुल जाती है। क्या ऐसी बातें जिसमें लिखी हों वह भी खुदा की किताब हो सकती है ?

७२. क्या खुदा आदमी का भाग्य बनाता है

कुरान में खुदा कहता है—

"और हर आदमी का भाग्य उसकी गरदन से लगा दिया है और कयामत के दिन हम (उसके) कारनामों का लेखा निकाल कर उसके सामने पेश करेंगे, उसको अपने सामने खुला हुआ देख लेगा।"

कु० पा० १५ सूरे बनी इसराइल रुकू २ आ० १३।

वक्तव्य—खुदा ने जब कि हर आदमी का भाग्य खुद ही पहिले से बना कर रख लिया है और उसे लिख कर हर आदमी के गले से उसके जन्म के समय बांध देता है तो आदमी उसी के अनुसार काम करने को मजबूर हो जाता है। वह उसके खिलाफ काम कर ही नहीं सकता है। ऐसी दशा में जबकि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं है उस पर अच्छे या बुरे काम करने का कोई उत्तरदायित्व नहीं रहता हैं। तब कुरानी अरबी खुदा को

किसी भी आदमी को काफिर-दोजखी-पापी बताने का व उसे दोजख में डालने का या मार डालने का, बन्दर या सुअर बना देने का कोई हक हासिल नहीं है। आदमी के पापों की सारी जिम्मेवारी खुदा की है। मनुष्य तो उसी की आज्ञा का पालन करता है। उसका दण्ड खुदा को मिलना चाहिये न कि इन्सान को।

७३. खुदा ही लोगों को टेढ़ा चलाता है

इस विषय में कुरान की निम्न आयत भी देखने योग्य है—

"और (दीन के रास्ते दो प्रकार के हैं) एक सीधा रास्ता खुदा तक है और दूसरा टेढ़ा और खुदा चाहता तो तुम सबको सीधा रास्ता दिखा देता।"६। कु० पा० १४ सूरे नहल रु० १।

वक्तव्य—इससे स्पष्ट है कि खुदा नहीं चाहता कि लोगों को सीधा रास्ता दिखाया जाय वरना यदि खुदा दुनियां का भला चाहता होता तो सारे संसार को नेक रास्ते पर चला देता। अथवा यह मानना पड़ेगा कि खुदा की यह शेखी या दावा गलत है और सभी लोग कर्म करने में स्वतन्त्र हैं। खुदा की ताकत नहीं है कि लोगों को अपनी इच्छानुसार मार्ग पर चलने से रोक सके। न वह लोगों का भाग्य निर्माता है। न किसी के गले में भाग्यपत्र खुदा ने बांधा है। जो जैसा स्वतन्त्रता से कर्म कर लेता है उसके फलभोग को ही भाग्य कहते हैं और वह यहीं पर अथवा पुनर्जन्म में मिलता है।

७४. खुदा ने पहाड़ लटकाया

खुदा ने कहा—"ऐ याकूब के बेटो (वह समय याद करो) जब मैंने तुमसे (तौरात की तामील का) इकरार किया और तूर (पहाड़) को उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया (और फर्माया कि यह किताब तौरात) जो हमने तुमको दी है इसको मजबूती से पकड़े रहो और जो उसमें लिखा है, याद रखो ताकि तुम परहेजगार बन जाओ।"६३।

कु० पा० १ सूरे बकर रु० ८।

वक्तव्य—जमीन खोदकर खुदा पूरा तूरसीना पहाड़ उठा लाया और याकूब के बेटों के सर पर लाकर लटका दिया यह बात किसी बाजीगरी से कम नहीं है क्योंकि पूरा पहाड़ उखाड़ लाना और आदमी के सर पर लटकाना यह खुदाई काम नहीं हो सकता है। खुदा तमाशे नहीं दिखाया करता है।

७५. कुरान सिर्फ डराने के लिये बना था

"कुरान द्वारा उन लोगों को डराओ जो इस बात का डर रखते हैं कि अपने परवर्दिगार के सामने हाजिर किये जायेंगे....।"

कु० पा० ७ सूरे अनआम रु० ६ आ० ५१।

"ऐ पैगम्बर ! तुम तो सिर्फ डराने वाले हो....।७।"

कु० पा० १३ सूरे राद रुकू १।

"यह (कुरान) लोगों के लिये एक पैगाम है और गरज यह है कि इसके जरिये से लोगों को डराया जाय....।"

कु० पा० १३ सूरे इब्राहीम रु० ७ आ० ५२।

"और इसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस पास रहते हैं उनको डरावे और कयामत के दिन की मुसीबत से डरावे।"

कु० पा० २५ सूरे शूरा रु० १ आ० ७।

वक्तव्य—कुरान में अनेक स्थानों पर लिखा है कि कुरान लोगों को सिर्फ डराने की गरज से उतारा गया। इससे स्पष्ट है कि कुरान डराने वाली किताब है। पैगम्बर भी लोगों को डराने के लिए ही आते थे। सिर्फ डराने वाली किताव या आदमी कभी अच्छा हो सकता है और न वैसी किताव को कोई पसन्द करता है। डराने वाली वस्तु या आदमी भयानक होता है, खूंख्वार होता है सभी उससे नफरत करते हैं और बचते हैं। उससे नुकसान ही होता है। अच्छे आदमी अच्छी किताव उत्तम उपदेश देती हैं, उनसे सभी को शिक्षा मिलती है, सभी उनसे प्रेम करते हैं और उनके पास जाना, उनसे सत्संग करना चाहते हैं। संसार के सारे ही शरीफ, सभ्य, महान व्यक्तियों में प्रेम का आकर्षण होता है, उनके पास सभी जाते हैं और उनसे ऊँची शिक्षायें लोगों को मिलती हैं। उनके पास बच्चे, वड़े स्त्री पुरुष सभी जाने की इच्छा करते हैं और किसी को भी वहां जाने में डर नहीं लगता हैं जबकि डराने वाले चोर, डकैत, कातिल जैसे भयानक लोगों के पास जाने में सबको डर लगता है। अतः पैगम्बर लोग बड़े आदमी नहीं माने जा सकते हैं क्योंकि उन्होंने लूटमार कत्ल जैसे गन्दे काम कराये हैं और किये हैं। उनके जीवन चरित्रों में भी कोई वड़प्पन की बातें नहीं मिलती हैं। कुरान ने इनको डराने वाला वताकर उनका सही रूप सबको बता दिया है। इसीलिए लोग उनसे लड़ते थे और उनको मार डालते थे। यही बात कुरान

के बारे में भी ठीक है कि उसने भी मुसलमान लोगों को मारकाट लूटमार, जोर जुल्म, सख्ती दूसरे लोगों पर करने का उपदेश देकर मानव समाज में घोर अशान्ति पैदा करादी है।

पैगम्बरों को लूट के माल में पांचवा हिस्सा कुरान में रखा गया है। प्राणी मात्र से प्रेम करना-सत्संग-सुशिक्षा-भूगोल खगोल विद्या-दर्शन, विज्ञान, समाजोत्थान, चरित्र निर्माण, विश्व शान्ति, मानव जीवन में शान्ति प्राणी मात्र के कल्याण आदि की एक भी उत्तम बात कुरान को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर भी हमको नहीं मिल सकी है दूसरे विचार वालों से कुरान भक्त व्यक्ति घ्रणा करने लगता है।

स्वयम् कुरान शरीफ में भी उसे डराने वाली किताब लिखा है आमतौर से लोग कुरान को डराने वाली, झगड़ा फिसाद पैदा करने वाली किताब समझते हैं। खुदा को यदि किताब ही उतारनी थी तो कोई बढ़िया उपदेशों वाली किताब बनाता जिससे हर कोई उसकी तरफ खिचता, उससे शिक्षा लेता और वह सभी को पसन्द आती।

७६. क्या खुदा बड़ा भारी फरेबी है

कुरान में लिखा है कि "जब काफिर तुम पर फरेब करते थे कि तुमको पकड़ रखें या मार डालें या तुमको देश निकाला करदें। और काफिर फरेब करते थे और अल्लाह भी फरेब (मकर) कराता था और खुदा फरेब (मकर) करने वालों में अच्छा फरेबी (मक्कार) है।"

कु० पा० ९ सूरे अनफाल रु० ४ आ० ३०।

वक्तव्य—मनुष्य तो फरेबी दगाबाज, छली कपटी सभी कुछ बन सकता है किन्तु अरबी खुदा भी मक्कार धोखेबाज हो सकता हैं यह बड़ी विचित्र बात कुरान ने लिख दी है। मामूली मक्कार भी खुदा नहीं है, कुरान लिखने वाले ने उसे मनुष्य से भी बढ़कर जबर्दस्त फरेबी, धोखेबाज बताकर लोगों को यह बता दिया है कि ऐसे खुदा की इबादत (प्रार्थना) करने वाले भक्त लोग भी खराब क्यों न बन जावेंगे। क्या खुदा ऐसा हो सकता है?

७७. भुनी मछली का चमत्कार

"फिर जब (मूसा और उसका नौकर यूसा) उन दो नदियों के मिलने की जगह पर पहुँचे तो दोनों अपनी भुनी हुई मछली भूल गये तो मछली ने नदी में सुरंग की तरह अपना रास्ता बना लिया।" ६१।

कु० पा० १५ सूरे कहफ रु० ६।

वक्तव्य—आग में भुन जाने पर मछली की सारी चरबी गल कर दिल, फेफड़े, रक्त वाहिनी शिरायें, दिमागी नसें सभी नष्ट हो जाती हैं। तब उसमें जीवन रह ही नहीं सकता है। अतः यह कहानी सही नहीं है कि उस भुनी मरी मछली ने सुरंग की तरह नदी में रास्ता बना लिया। यह कथा मछली को चमत्कार बनाने के लिए गढ़ी गई है। पानी में तैरने का साधन पूंछ मछली की आग में जल जाने पर वह तैर ही नही सकती है।

७८. विचित्र खुदाई हुक्म

"और तुमको जिन बीवियों की बुरी आदत से खटका हो उनको

समझा दो, फिर उनके साथ सोना छोड़ दो और उन्हें मारो, फिर अगर तुम्हारी बात मानने लगें तो उन पर तौहमत न लगाओ, अल्लाह सर्वोपरि है।"३४। कु० पा० ५ सू० निसा रु० ६।

वक्तव्य—औरतों के चरित्र पर शक हो तो उनको समझाने दण्ड देने की बात तो समझ में आती है किन्तु उनके पास सोना छोड़ दो (विषय भोग उनसे मत करो) यह खूबसूरत बात भी ख़ुदा को ही बतानी पड़ी, यह आश्चर्य की बात है। क्या खुदा यह भी नहीं समझता था कि दिल खट्टा हो जाने पर मर्द स्वयं सोने की कौन कहे औरत से बोलना भी बन्द कर देता है, जो खुदा को विषय भोग पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ा था ? अरब के लोग या मुसलमान क्या इतने ना समझ होते हैं कि खुदा को जरा जरा-सी बातें उनको बतानी पड़ती थीं। कुरान भी अजीब इलहाम है।

नवाँ अध्याय

ईश्वरीय ग्रन्थ कौनसा हो सकता है ?

हम ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ के लिए निम्न कसौटियां निर्धारित करते हैं जो कि सर्वथा निर्दोष हैं और जिन्हें सभी निष्पक्ष विद्वान स्वीकार करते हैं—

ईश्वरीय ज्ञान की कसौटियां

१—परमात्मा का ज्ञान मनुष्य को सृष्टि क आरम्भ में मिलना चाहिए जबकि मानव की उत्पत्ति पृथ्वी पर होती है।

क्योंकि जब से परमात्मा का ज्ञान मिलता है तभी से मनुष्य पर धर्म अधर्म का बन्धन लागू होता है। जव से कानून लागू होता है मनुष्य पर उसे मानने या न मानने की जिम्मेवारी आती है उससे पहिले नहीं।

२—परमेश्वर के ज्ञान की भाषा किसी भी देश की भाषा न होकर अलौकिक होनी चाहिए।

अन्यथा ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लागू हो जावेगा। सृष्टि के प्रारम्भ में मानव की उत्पत्ति एक ही स्थान वा प्रदेश में होती है और वे वही भाषा समझते वा बोलते हैं जो परमात्मा उन्हें सर्व प्रथम देता है। ईश्वरीय ज्ञान भी मानव को उसी

परमात्मा की देववाणी में मिलता है। उस समय संसार में कहीं न तो अन्यत्र मनुष्य होते हैं और न उनकी कोई अन्य भाषा होती है अतः परमेश्वर पर पक्षपात का दोष नहीं लग सकता है।

३—ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में अनित्य इतिहास तथा भूगोल का वर्णन नहीं होना चाहिये।

परमात्मा के ज्ञान में केवल उपदेश वा विज्ञान की बातें होती हैं जो कि मनुष्य को इस लोक में हर प्रकार की शारीरिक-आत्मिक-सामाजिक उन्नति का मार्ग दर्शन करातीं हैं। उनमें बीज रूप से सृष्टि विज्ञान की प्रत्येक बात सन्निहित रहती है जिससे मनुष्य पुरुषार्थ द्वारा बुद्धि से विकास करके सभी कुछ अच्छी बातें सीख व जान लेता है। परमात्मा का ज्ञान सर्वकालिक सार्वदेशिक प्राणीमात्र के लिए होता है, किसी जाति विशेष या मनुष्य विशेष के लिए नहीं।

४—ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में सृष्टि नियम तथा विज्ञान विरुद्ध कोई बात नहीं होनी चाहिये।

जैसे नियम परमात्मा ने संसार के संचालन वा पदार्थों के निर्माण आदि के सम्बन्ध में बना दिये हैं जिन पर संसार चलता है, ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में सभी बातें उनके अनुकूल ही वर्णित होनी चाहिये यदि उनसे विरोध होगा तो वह ग्रन्थ मिथ्या हो जावेगा।

५—ईश्वरीय ग्रन्थ में सृष्टि के अनादित्व-अनन्तत्व, उसकी आयु आदि का ठीक २ वर्णन होना चाहिये। मनुष्य क्योंकि प्रलयकाल में नहीं था अतः उस समय का सही हाल वह नहीं जान सकता है। इसी प्रकार सृष्टि को बनाने वाला ही बता

सकता है और उसका उल्लेख परमात्मा के ज्ञान के ग्रन्थ में अवश्य होना चाहिये । कुरान में बार २ लोगों ने ह० मौहम्मद साहब से प्रलय कब होगी, यह प्रश्न किया है और वे उसका कोई उत्तर नहीं दे सके हैं। कभी कहा है कि प्रलय निकट आ लगी है और कहीं कहा है कि इसका ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। इस प्रकार सदा इसके उत्तर में टाल मटोल उनको करनी पड़ी थी । यही स्थिति तौरात जबूर और इञ्जील की रही है। वे भी सृष्टि की आयु व प्रलय का समय नहीं बता सकी हैं।

६—ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में परस्पर विरोधी शिक्षाओं का वर्णन नहीं होना चाहिये ।

इस पुस्तक के पिछले अध्यायों से प्रगट होगा कि कुरान-तौरात-जबूर और इञ्जील इस प्रकार के परस्पर विरोधी वर्णनों से भरे पड़े हैं। परस्पर विरोधी वर्णन अल्पज्ञ मनुष्य कृत पुस्तकों में ही मिल सकते हैं। विद्वानों की बातों में या पुस्तकों में परस्पर विरोधी बातें नहीं होती हैं, तो परमात्मा की कृति में कैसे हो सकती हैं? ऐसी किताब को पढ़कर मनुष्य यह निर्णय कैसे कर सकता है कि दोनों विरोधी बातों में से कौनसी ठीक माने और कौनसी गलत ।

७—ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक में ईर्षा, द्वेष, पक्षपात का लेश भी नहीं होना चाहिये ।

जिस पुस्तक में ईर्षा, द्वेष परस्पर लड़ाने वा लोगों की आदतें खराब करने वाली बातें लिखी हों, जिसमें खुदा का किसी कौम के साथ पक्षपात करने तथा दूसरों के साथ खुदा का द्वेष प्रगट होता हो वह खुदाई किताब हरगिज नहीं मानी जा सकती है ।

परमात्मा के सभी पुत्र पुत्री हैं वह पिता के समान है, वह सबका समान हित चाहता है। उसका प्रत्येक पदार्थ सभी के लिए है। न वह पक्षपाती है, न उसकी अपनी ज्ञान की पुस्तक में पक्षपात ईर्षा आदि की बातें हो सकती हैं जैसी कि तौरात जबूर इञ्जील व कुरान आदि में भरी पड़ी हैं जो कि ख़ुदा को मजहव विशेष तथा जाति विशेष का पक्षपाती बताती व उसे कलंकित करती हैं।

८—ईश्वरीय ग्रन्थ में मनुष्य की आयु जन्म-स्थिति और मोक्ष आदि का यथावत ठीक २ वर्णन होना चाहिये।

इन बातों का वर्णन तौरात, जबूर, इञ्जील व कुरान में नहीं मिलता है। मुक्ति को तो इन ग्रन्थों ने तमाशा बना डाला है। कुरान के बहिश्त में तो लोंडों-हूरों (खूबसूरत औरतों) शराबों की भरमार होगी। अच्छा-खासा अँग्रेजी होटल जैसा होगा और खुदा यह सब कुछ लोगों को दिया करेगा। मोक्ष के रहस्य को इन किताबों के बनाने वालों ने बिलकुल नहीं समझ पाया था। इन विद्याओं का ज्ञान ठीक २ परमात्मा के ग्रन्थ में होना चाहिये जो बुद्धि में भी आ सके और जिससे जीवात्मा विलासी बनने के स्थान पर उन्नतिशील बन सके।

९—ईश्वरीय ज्ञान का ग्रन्थ जाति विशेष के लिए न होकर मनुष्य मात्र के लिए होना चाहिये।

यदि खुदा किसी जाति विशेष के लिये ज्ञान देगा तो वह पक्षपात का दोषी माना जायेगा। तौरात यहूदियों को, इञ्जील ईसाइयों को तथा कुरान केवल मुसलमानों के लिये बनी थी, ऐसा उनमें साफ साफ घोषित किया गया है। ऐसा उनसे स्पष्ट होता है कि तौरात जबूर का बनाने वाला खुदा यहूदी होगा।

इन्जील का खुदा ईसाई होगा तथा कुरान का खुदा अरबी मुसलमान रहा होगा। इन खुदाओं का बाकी दुनियां के लोगों से वैर रहा होगा। वास्तव में ईश्वर एक है, न वह किसी जाति वा देश का पक्षपाती है न किसी से देश जाति के आधार पर उसका द्वेष है। जो किताबें उसे पक्षपाती वा द्वेषी बताती हैं वे ईश्वरीय नहीं हो सकती हैं।

१०—ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में सर्व विद्याओं का बीजरूप से वर्णन होना चाहिये।

मनुष्य को यदि सर्व विद्याओं के ज्ञान का बीज रूप से वर्णन ईश्वरीय ग्रन्थ में न मिलेगा या ईश्वर न देगा तो वह कभी भी विद्यावान नहीं बन सकेगा। ईश्वर सर्वज्ञ है तो उसके ज्ञान का ग्रन्थ भी इस गुण से पूर्णतया युक्त अवश्य होना चाहिये। मजहबी किताबों में यह बात नहीं मिलती है।

११—मिथ्या महात्म्यों का ईश्वरीय ग्रन्थ में स्थान नहीं होना चाहिये।

जैसा कि हम देखते है कि तौरात जबूर इन्जील और कुरान में लिखा मिलता है कि अमुक-अमुक काम कर डालो, तौबा करलो आदि तो सारे पाप नष्ट हो जावेंगे, हज्ज कर आओ तीर्थ कर आओ, मंत्र जप लो, ईसा, मुहम्मद आदि किसी पर विश्वास करलो, उसके दल में, मजहब में आ जाओ तो जन्नत वा स्वर्ग मिलेगा आदि मिथ्या प्रकार की बातें जिन किताबों में लिखी मिलती हैं वे ईश्वरीय पुस्तक नहीं मानी जा सकती हैं। ये किताबें चेले फांसने के जाल डालती हैं। इस प्रकार के महात्म्य सारे के सारे मिथ्या प्रलोभन होते हैं और ईश्वर ऐसी गलत बातें नहीं बता सकता है।

१२—ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में सम्पूर्ण वर्णन ईश्वर के ही गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल निर्दोष होना चाहिये। उसमें ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का तर्क से अनुमोदित वर्णन होना चाहिये।

जिसमें सृष्टि क्रम प्रत्यक्षादि प्रमाणों-आप्तों के और पवित्रता के व्यवहार के विरुद्ध कथन न होवें।

जैसा ईश्वर का निर्भ्रम ज्ञान है वैसा ही भ्रांति रहित ज्ञान का प्रतिपादन जिस ग्रन्थ में होवे।

जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टि क्रम रखा है वैसा ही ईश्वर, सृष्टि कार्य, कारण और जीव का प्रतिपादन जिस ग्रन्थ में हो, वही ग्रन्थ ईश्वरीय ग्रन्थ माना जा सकेगा।

इस प्रकार से सम्पूर्ण कसौटियों पर पूर्ण उतरने वाले ग्रन्थ केवल ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद तथा अथर्ववेद नाम के चार वेद ही ईश्वरीय ग्रन्थ संसार में विद्यमान हैं। तौरात जबूर इञ्जील और कुरान नाम की किताबें ऊपर की एक भी कसौटी पर कसने पर खरी नहीं उतरती हैं, अपितु नाना प्रकार के दोष उनमें मिलते हैं, उनसे ईश्वर की निष्कलंक पवित्र सत्ता पर अनेक दोष लगते हैं, और परमात्मा को दोष लगाने वाली पुस्तकें होने से वे अमान्य हो जाती हैं।

इस ग्रन्थ के पिछले अध्यायों के विवरण को देखकर आसमानी माने जाने वाली किताबों (तौरात जबूर इञ्जील और कुरान) की ईश्वरीय ज्ञान के रूप में स्थिति बिलकुल स्पष्ट हो जाती है।

उपसंहार

हमने पिछले अध्यायों में कुरान शरीफ-तौरात जबूर और इञ्जील के शतशः प्रमाणों को उपस्थित करके यह सिद्ध किया है कि कुरान तथा उसकी मान्य उक्त शेष तीनों पुस्तकें ईश्वरीय सन्देश के ग्रन्थ नहीं माने जा सकते हैं। स्वयं कुरान ने जो दलीलें अपने को ईश्वरीय पुस्तक होने के पक्ष में पेश की हैं उन पर भी कुरान खुदाई किताब साबित नहीं हो सकता है। कुरान केवल मक्का और उसके आसपास के लोगों को डराने के लिए ही बनाया गया था। उसे सरल अरबी में इसीलिए बनाया था ताकि वहां के लोग उसे समझ सकें। वह संसार के लिये नहीं बना था। खुदा का दावा है कि असल कुरान में जर्रे से लेकर संसार की हर चीज का वर्णन है, जब कि मौजूदा कुरान में खुदा ने पहिले उतारी हुई अनेकों आयतों को स्वयं निकाल डाला था और उनकी जगह नई आयतें बनाकर उसमें मिलादी थीं, यह बात स्वयं खुदा ने कुरान में स्वीकार की है। इससे स्पष्ट है कि मौजूदा कुरान भी वह असली कुरान नहीं है जो खुदा ने पहिली बार में उतारा था। इस आयत से यह भी स्पष्ट है कि खुदा अज्ञानी है जो एक बार में सही और बिलकुल ठीक बात भी नहीं उतार सकता था, जब कि योग्य मजिस्ट्रेट इस दुनिया में कभी भी अपना हुक्म बार-बार नहीं पलटते हैं। जो मजिस्ट्रेट अपना हुक्म गलत मानकर उसमें तरमीम (संशोधन) करता रहता हो उस पर कोई भी कैसे विश्वास कर सकता है।

कुरान ने शर्त पेश की है कि असली कुरान से मुर्दे जिन्दे हो जाते हैं, पहाड़ फट जाते हैं, किन्तु मौजूदा कुरान से एक भी मुसलमान मरा हुआ जिन्दा नहीं हो सका है, न एक तिनका भी कुरान पर रखने पर चूर-चूर

हो सकता है। इस कसौटी पर भी मौजूदा कुरान असली कुरान सावित नहीं होता है।

कुरान कहता है कि उसमें जो कुछ भी लिखा है सब सच ही सच है। उसमें झूठ का आगे और पीछे से भी प्रवेश नहीं है। पिछले अध्यायों को देखने से स्पष्ट होगा कि कुरान में बहुत से स्थल परस्पर विरोधी हैं जिनसे जाना जा सकता है कि उनमें से एक या दोनों ही बातें जो परस्पर विरोधी हैं, अवश्य मिथ्या होंगी।

कुरान में लिखा है कि यह पुरानी किताबों तौरात-जबूर और इञ्जील का समर्थन करता है तथा उन्हें भी ईश्वरीय किताबें मानता है। खुदा ने भी कुरान में दावा किया है कि मुहम्मद साहब से उसने केवल वही बातें कही हैं जो पहिले पैगम्बरों से कही थीं अर्थात उनकी किताबों में दी हैं। किन्तु हमने बहुत से स्थल उपस्थित किये हैं जिनमें कुरान की बातों का पुरानी खुदाई मानी जाने वाली किताबों से विरोध है, बहुत-सी बातें उनमें हैं जो कुरान में नहीं हैं तथा बहुत-सी बातें कुरान में हैं और उनमें नहीं हैं जब कि खुदा के दावे के अनुसार कुरान में केवल वही बातें होनी चाहिये थी जो पहिली किताबों में मौजूद थीं। इससे या तो यह मानना पड़ेगा कि कुरान का यह दावा गलत है कि चारों किताबों को खुदा ने ही कहा था, या यह मानना होगा कि कुरान में जो बातें पुरानी किताबों की विरोधी अथवा नई मिलती हैं वे बाद को लोगों ने गढ़कर उसमें मिलादी हैं। दोनों स्थितियों में कुरान खुदाई किताब नहीं रह सकेगी।

कुरान में अनेक स्थल बुद्धि-तर्क-विज्ञान तथा सृष्टि नियम के भी विरुद्ध हैं, यह भी हमने पीछे अनेक प्रमाण उपस्थित करके प्रमाणित किया है, इससे भी हम कुरान को खुदाई किताब नहीं मान सकते हैं। क्योंकि खुदा की बातें बुद्धि, सृष्टि-नियम तथा विज्ञान विरुद्ध नहीं हो सकती हैं।

कुरान में परस्पर विरोधी बातों का होना और उस पर भी उसे खुदाई कलाम बताना साक्षात् खुदा को अज्ञानी घोषित करना है। समझदार लोगों की बातों में परस्पर विरोधी स्थल नहीं होते हैं, उनमें एकरूपता होती है। तो खुदा क्या इन्सान से भी कमजोर अक्ल रखता था जो कहीं कुछ कहीं कुछ लिखता चला गया ?

कुरान में ईसा को खुदा द्वारा इञ्जील सिखाने अथवा देने की बात भी लिखी है, जबकि इञ्जील नाम की पुस्तक ईसा के मरने के तीन सौ वर्ष के बाद विभिन्न २७ लेखकों की २७ पुस्तकों को संग्रह करके बनाई गई थी। न ईसा से पूर्व कोई इञ्जील नाम की पुस्तक मौजूद थी, न ईसा ने कोई इञ्जील बनाई थी, न खुदा ने उसे यह पुस्तक कभी दी थी। अतः स्पष्ट है कि कुरान की यह आयत इतिहास के विरुद्ध बात है। तो जिस पुस्तक में सत्य के विपरीत बातों का समावेश हो उसे खुदाई नहीं माना जा सकेगा।

ईसामसीह की उत्पत्ति के विषय में तथा मृत्यु के लिये सूली पर चढ़ने की घटनाओं का जो वर्णन इञ्जील के अन्दर मिलता है, कुरान में उसके विपरीत लिखा गया है। खुदा की दोनों किताबों में ऐतिहासिक बातों में भी मतभेद का होना दोनों में से एक को अवश्य गलत साबित कर देता है। मजे की बात यह है कि फिर भी खुदा कुरान में इञ्जील को अपनी ओर से उतारी किताब मानता जाता है और उसकी हर बात की ताईद (समर्थन) करने का दावा करता है।

इञ्जील में ईसामसीह को खुदा का इकलौता बेटा माना है जबकि कुरान ने उसका खण्डन करके लिखा है कि खुदा के कोई बेटा बेटी नहीं है। जो ईसाई खुदा का ईसा को बेटा मानते हैं उन्हें कुरान में खुदा ने काफिर घोषित किया है। पता नहीं इञ्जील में खुदा ने मसीह को अपना इकलौता बेटा बनाकर झूठ बोला है या कुरान में गलत बात लिखदी है।

अथवा यह मानना होगा कि खुदा को कुरान लिखाते समय यह स्मरण नहीं रहा होगा कि इन्जील में पहिले वह क्या लिखा चुका है ?

कुरान में खुदा ने दावा किया है कि उसमें जो कुछ भी लिखा है बिलकुल सच सच बात लिखी है। तब हम यह सोचते हैं कि बहिश्त में जो सफेद अण्डे की तरह गोरे चट्टे लोंडे (गिलमें) और सुन्दरी कम उम्र की अछूती हूरें खुदा ने मुसलमानों को ऐश करने को देने का वायदा किया है, उनसे उनका विवाह करावेगा, मस्ती के लिए सोंठ व कपूर मिली बढ़िया शरावें पिलावेगा, सोने के कंकण, हूरें, रेशमी कपड़े, मखमली मसन्द-लकड़ी के तख्त बैठने को देगा, खाने को मसाले पड़ा पका हुआ गोश्त-मेवे दिया करेगा यह सब भी क्या सच बातें हैं ? पक्के मकान मय बालाखानों के जिनमें झरोंखे व खिड़कियाँ लगी होंगी बागों की साया नहरों का पानी, दूध-शहद व शराब की नहरें, कस्तूरी की मुहर वाली सीलबन्द शराब की बोतलें भी खुदा के यहाँ हर बहिश्ती को मिलेंगी। हम समझते हैं कि यह सारा लालच खुदा ने इसलिये अरब वाले मुसल-मानों को दिया कि वे इस्लाम में बने रहें तथा दूसरे लोग इस लालच में फंस कर मुसलमान बन जावें। क्या खुदा का काम भी लोगों को ऐयाशी का शौक पैदा करा कर शराबी बनाकर भ्रष्ट करना हो सकता था ? इस प्रकार के लालच खुदा ने यहूदियों और ईसाइयों को तौरात-जबूर और इन्जील में क्यों नहीं दिये थे ? यह नियामतें मुसलमानों को ही क्यों दी गई थीं। लौंडे गोरे चट्टे पेश करना भी क्या खुदा का काम हो सकता है ? क्या व्यभिचार का प्रचारक खुदा हो सकता है ? हम समझने में असमर्थ हैं। क्या कोई भी व्यक्ति या खुदा अपनी बदनामी कराने वाली बातें स्वयं अपनी किताब में लिखने बैठेगा ?

खुदा ने यदि समय-समय पर तौरात, जबूर, इन्जील व कुरान उतारे थे तो उनमें अच्छी २ बातों को ही क्यों नहीं लिखाया। परस्पर लड़ाने

वाली बातें, लोगों को भ्रष्ट करने की आज्ञायें, विज्ञान विरुद्ध उपदेश, मानव को दानव बनाने वाली बातें क्यों खुदा ने लिख मारी थीं। कैसा खुदा था जो मनुष्य जाति का शत्रु था।

तौरात पैदायश २७ में लिखा है कि खुदा ने मनुष्यों के संगठन प्रेम उनकी एक भाषा को देखकर जल भुन कर उनका विनाश करने को उनकी भाषा में गड़बड़ी पैदा करके उनको छिन्न भिन्न कर दिया। कुरान ने भी माना है कि पहिले सभी लोग एक ही भाषा व एक ही धर्म को मानते थे। खुदा की मनुष्य जाति से शत्रुता तौरात से स्पष्ट है जिसे कुरान खुदाई किताब मानता है। तौरात में खुदा का मनुष्य जाति को पैदा करके पछताना उत्पत्ति ६।६ तथा शाऊल को राजा बनाके पछताना १ शमुएल १५ में लिखा है। खुदा की याकूब से रात भर कुश्ती हुई और दोनों पहलवान बराबरी पर छूटे, खुदा उसे पछाड़ भी नहीं पाया यह तौरात पैदायश ३२ में लिखा है। खुदा अपनी रक्षा को २० करोड़ घुड़सवार सेना रखता था यह इन्जील मे प्रकाशित वाक्य ९।१६ में लिखा है। खुदा लोगों से अदालतों में मुकद्दमे लड़ा करता था यह व्यवस्था विवरण ३२ में तथा मनुष्य जाति में से मेल को नष्ट कराता था। (प्रकाशित वाक्य ६।४) में, बाप अपनी खास बेटी से व्यभिचार व शादी कर सकता है (इन्जील-कुरेन्थियो ७।३६) में, इत्यादि प्रकार की बातें जब हम कुरान या उसके द्वारा मान्य खुदाई किताबों में पढ़ते हैं तो हम यह मानने पर विवश हो जाते हैं कि इनमें से एक भी किताब खुदाई नहीं है। लोगों को मूर्ख बनाने के लिए लोगों ने इन्हें खुदाई किताबें घोषित कर रखा है अथवा इन किताबों का बनाने वाला खुदा यदि था तो वह साधारण से शिक्षित किसी भी मनुष्य से भी गिरी हुई योग्यता का व्यक्ति था। ऐसे मानव जाति के शत्रु को खुदा नहीं माना जा सकता है।

सत्य बात तो यह है कि परमेश्वर की पवित्र सत्ता को इन किताबों के बनाने वालों ने कलंकित करके रख दिया है। परमात्मा संसार का पिता, सर्वज्ञ सर्वव्यापक-सर्व शक्तिमान, न्यायकारी-दयालु सत्ता है। उसमें मानवीय दुर्बलताओं का समावेश कर देना और जिन किताबों में ऐसी बातें लिखी हों उन्हें मान्यता देना भूल है।

ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकें बार २ नहीं आया करती हैं। प्रभु का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में मानव जाति को मिलता है। उसमें इतिहास की घटनायें, ईर्षा, द्वेष के उपदेश नहीं होते हैं। उसमें ईश्वर-जीवात्मा-सृष्टि विज्ञान की बातें, जीवों के कल्याण के उपदेश, मोक्ष का निर्दोष मार्ग, संसार में भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करने के लिए मनुष्यों को मार्ग प्रदर्शन, प्रलय काल तथा मोक्ष की स्थिति का वर्णन, परमेश्वर की सत्ता के निर्दोष स्वरूप का वर्णन, सृष्टि उत्पत्ति, सृष्टि की आयु का उल्लेख जो विज्ञान से भी पुष्ट हो सके आदि सभी प्रकार की उपयोगी बातों का उल्लेख ईश्वरीय ग्रन्थ में होना चाहिये। ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ पक्षपात, ईर्षा, द्वेष, परस्पर विरोधी-ऐतिहासिक-कल्पनापूर्ण, विज्ञान एवं सृष्टि क्रम से विरुद्ध बुद्धि विरुद्ध-प्राणियों के लिए हानिकारक उनकी उन्नति में विघातक, ईश्वर व जीव के स्वरूप को विकृत करने वाले उपदेश, मनुष्य की शारीरिक आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति में रुकावटें डालने वाले आदेश, झूठे प्रलोभन देने वाली बातों आदि से मुक्त होते हैं।

हमें तौरात-जबूर. इन्जील और कुरान नाम की उपलब्ध चारों पुस्तकों में से एक में भी ऐसी बातें नही मिल सकी हैं जिनसे उन्हें ईश्वरीय किताबें माना जा सके, यह इस पुस्तक के गत अध्यायों में हमने प्रगट किया है। नवें अध्याय में ईश्वरीय ज्ञान को जांचने को हमने चन्द कसौटियां दी हैं।

इस संसार के सम्पूर्ण साहित्य में ईश्वरीय ज्ञान के लक्षण केवल
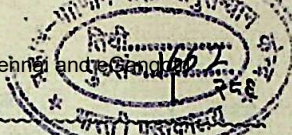
चारो वेदों (ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद तथा अथर्ववेद) में ही घटते हैं जिनमें ज्ञान विज्ञान-सृष्टि नियम जीवों के सर्व विधि कल्याण तथा मोक्ष प्राप्ति के अत्यन्त बुद्धि गम्य, सत्य उपदेश मिलते हैं। अन्य किसी भी आसमानी किताब मानी जाने वाली पुस्तक को हम निर्दोष नहीं पाते हैं।

इस प्रकार यह पुस्तक 'कुरान की छानबीन' हमारी पूर्ण होती है। आशा है कुरान के मर्मज्ञ व तौरात, जबूर और इन्जील के विद्वान भी हमारी इस स्थापना पर विचार करेंगे कि उनके द्वारा मान्य उक्त पुस्तकें ईश्वरीय पुस्तकों की श्रेणी में नहीं आती हैं। इस पुस्तक की रचना का उद्देश्य धार्मिक मुस्लिम अन्ध विश्वासों की आधारभूत पुस्तक कुरान शरीफ की वास्तविक स्थिति को प्रगट करना है। और यदि मुस्लिम विद्वान हमारे विचारों से सहमत न हों तो वे कृपया इस पुस्तक में दी गई स्थापनाओं का समाधान करें तथा उस समाधान की प्रति हमको अवश्य भेज देवें।

जब तक किसी विषय पर भले प्रकार विपक्ष के विचारों को जानकर स्वतन्त्र रूप से मन्थन करके निष्पक्ष निष्कर्ष नहीं निकाला जाता है, अन्ध विश्वासपूर्वक किसी भी बात को लोग मानते रहते हैं तब तक सत्य का प्रगटीकरण नहीं हो पाता है और न मनुष्य की बुद्धि का विकास हो पाता है। अन्धविश्वास से मनुष्य की हानि होती है। इसलिए हमने जिज्ञासा भाव से, सत्यासत्य के निर्णय की द्रष्टि से कुरान, तौरात, जबूर और इन्जील का मन्थन किया है तथा अपने अध्ययन को सभी सत्य के खोजी विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

हम विश्वास करते हैं कि सभी विद्वान इसे उसी भाव से पढ़ेंगे तथा सभी के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी। कुरान मर्मज्ञ मुस्लिम निष्पक्ष जिज्ञासु विद्वानों को विशेष रूप से हम इस पुस्तक को पढ़ने और विचार करने के लिए आमन्त्रित करते हैं तथा इस पुस्तक को हम अपनी शंकाओं

के रूप में उत्तर के लिए उनके समक्ष उपस्थित करते है। वे बतावें कि हमारी शङ्कायें ठीक हैं या नहीं और यदि गलत हैं तो उनका समाधान करके हमें अनुग्रहीत करें।

हमारी इस पुस्तक को पढ़ने से स्पष्ट हो जावेगा कि कुरान शरीफ कोई स्वतन्त्र पुस्तक नहीं है। इसकी रचना करने में तौरात, जबूर और इन्जील नाम की उस जमाने में पहिले से मौजूद पुस्तकों की मुख्य २ सामग्री ह० मुहम्मद साहब ने ज्यों की त्यों नकल करली थी, बहुत-सी सामग्री जो पुरानी किताबों की उनको आपत्तिजनक लगी उसका विरोध भी कुरान में उन्होंने किया था, बहुत-सी बातें उन पुरानी किताबों के आधार पर अपनी ओर से बनाकर कुरान में लिखी थीं। कुछ बातें अरब की जरूरतों को देखकर रिवाजों में सुधार के लिए लिखी थीं। उन्होंने कुरान को खुदा की ओर से कहे गये रूप में इसलिए लिखा था कि उनकी बात को लोग मानने को तैयार नहीं थे और खुदाई कलाम के रूप में कुरान पर विश्वास कर लेते थे।

कुरान शरीफ अपनी अन्तःसाक्षी तथा पुरानी किताबों से मिलान करने पर भी खुदाई कलाम साबित नहीं हो सका है ऐसा हम समझते हैं।

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१३	११	१२
१६	११	पा० ३०	पा० २३
१७	१७	तो भी सकेंगी	(तो भी सकेगी)
१८	६	।२।	।८।
१९	५	वाले के की	वाले की
२१	२	रु० ३	रु० ३ आ० २८
२२	५	अन्फाव	अन्फाल
	१७	पा० ४	पा० ३
२४	५	११	२१
	६	।१२।	।२२।
२५	३	जानता	न जानता
२७	१५	रु० २	रु० २ आ० १७
	२१	२६	१६
३४	५	पा० ६	पा० १६
३८	१०	भेजें ।	भेजें ।६३।
४२	१७	।३।	।३। पारा ३० सू० इन्फितर
४३	५	६६	६७
४६	१०	रु० ८	रु० ८ आ० ७२।
५०	१३	करेगा	करेंगे
५४	१	।१०।	।१००।
५७	१०	जासियह	दुरवान

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	१५	।५०।	।४६।
६०	१२	रु० २	रु० २ आ० १२
६१	१२	प	पह
६२	२	सामने	सामने बातें
	२२	ह को	हमको
६४	२०	फिर और	फिर औन
६७	४	।२३।	।२१।
	११	।१४।	।१०४।
६६	१०	।१।	।१३०।
७४	१३	४।२२	३।२२
७६	७	३३	१४।३३
८०	१०	बिहाह	बिवाह
८१	२	१६।१८	१९।१८
	१२	समान थे	समान न थे
८२	१५	३।२०	३।२३
८३	२	५२	१५।५२
	४	२८	५।२८
८७	१८	३२	३१
	२०	१५ याशायाह	याशायाह ७।१४
६३	२०	कोई	कोरी
६५	३	२।११	३।११

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९७	८	के खुदा	×	१७१	१८	कयामत	कयामत ६।
९९	१८	डाफ	डाकू	१७६	४	उस	इस
१०७	१५	४५।१५	४४।१५		२०	आराभ	आराफ
१०८	६	१ कुरंन्थियो	१५ कुरंन्थियो	१८०	१०	नही	×
१०९	१०	२	२।५	१८१	३	स	सब
११७	५	।५।	।२।	१८७	४	१९	८९
११९	१०	बाहर	बारह		२५	ने	से
१२१	१४	पैरा ४	पैरा ३	१८९	८	दिन	जिन
१२६	५	तूर	जारियात	१९४	११	रहनुलूं हीम	रहमानुल्रंहीम
१३९	१९	२९	२८	१९७	३	आ० १	आ० १०
	२०	आराफ	यूनिस		१३	आ० १५	आ० १६
१४१	२१	१५	१४	२०९	२३	कएसुल	कस्ससुल
१४५	२०	कुरान से	तौरात से	२१०	४	मोमिन	जुमर
१४७	११	१३	१४	२१८	१०	आ० ९	आ० ९२।
१४८	१५	२४	२३	२२२	२	पा० १	पा० १७
१५०	७	तिमुथियस	तिमुथियस ५	२३१	८	आलइमरान	निसा
१५६	५	जनी ।	जनी । तौरात उत्पत्ति १९	२३३	१३	हूद	यूनिस
१५९	१४	कर	कह कर	२४१	१५	निसा	मायदा
१६३	२०	२९	२१	२४२	२०	कराता	कराता है
१६४	१५	लेने	न लेमे	२८७	२०	।३७।	कु०पा०२५जुखरुफ३६।३७
१६५	१७	मत्ती ८	मत्ती ८।१८	२४८	१५	नाफिस	नाक्रिस
१७०	८	।११।	।११९।	२५८	२	उस	इस

खंडन मंडन ग्रन्थ माला के ग्रन्थों

कुरान की छानबीन	६.००	पुराणों के कृष्ण	
भागवत समीक्षा	३.००	शिवजी के चार वि	
गीता विवेचन	२.७५	मृतक श्राद्ध खण्डन	
बाइबिल दर्पण	२.५०	विभिन्न मतों में ई	
ईश्वर सिद्धि	२.५०	गीता पर ४२ प्रश्न	
कुरान दर्पण	२.००	शास्त्रार्थ के चेलेन्ज	
वैदिक यज्ञ विज्ञान	१.८०	पौराणिक कीर्तन	
जैन मत समीक्षा	१.६०	बाइबिलपर सप्रमा	
मुनिसमाज मुख मर्दन	१.५०	अर्थ सहित वैदिक	
अवतार रहस्य	१.५०	सनातन धर्ममें नियोग व्यवस्था	२५
मूर्ति पूजा खण्डन	१.३५	नारी पर मजहवी अत्याचार	२०
शिवलिंग पूजा क्यों ?	१.३५	हंसामत का पोलखाता	२०
टोंक का शास्त्रार्थ	१.२५	पौराणिक मुख चपेटिका	२०
माता पुत्री का सम्वाद	१.२०	दुर्गा पर नरबलि	२०
भारतीय शिष्टाचार	१.००	स्वर्ग विवेचन	२०
अद्वैतवाद मीमांसा	१.००	हनुमान जी बन्दर नही थे	१५
प्रार्थना भजन भास्कर	१.००	कुरान खुदाई किताब नहीं है	१५
वैदिकव्याख्यान माला(भाग१)	१.००	खुदा और शैतान	१५
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	७५	खुदा का रोजनामचा	१५
पुराण किसने बनाये ?	७५	नृसिंह अवतार वध	१२
माधवाचार्यको डबल उत्तर	७५	संसारके पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न	१२
पौराणिक गप्प दीपिका	५५	अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	१०
कबीर मत गर्व मर्दन	६०	ईसा मुक्ति दाता नहीं था	१०
ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	६०	मरियम और ईसा	१०
गुरुडम के पाखण्ड	४०	मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	१०
कुरान की विचारणीय बातें	४०	ईसाईमत का पोलखाता	१०
सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़ का उत्तर	४०		

वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज

कासगंज (एटा) उ० प्र० भारतवर्ष

Desh Bandhu Press, Hathras